

आण्डमान निकोबार की लोककथाएँ



संपादक
बलराम अग्रवाल

चित्रांकन
स्वप्नेश चौधरी



अण्डमान-निकोबार की लोककथाएँ

हिन्दी रूपांतरण एवं संपादन
बलराम अग्रवाल

चित्रांकन
स्वप्नेश चौधरी



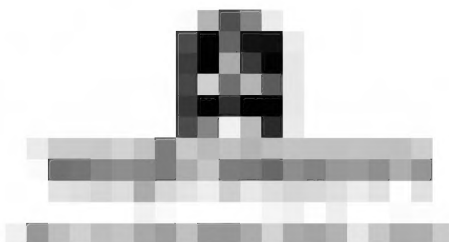
साक्षी प्रकाशन

एस-16, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

THE NEW YORK PUBLIC LIBRARY

ASTOR LENOX TILDEN FOUNDATION

505 FIFTH AVENUE



“राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान
कोलकाता के सौजन्य से”

प्रथम संस्करण : 2002

ISBN-81-86265-66-X

मूल्य : रु. 40.00

प्रकाशक : साक्षी प्रकाशन
एस-16, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032
फोन : 011-2284833

पृष्ठ-सज्जा एवं
टाइप-सैटिंग : निधि लेज़र प्वाइंट,
शाहदरा, दिल्ली-110 032

मुद्रक : आर. के. आफसैट
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

ANDAMAN-NICOBAR KI LOK KATHAYEN *Compiled by* Balram Agarwal

Price : Rs. 40.00



लोककथाएँ

किसी भी जाति/जनजाति/आदिमजाति के बीच पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से प्रचलित कथा-रचना को लोककथा कहा जाता है। अगर इन कथाओं के नायक धार्मिक पात्र रहे हों तो ये 'मिथक' कहलाती हैं। नैतिकता का संदेश देने वाली कथाएँ बोधकथा, नीति-शिक्षण की कथाएँ नीतिकथा तथा किसी भावना-प्रधान मन्तव्य विशेष को रंजक शैली में प्रस्तुत करने वाली कथाएँ दृष्टांत कहलाती हैं। इसी क्रम में रूपक-कथा भी आती है। कथा-रचना में किसी मानवेतर प्राणी अथवा नीजीव वस्तु का रूपक प्रयोग अर्थ एवं प्रभाव की दृष्टि से उसकी व्यापकता और गहनता दोनों को ही बल प्रदान करता है। कुल मिलाकर यह कि मिथक, बोध, नीति, दृष्टांत एवं रूपक आदि के कथा रूप में आगामी पीढ़ी तक पहुँचाने की परम्परा मानव-समाज के बीच संभवतः आदिकाल से ही रही है। इनमें लोकमंगल तथा लोकरंजन दोनों ही भावनाएँ एक साथ समाविष्ट रहीं हैं। संभवतः इसीलिए इन्हें 'लोककथा' नाम दिया गया है। इनके लिए यह नाम निश्चित रूप से सटीक भी है। इनमें जातियों का पुरातन इतिहास तथा पूर्वजों के संघर्ष व साहस की निधि सुरक्षित है।

जैसाकि 'काला पानी' की सज्ञा भोग चुके क्रांतिकारी बाबा पृथ्वीसिंह आज्ञाद ने अपनी आत्मकथा 'क्रांतिपथ का पथिक' में लिखा है कि अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह में अनगिनत आदिम जातियाँ थीं। उनमें से अधिकांश को अंग्रेजों की गोलियों ने नष्ट कर डाला। इन दिनों प्रमुखतः 5 आदिम जनजातियाँ ही द्वीप समूह में शेष हैं—1. अण्डमानी, 2. निकोबारी, 3. जारवा, 4. ओंगी तथा 5. शोम्पेन। द्वीप समूह में प्रचलित अनेक लोककथाएँ अनेक कथाकारों द्वारा संकलित/संपादित की जा चुकी हैं। परन्तु श्रीयुत् प्रितिन रॉय द्वारा अंग्रेजी में संपादित 'ट्राइबल फोकटेल्स ऑफ अंडमान एंड निकोबार आइलैंड्स' को द्वीप-समूह की बची-खुची आदिम जनजातियों के बीच प्रचलित लोककथाओं का आधिकारिक संकलन माना जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक उसी अंग्रेजी पुस्तक का हिन्दी-रूपांतर है।

हम श्रीयुत् प्रितिन रॉय के आभारी हैं कि उन्होंने पुस्तक के हिन्दी अनुवाद की अनुमति सहर्ष हमें प्रदान की। साथ ही हम प्रिय स्वप्नेश चौधरी के भी आभारी हैं जिन्होंने सभी लोककथाओं का नयनाभिराम चित्रांकन करके पुस्तक को अति-आकर्षक रूप प्रदान किया है। कथाकार बलराम अग्रवाल ने लोककथाओं का शाब्दिक अनुवाद न करके इनका रोचक, रंजक व सरल भाषा में रूपांतरण प्रस्तुत किया है। पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी-पाठकों के बीच ये लोककथाएँ पसंद की जाएँगी।

—विजय गोयल



[The following text is extremely blurry and illegible. It appears to be a multi-paragraph document, possibly a letter or a report, with several lines of text visible in each of the four main blocks.]

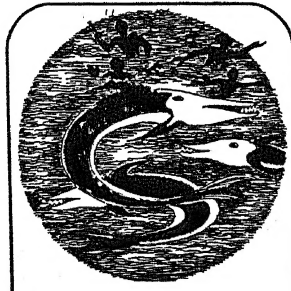
[Illegible text block 1]

[Illegible text block 2]

[Illegible text block 3]

[Illegible text block 4]

अनुक्रम



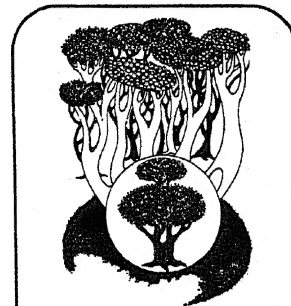
शार्क का जन्म

8



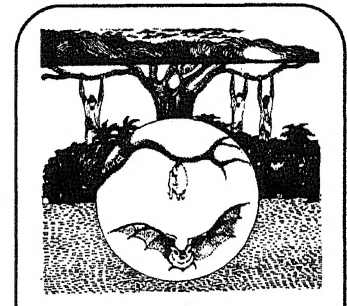
नारियल का जन्म

14



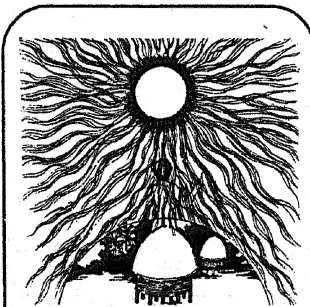
जब पेड़ चलते थे

10



चमगादड़ का जन्म

16



सूरज की ओर

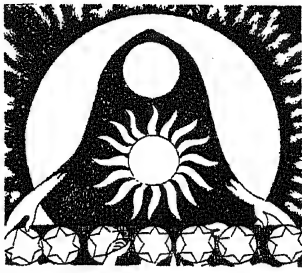
12



गिरि और शोआन

18





सूरज और चाँद

21



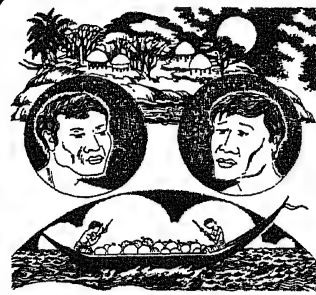
तोतारांग

28



चोरी हुआ टापू

22



ओसरी उत्सव

30



बौनों का देश

24



द ग्रेट फेस्टीवल

32



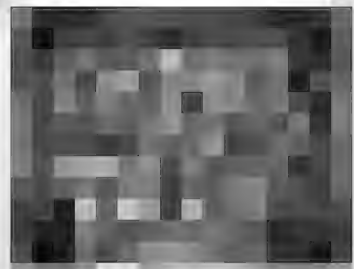
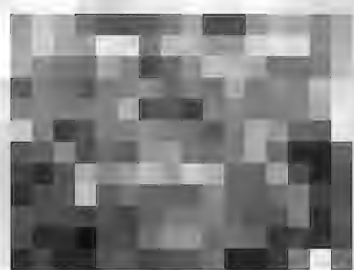
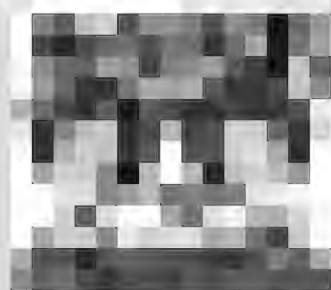
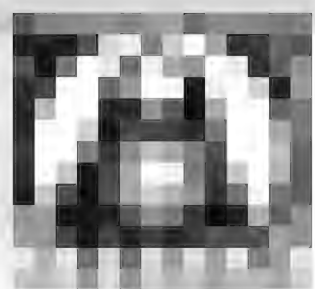
बदला

26



डायन और सड़क

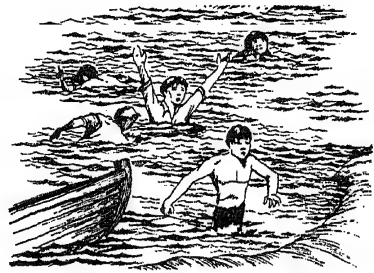
34





तूफान से लड़ाई

36



निकोबारी जाति का जन्म

44



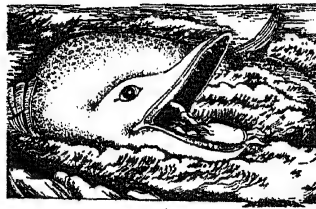
अजगर का जन्म

38



अण्डमानी प्रजापति—पुलुगा

47



महिला चित्रकार

40



बनैला आदमी

48



धूर्त चमगादड़

42



पहला पुरुष—टोमो

50





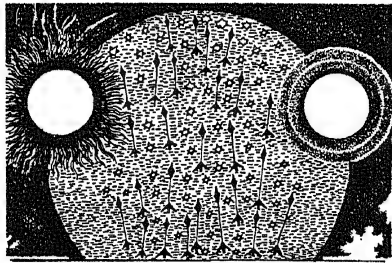
तोड़िया-बोग-लांको

52



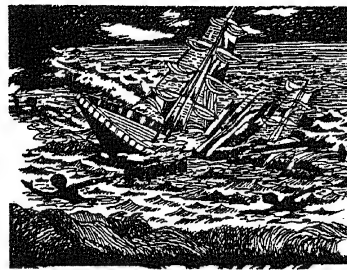
कोचांग

62



तारों का जन्म

54



किलपुट की वापसी

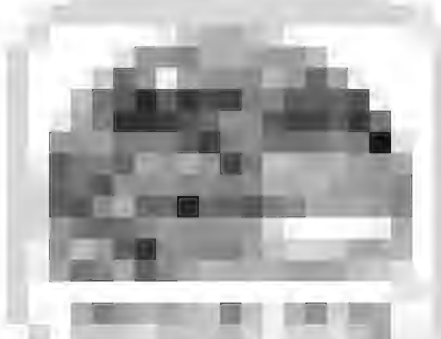
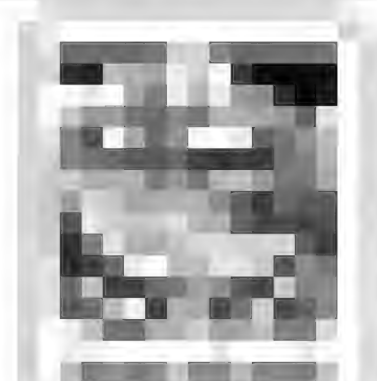
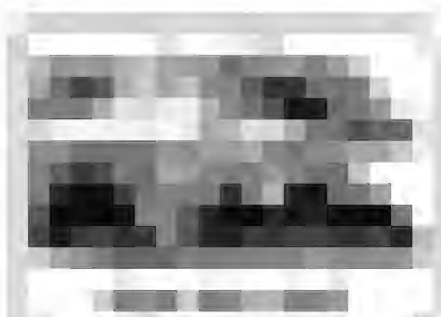
56

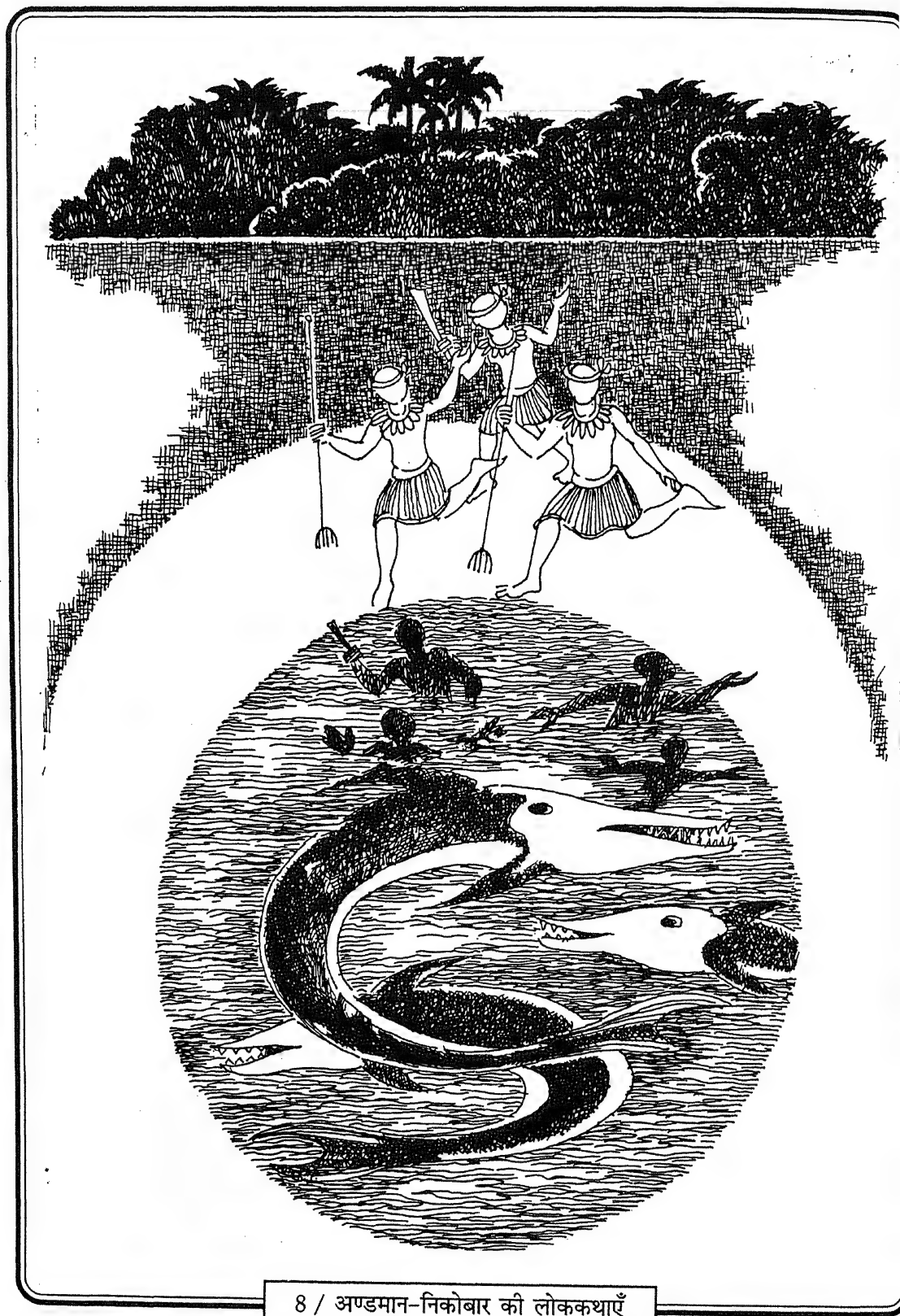


परियों का द्वीप : परी टापू

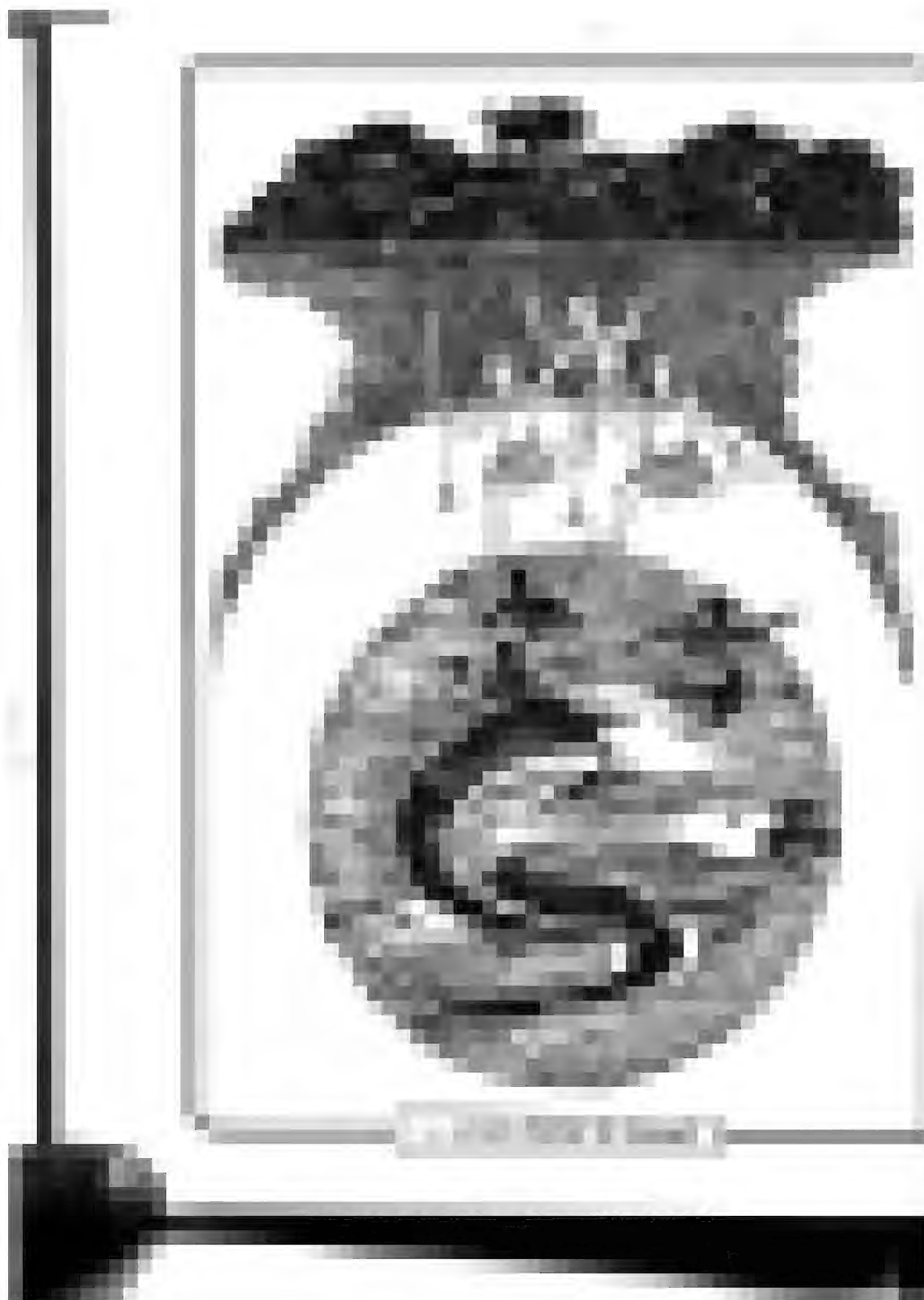
58







8 / अण्डमान-निकोबार की लोककथाएँ



शार्क का जन्म

कोफ़ी पुरानी बात है। निकोबार में तामलु और फुको नामक दो गाँवों के बीच टोसलो नाम का एक गाँव था। टोसलो के लोग जन्म से ही जंगली और खूँखार थे। दूसरे गाँव के किसी आदमी पर या किसी अन्य अनजान आदमी पर उनकी नजर पड़ जाती तो वे उस पर हमला बोल देते और जब तक उसे मार न गिराते, चैन न लेते।

पड़ोस के दोनों गाँवों के लोग टोसलो वालों से हमेशा डरे रहते थे। वे कभी भी उस गाँव के बीच से गुजरने की हिम्मत नहीं करते थे। उधर से गुजरने का अर्थ था—मौत। अंततः, दोनों पड़ोसी गाँव वालों ने मिलकर टोसलो पर आक्रमण कर दिया और उनको उनके गाँव से बाहर खदेड़ दिया। खदेड़े जाकर टोसलो वाले चौकबाक नामक जगह पर पहुँच गए। वे वहाँ रहने लगे परन्तु अपना जंगलीपन न छोड़ पाए।

उनका नया गाँव चौकबाक टिपटॉप नामक गाँव से अधिक दूरी पर नहीं था। हुआ यों कि एक दिन टिपटॉप का एक लड़का अपने छोटे भाई को साथ लेकर चौकबाक के समीप से गुजर रहा था। वह अपने आसपास किसी भी तरह के खतरे से अनजान था। उनको देखकर चौकबाक का एक निवासी छुरा हाथ में लेकर चुपचाप उनके पीछे लग गया। उसने एकाएक छोटे भाई पर छुरे से हमला किया।

छोटा भाई चिल्लाया, “भैया, बचाओ। पीछे से एक आदमी मुझ पर हमला कर रहा है।”

बड़े भाई ने इस चीख-पुकार को छोटे भाई की शरारत समझा। इसलिए उसने उसकी चीख पर कोई ध्यान नहीं दिया।

कुछ ही पल बाद चौकबाक वाले ने छोटे भाई पर पुनः हमला किया। लड़का बुरी तरह चीखा-चिल्लाया और बेहोश होकर नीचे गिर पड़ा। उसके गिरते ही चौकबाक वाले ने उसका सिर काट डाला। लड़का मर गया।

जैसे ही बड़े भाई ने मुड़कर देखा। उसे छुरा हाथ में लिए अपना दुश्मन नजर आया। उसे देखकर वह बेतहाशा अपने गाँव की ओर भागा और हाँफता हुआ किसी तरह घर पहुँचा। बाद में सारा किस्सा उसने गाँव वालों को सुनाया। उसे सुनकर सभी ने चौकबाक वालों का खात्मा कर डालने की कसम खाई और उसी दिन उन पर हमला कर दिया।

उनके हमले से बचकर चौकबाक के लोग जान बचाकर भाग खड़े हुए। कुछ मर गए और बाकी समुद्र में जा कूदे। वे फिर कभी वापस नहीं आए।

कहा जाता है कि वे दुष्ट और निर्दयी लोग शार्क बन गए तथा ‘बदमाश मछली’ कहे जाने लगे। आज भी वे पहले जितने ही दुष्ट और निर्दयी हैं। आदमी को समुद्र में देखते ही वे उस पर हमला करते हैं। शायद, पुरानी दुश्मनी का बदला लेने के लिए।

The first of these is the fact that the data is not representative of the population as a whole. The data is only from one source, and it is not clear how representative it is of the population as a whole. This is a major limitation of the study.

The second limitation is that the data is not representative of the population as a whole. The data is only from one source, and it is not clear how representative it is of the population as a whole. This is a major limitation of the study.

The third limitation is that the data is not representative of the population as a whole. The data is only from one source, and it is not clear how representative it is of the population as a whole. This is a major limitation of the study.

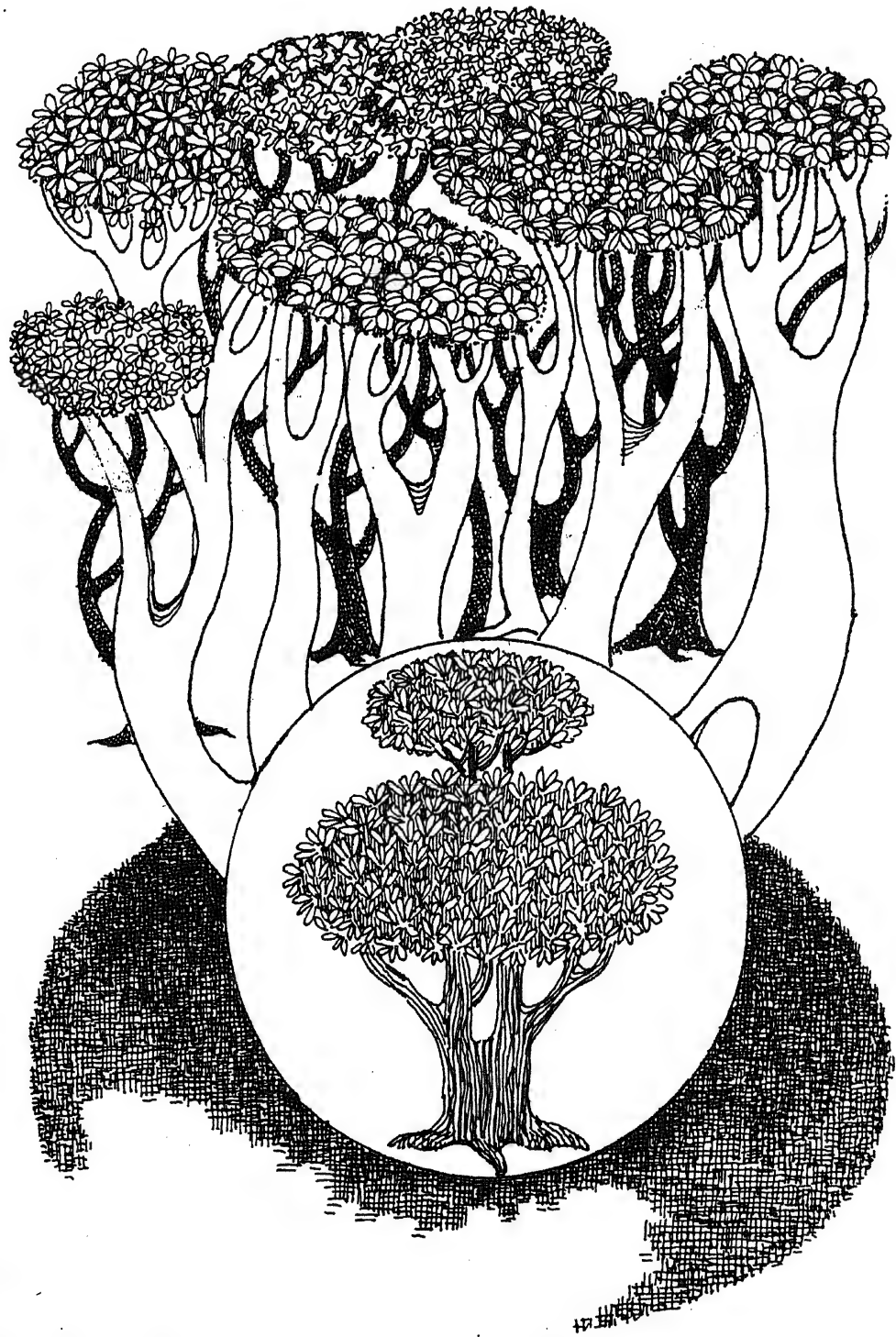
The fourth limitation is that the data is not representative of the population as a whole. The data is only from one source, and it is not clear how representative it is of the population as a whole. This is a major limitation of the study.

The fifth limitation is that the data is not representative of the population as a whole. The data is only from one source, and it is not clear how representative it is of the population as a whole. This is a major limitation of the study.

The sixth limitation is that the data is not representative of the population as a whole. The data is only from one source, and it is not clear how representative it is of the population as a whole. This is a major limitation of the study.

The seventh limitation is that the data is not representative of the population as a whole. The data is only from one source, and it is not clear how representative it is of the population as a whole. This is a major limitation of the study.

The eighth limitation is that the data is not representative of the population as a whole. The data is only from one source, and it is not clear how representative it is of the population as a whole. This is a major limitation of the study.





जब पेड़ चलते थे

बेशक वे बड़े सुनहरे दिन थे।

उन दिनों आदमी जंगलों में भटकता फिरता था। आदमी की तरह ही पेड़ भी घूमते-फिरते थे। आदमी उनसे जो कुछ भी कहता, वे उसे सुनते-समझते थे। जो कुछ भी करने को कहता, वे उसे करते थे। कोई आदमी जब कहीं जाना चाहता था तो वह पेड़ से उसे वहाँ तक ले चलने को कहता था। पेड़ उसकी बात मानता और उसे गंतव्य तक ले जाता था। जब भी कोई आदमी पेड़ को पुकारता, पेड़ आता और उसके साथ जाता।

पेड़ उन दिनों चल ही नहीं सकते थे बल्कि आदमी की तरह दौड़ भी सकते थे। असलियत में, वे वो सारे काम कर सकते थे जो आदमी कर सकता है।

उन दिनों 'इलपमन' नाम की एक जगह थी। वास्तव में वह मनोरंजन की जगह थी। पेड़ और आदमी वहाँ नाचते थे, गाते थे, खूब आनन्द करते थे। वहाँ वे भाइयों की तरह हँसते-खेलते थे।

लेकिन समय बदला। इस बदलते समय में आदमी के भीतर शैतान ने प्रवेश किया। उसके भीतर बुराईयाँ पनप उठीं।

एक दिन कुछ लोगों ने पेड़ों पर लादकर कुछ सामान ले जाना चाहा। परन्तु उन पर उन्होंने इतना अधिक बोझ लाद दिया कि पेड़ मुश्किल से ही कदम बढ़ा सके। वे बड़ी मुश्किल से डगमगाते हुए चल पा रहे थे।

पेड़ों की उस हालत पर उन लोगों ने उनकी कोई मदद नहीं की। वे उल्टे उनका मजाक उड़ाने लगे।

पेड़ों को बहुत बुरा लगा। वे मनुष्य के ऐसे मित्रताविहीन रवैये से खिन्न हो उठे। वे सोचने लगे कि मनुष्य के हित की इतनी चिन्ता करने और ऐसी सेवा करने का नतीजा उन्हें इस अपमान के रूप में मिल रहा है।

उसी दिन से पेड़ स्थिर हो गए। उन्होंने आदमी की तरह इधर-उधर घूमना और दौड़ना बन्द कर दिया।

अब आदमी को अपनी गलती का अहसास हुआ। वह पेड़ के पास गया और उससे पहले की तरह ही दोस्त बन जाने की प्रार्थना की। लेकिन पेड़ नहीं माने। वे अचल बने रहे।

इस तरह आदमी के भद्दे और अपमानजनक रवैये ने उससे उसका सबसे अच्छा मित्र और मददगार छीन लिया।

1. Introduction

The purpose of this study is to investigate the effects of the proposed system on the performance of the system. The study is divided into two main parts: a theoretical analysis and an experimental evaluation. The theoretical analysis is based on the principles of the system and the experimental evaluation is based on the results of the experiments.

The theoretical analysis is based on the principles of the system and the experimental evaluation is based on the results of the experiments. The theoretical analysis is based on the principles of the system and the experimental evaluation is based on the results of the experiments.

The theoretical analysis is based on the principles of the system and the experimental evaluation is based on the results of the experiments.

The theoretical analysis is based on the principles of the system and the experimental evaluation is based on the results of the experiments.

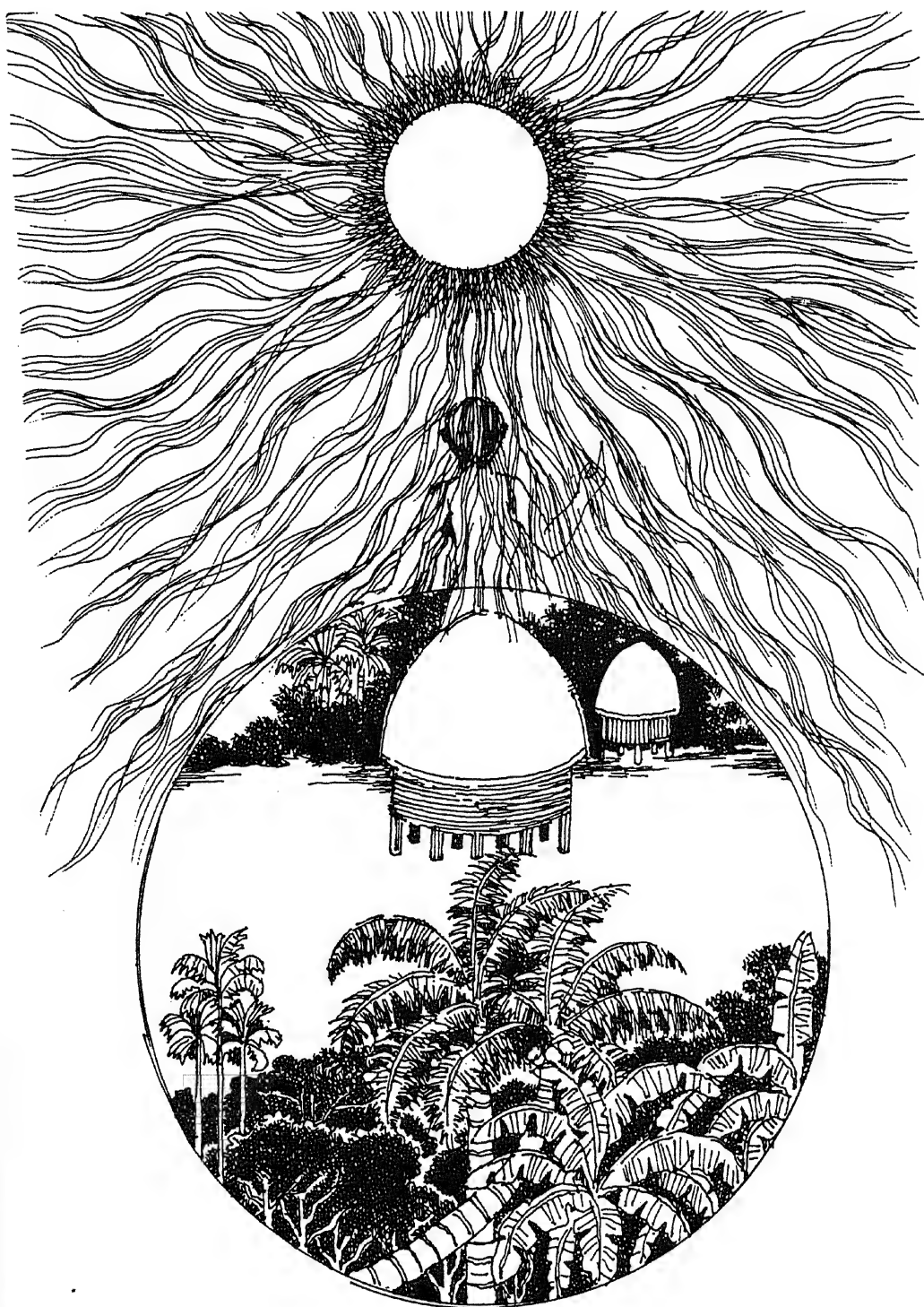
The theoretical analysis is based on the principles of the system and the experimental evaluation is based on the results of the experiments.

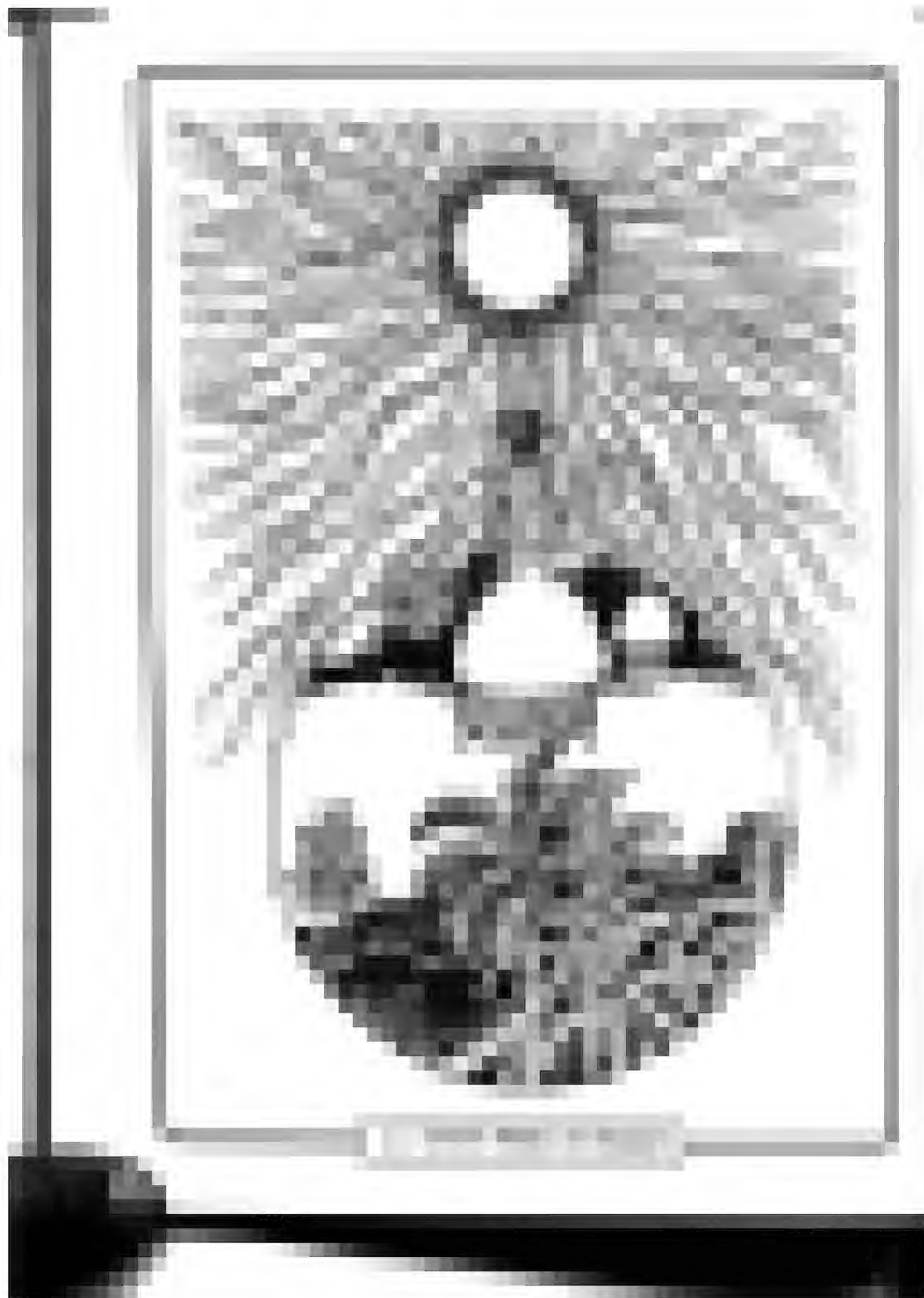
The theoretical analysis is based on the principles of the system and the experimental evaluation is based on the results of the experiments.

The theoretical analysis is based on the principles of the system and the experimental evaluation is based on the results of the experiments.

The theoretical analysis is based on the principles of the system and the experimental evaluation is based on the results of the experiments.

The theoretical analysis is based on the principles of the system and the experimental evaluation is based on the results of the experiments.





सूरज की ओर

बहुत पहले की बात है। एक आदमी ने सूरज की ओर जाना शुरू किया। उसे रास्ता नहीं पता था। रास्ते में उसे अनेक कठिनाइयाँ आईं, लेकिन वह चलता रहा। जब सूरज डूब गया, वह वहीं रुक गया।

घना जंगल उसके चारों ओर था। जंगल में उसने थोड़ी जगह साफ की और एक झोंपड़ी बना ली। उसके चारों ओर उसने केला, पपीता, सुपारी, नारियल आदि फलों के पौधे रोप दिए। इनसे उसे पर्याप्त भोजन मिलने लगा।

इस तरह समय बीतता रहा।

एक दिन मलक्का गाँव के लोगों ने एक पक्षी को चोंच में मछली दबाकर पश्चिम की तरफ उड़ते देखा। उन लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। वापसी में वे उसका पीछा करने लगे। कुछ समय बाद वह पक्षी एक झरने में जा उतरा। पानी वहाँ चाँदी की तरह चमक रहा था। लोगों ने सोचा कि पक्षी ने यहीं कहीं से मछली पकड़ी होगी। उन्हें उस जगह का नाम नहीं पता था। लेकिन वे खुश थे कि उन्होंने एक झरने को खोज लिया है। इधर-उधर देखने पर उन्हें वहाँ एक झोंपड़ी दिखाई दी। उसके चारों ओर फलों का बगीचा था। उन्हें आश्चर्य हुआ कि ऐसे घने और सुनसान जंगल में कौन अकेला रहा है! वे धीरे-धीरे झोंपड़ी तक गए और उसका दरवाजा खटखटाया।

आदमी बाहर आया।

“आप कौन हैं?” उसने उनसे पूछा।

“हम मलक्का के निवासी हैं।” वे बोले, “हम पूरब की ओर उड़ते एक पक्षी का पीछा करते हुए यहाँ पहुँचे हैं। आप कौन हैं और यहाँ अकेले क्यों रहते हैं?”

“मैं भी कभी मलक्का में ही रहता था।” उसने उत्तर दिया, “एक दिन मैंने सूरज की तरफ चलना शुरू किया। सूर्यास्त तक मैं यहाँ पहुँचा और तब से यहीं रहने लगा।”

यह सुनकर मलक्कावासियों ने अपने गाँव से आए उस पहले आदमी को गले लगाया और पुनः मिलने का वादा करके वापस अपने गाँव को लौट गए।

एक दिन ‘पहले आदमी’ को पता चला कि घर में नमक का एक कण भी नहीं है। वह नमक की खोज में झोंपड़ी से बाहर निकला। कुछ दूर चलने पर उसने एक अन्य आदमी को देखा।

“नमस्ते भाई, आप कौन हैं और कहाँ से आए हैं?” पहले आदमी ने पूछा।

“मैं फोबोई गाँव का रहने वाला हूँ और लम्बे समय से यहाँ रह रहा हूँ।” वह बोला।

दोनों आदमी गहरे दोस्त बन गए। कुछ समय तक बातें करने के बाद दोबारा मिलने का वादा करके वे अपने-अपने रास्ते पर चले गए।

THEORY

The first part of the theory is the definition of the function $f(x)$ and the function $g(x)$. The function $f(x)$ is defined as the function $f(x)$ and the function $g(x)$ is defined as the function $g(x)$.

The second part of the theory is the definition of the function $f(x)$ and the function $g(x)$.

The third part of the theory is the definition of the function $f(x)$ and the function $g(x)$. The function $f(x)$ is defined as the function $f(x)$ and the function $g(x)$ is defined as the function $g(x)$.

The fourth part of the theory is the definition of the function $f(x)$ and the function $g(x)$.

The fifth part of the theory is the definition of the function $f(x)$ and the function $g(x)$.

The sixth part of the theory is the definition of the function $f(x)$ and the function $g(x)$.

The seventh part of the theory is the definition of the function $f(x)$ and the function $g(x)$.

The eighth part of the theory is the definition of the function $f(x)$ and the function $g(x)$.

The ninth part of the theory is the definition of the function $f(x)$ and the function $g(x)$.

The tenth part of the theory is the definition of the function $f(x)$ and the function $g(x)$.

The eleventh part of the theory is the definition of the function $f(x)$ and the function $g(x)$.

The twelfth part of the theory is the definition of the function $f(x)$ and the function $g(x)$.





नारियल का जन्म

पुराने समय में कार-निकोबार के एल्कामेरो में दो मित्र रहते थे। एक का नाम असोंगी और दूसरे का एनालो था। दोनों एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे। वे साथ-साथ काम करते, जो कुछ वे कमाते उससे साथ-साथ खाते और दुःख-सुख में साथ रहते। दोनों पूरे दिन काम में लगे रहते थे।

कार-निकोबार में एक बार सूखा पड़ा। हालांकि निकोबार चारों ओर समुद्र से घिरा था लेकिन पूरे साल पानी की एक बूँद भी नहीं बरसी थी। सारे कुएँ सूख गए थे। मनुष्य, जानवर, पक्षी बिना पानी के मर रहे थे।

असोंगी एक अच्छा जादूगर था। उसके गाँव वाले ही नहीं दूर-दूर से दूसरे लोग भी उसका जादू देखने को आते थे। एक दिन दोनों दोस्त घास काटने को गए। असोंगी को अपनी छुरी तेज करनी थी, लेकिन आसपास कहीं पानी नजर नहीं आ रहा था। ऐसे में असोंगी जंगल में घुस गया और जादू के बल पर जमीन से पानी निकाल लिया। उसे लेकर वह अपने मित्र एनालो के पास आया। एनालो को बड़ा आश्चर्य हुआ।

“यह पानी तुम कहाँ से ले आए?” उसने असोंगी से पूछा।

“जंगल के भीतर से।” असोंगी ने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया।

“देखो, मैं तुम्हारा सबसे गहरा दोस्त हूँ।” एनालो लालचपूर्वक बोला, “मुझे भी यह जादू सिखाओ न!”

“एनालो, मेरे दोस्त, मुझे तुम्हारी दोस्ती पर कोई शक नहीं।” असोंगी ने सपाट आवाज में बोलना शुरू किया, “लेकिन, मेरे गुरुजी का कहना था कि हर विद्या हर आदमी को नहीं सिखाई जा सकती। इसलिए...”

“अच्छा! तो मैं जादू सीखने के योग्य नहीं हूँ?” उसकी बात सुनकर एनालो क्रोधपूर्वक चीखा। इस नाराजगी में उसने अपने मित्र का सिर धड़ से उड़ा दिया। असोंगी के धड़ को उसने वहीं दफन कर दिया और सिर को लेकर घर आ गया। घर पर उसने असोंगी के सिर को एक खम्भे पर लटका दिया।

रात में वह सिर एनालो से बहुत-सी बातें किया करता था। इससे डरकर एनालो गाँव छोड़कर भाग गया। वह दूसरे गाँव में जा पहुँचा। वहाँ उसने शादी की और आराम से रहने लगा। कुछ समय बाद उसके घर एक पुत्री का जन्म हुआ। वह एक खूबसूरत लड़की थी। सभी उसे प्यार करते थे।

एक बार अचानक लड़की बीमार पड़ गई। एनालो ने उसका बहुत इलाज कराया लेकिन किसी भी दवा से उसे आराम नहीं हुआ।

दुःखी और थका-हारा एनालो एक रात जल्दी सो गया। गहरी नींद में उसने एक स्वप्न देखा। सपने में उसके दोस्त असोंगी के कटे हुए सिर ने उससे यह कहा :

“इस सिर को जमीन में दबा दो। उससे एक पेड़ उगेगा। जब उस पर फल आ जाएँ तब उस फल को तोड़ना। उस फल को काटने पर उसके भीतर पानी निकलेगा। वह पानी अपनी बेटी की पिलाओ। वह ठीक हो जाएगी।” एनालो की नींद टूट गई। वह मुँह-अँधेरे ही उठ बैठा और दौड़ता हुआ अपने पुराने गाँव में पहुँचा। घर में खम्भे पर लटके असोंगी के सिर को उसने उसके बताए अनुसार जमीन में दबा दिया।

कुछ समय बाद उस सिर से एक पेड़ पैदा हुआ। उस पर फल लगे। एनालो ने फलों को बीच से काटा और पानी निकालकर बेटी को पिलाया। कुछ ही दिनों में लड़की बिल्कुल चंगी हो गई। एनालो उसे स्वस्थ देखकर बहुत खुश हुआ। उसे दुःख हुआ कि उसने असोंगी जैसे भला चाहने वाले मित्र के साथ घात किया।

निकोबार के लोग आज भी नारियल को असोंगी के सिर से पैदा हुआ फल मानते हैं।

TABLE 1

1. The first step is to identify the problem. This involves understanding the current situation and what needs to be changed.

[illegible]

100

1. The first step is to identify the problem. This involves understanding the current situation and what needs to be improved.

1. The first step is to identify the problem or question that needs to be answered. This involves understanding the context and the specific requirements of the task.

1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 2679, 26

[illegible]

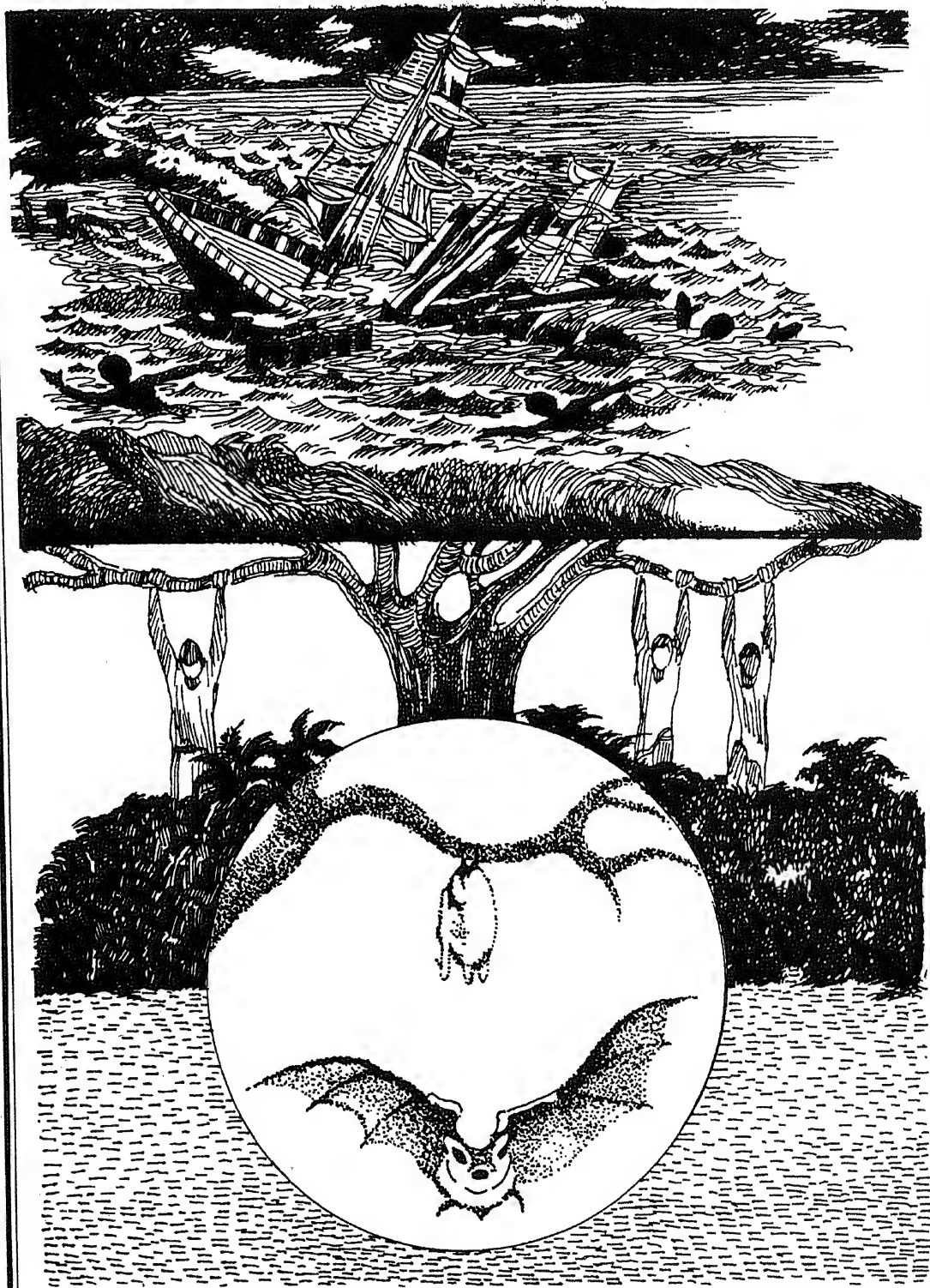
The following table shows the results of the regression analysis for the dependent variable "Number of children in the household" (N = 1,000). The independent variables are "Age of the head of household" and "Gender of the head of household". The table includes the coefficient estimates, standard errors, t-statistics, and p-values for each variable.

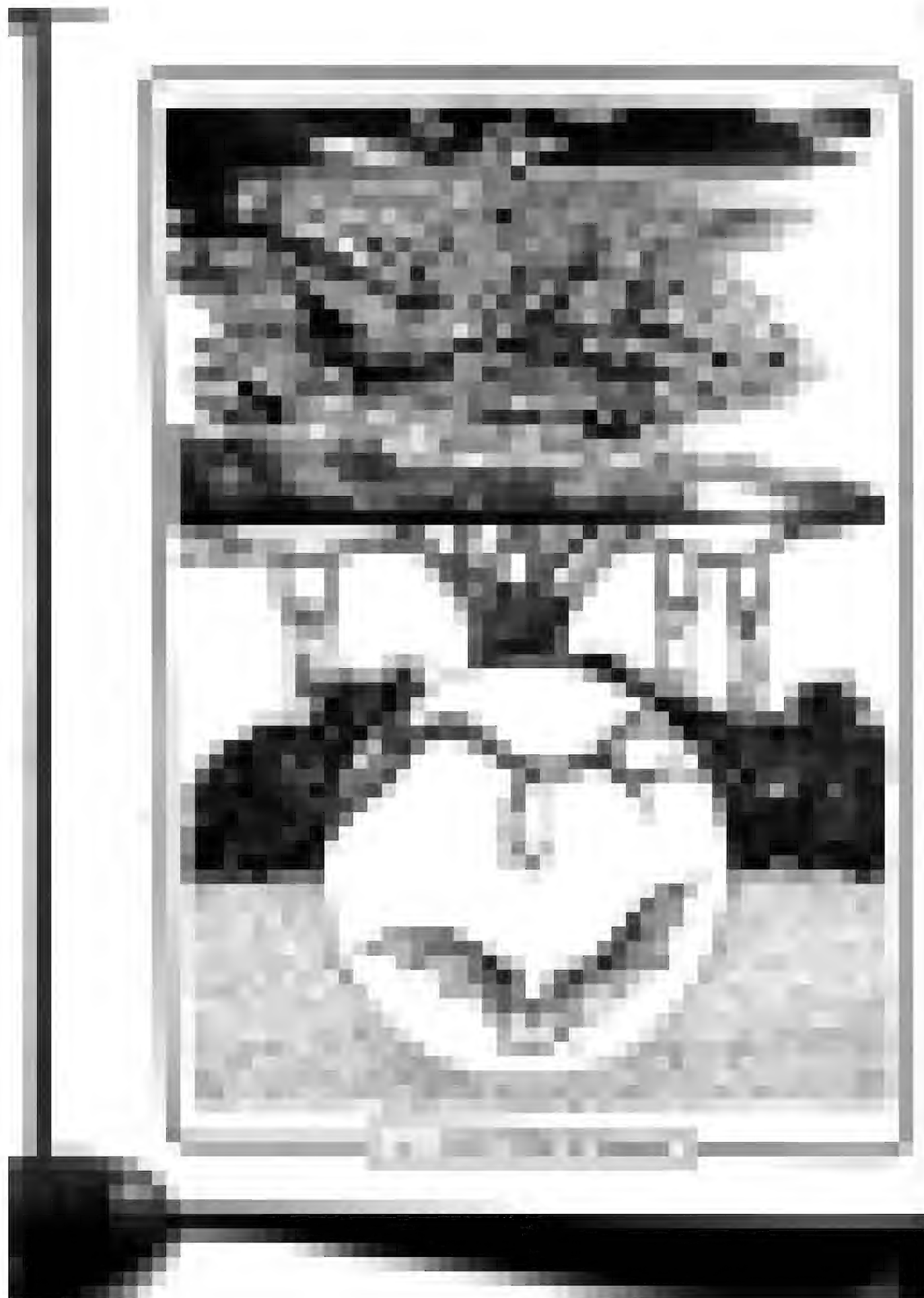
Variable	Coefficient	Standard Error	t-statistic	p-value
Age of the head of household	0.05	0.02	2.50	0.01
Gender of the head of household (Male = 1, Female = 0)	-0.10	0.03	-3.33	0.00
Constant	1.50	0.10	15.00	0.00

The results indicate that the number of children in the household increases with the age of the head of household and decreases if the head of household is male.

The first part of the paper discusses the importance of the
 Journal of Management Education in the field of management
 education. It highlights the journal's role in providing
 a platform for the dissemination of research findings and
 the advancement of the discipline. The second part of the
 paper focuses on the journal's commitment to diversity and
 inclusion, emphasizing the importance of representing a
 wide range of perspectives and experiences in the
 management education field. The third part of the paper
 discusses the journal's efforts to promote the use of
 research findings in the classroom, highlighting the
 importance of evidence-based practice in management
 education. The fourth part of the paper discusses the
 journal's commitment to the advancement of the
 discipline, highlighting the importance of ongoing
 research and scholarship in the field. The fifth part of
 the paper discusses the journal's commitment to the
 development of the management education field,
 highlighting the importance of ongoing research and
 scholarship in the field. The sixth part of the paper
 discusses the journal's commitment to the advancement of
 the discipline, highlighting the importance of ongoing
 research and scholarship in the field. The seventh part
 of the paper discusses the journal's commitment to the
 development of the management education field,
 highlighting the importance of ongoing research and
 scholarship in the field. The eighth part of the paper
 discusses the journal's commitment to the advancement of
 the discipline, highlighting the importance of ongoing
 research and scholarship in the field. The ninth part of
 the paper discusses the journal's commitment to the
 development of the management education field,
 highlighting the importance of ongoing research and
 scholarship in the field. The tenth part of the paper
 discusses the journal's commitment to the advancement of
 the discipline, highlighting the importance of ongoing
 research and scholarship in the field.

1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 2679, 26





चमगादड़ का जन्म

बहुत समय पहले की बात है। एक विदेशी जलपोत कहीं दूर से आया। लेकिन इससे पहले कि वह किनारे पर लग पाता—तूफान में फँस गया। नाविकों ने उसे बचाने की भरपूर कोशिश की लेकिन वह एक चट्टान से टकरा गया और चकनाचूर हो गया।

नाविकों और यात्रियों ने तैरकर किनारे पहुँचने की भरपूर कोशिश की लेकिन उनमें से अधिकांश डूब गए। बचे हुए लोगों में से कुछ किमिओस द्वीप पर जा पहुँचे। उन सभी के कपड़े फट चुके थे। शरीर घायल थे। सभी की हालत दयनीय थी। काफी समय तक वे सागर-किनारे बेहोश पड़े रहे।

होश आने पर वे भोजन और आवास की तलाश में भटकने लगे। उस समय तक तूफान थम चुका था और मौसम शान्त हो गया था। बिना कुछ खाए-पिए वे लोग जंगल में घुस पड़े। वहाँ उन्हें ऊँचे-ऊँचे नारियल के पेड़ नजर आए। वे उन पर चढ़ गए। उन्होंने फलों को तोड़कर पानी पिया और गूदा खाया।

चारों ओर अंधेरा छा गया था। आसपास की चीजें दिखाई देनी बन्द हो गई थीं। किसी तरह उन्होंने पेड़ों की शाखाओं को पकड़ा और उन पर लटक गए।

अण्डमानी आदिम जनजाति के लोगों का मानना है कि शाखाओं से लटके वे लोग रात भर में ही चमगादड़ बन गए। युवा लोग छोटे चमगादड़ और वृद्ध लोग बड़े चमगादड़ बने। इससे पहले उस द्वीप पर एक भी चमगादड़ नहीं था।

यही चमगादड़ बाद में बाकी द्वीपों के जंगलों में भी फैल गए।

1. The first step is to identify the problem. This involves understanding the current situation and what needs to be changed.

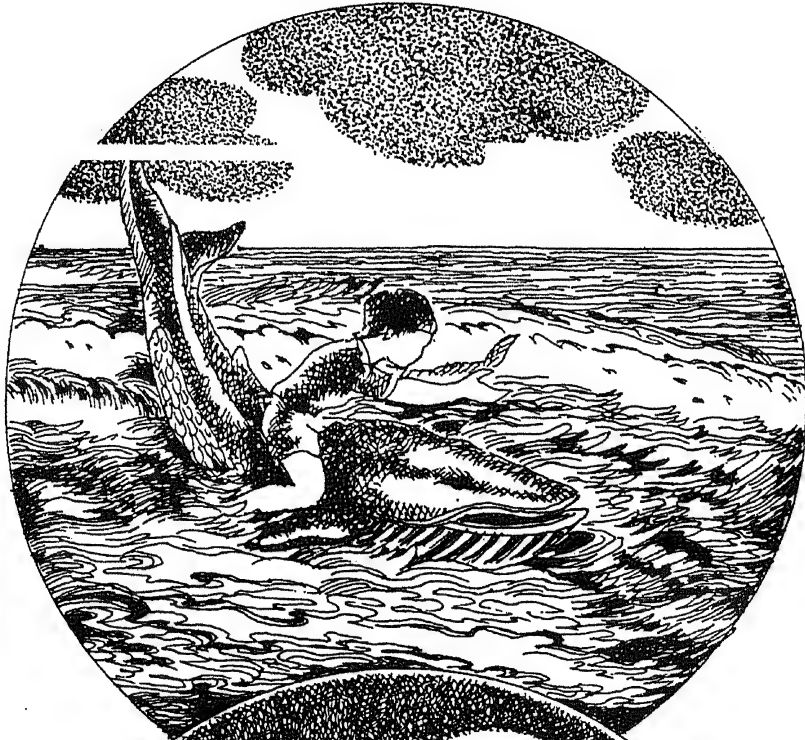
© 2005 Blackwell Publishing Ltd, *Journal of Internal Medicine* 258: 103–110

THE NEW YORK PUBLIC LIBRARY
ASTOR LENOX TILDEN FOUNDATIONS
155 E. 42ND STREET
NEW YORK 17, N.Y.

1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 2679, 2680, 26

Journal of Management Inquiry 22(1) 3-14
© The Author(s) 2013
Reprints and permissions: sagepub.com/journalsPermissions.nav
DOI: 10.1177/1056492613505291

THE UNIVERSITY OF CHICAGO LIBRARY





गिरि और शोआन

बहुत समय पहले निकोबार में अरंग नाम का एक आदमी था। उसकी एक पत्नी थी। उन दोनों के तीन बेटे और तीन बेटियाँ थीं। अरंग काफी धनवान था। उसने परिवार के लिए एक आलीशान मकान बनाया।

एक दिन वह अपने बड़े बेटे शोआन के साथ समुद्र से मछली पकड़ने को गया। अचानक तेज आँधी आई। समुद्र में ज्वार आने लगा। उनकी डोंगी उलट गई। बाप और बेटा दोनों समुद्र में डूब गए। जब पिता डूब रहा था तो लड़का डोंगी के ऊपर सरक आया और चिल्लाया, “मेरे पिता मर गए हैं। हाय, मैं क्या करूँ? मैं घर कैसे जाऊँगा?”

तभी एक हेल उसके सामने आई।

“मेरी पीठ पर बैठो। मैंने रास्ता देखा है।” हेल ने कहा।

हेल बहुत बड़ी मछली होती है। उसे सागर की रानी कहा जाता है। यद्यपि शोआन को उससे कुछ डर लगा लेकिन वह हिम्मत करके उसकी पीठ पर बैठ गया।

हेल उसको मंजिल की ओर ले चली। उसे देखकर समुद्र के सभी जीव डर कर भागने लगे। उड़ने वाली मछलियाँ इधर-उधर उड़ गईं। शार्क गहरे सागर में उतर गईं। समुद्री साँप तलहटी की रेत में जा छिपे। डॉल्फिन तेजी के साथ दूर तैर गईं।

तैरते-तैरते वे हेल के देश में जा पहुँचे। वह कीमती पत्थर की एक बड़ी गुम्बदनुमा हवेली में रहती थी। उसकी दीवारें लाल मृगे से बनी थीं। घर के अन्दर हेल की बेटा ‘गिरि’ बैठी थी।

शोआन वहाँ खूबसूरत गिरि की सेवा में रहने लगा।

“तुम्हें क्या-क्या काम आता है?” गिरि ने पूछा।

“मैं जंगल से नारियल इकट्ठे कर सकता हूँ।” शोआन बोला।

“इससे क्या? नारियल यहाँ होता ही नहीं है।” गिरि ने कहा।

“मैं नाव बना सकता हूँ।”

“नाव की हमें क्या जरूरत है? कुछ और बताओ।”

“मैं बरछी से मछलियाँ मार सकता हूँ।”

“तुम ऐसा कुछ नहीं करोगे।” गिरि तेज स्वर में बोली, “हम मछलियों को प्यार करते हैं। मेरे पिता मछलियों के राजा हैं। अब तुम मेरे बालों में कंघी करो।” गिरि ने शोआन को आदेश दिया।

शोआन उसके बालों में कंघी करने लगा। वह वहाँ रहता रहा। दोनों आपस में खूब हँसी-मजाक करते। कुछ समय बाद दोनों में प्रेम हो गया और उन्होंने परस्पर विवाह कर लिया। गिरि के पास दर्पण नहीं था। उसने शोआन से एक दर्पण लाने को कहा।

“मेरे घर में एक दर्पण है।” शोआन बोला, “लेकिन मैं वहाँ जाऊँगा कैसे?”

“इसमें क्या है। मैं तुम्हें वहाँ पहुँचा दूँगी। तुम मेरी पीठ पर बैठो, मैं तुम्हें किनारे पर छोड़ देती हूँ।” गिरि ने कहा।

THE HISTORY OF THE

THE HISTORY OF THE

THE HISTORY OF THE

THE HISTORY OF THE

THE HISTORY OF THE

THE HISTORY OF THE

THE HISTORY OF THE

THE HISTORY OF THE

THE HISTORY OF THE

THE HISTORY OF THE

THE HISTORY OF THE

THE HISTORY OF THE

THE HISTORY OF THE

THE HISTORY OF THE

THE HISTORY OF THE

THE HISTORY OF THE

गिरि शोआन को लेकर किनारे पर आ गई। वह समुद्र में एक बड़े पत्थर के पीछे रुक गई। शोआन जल्दी लौटने का वादा करके अपने गाँव को चला गया। शीघ्र ही वह अपने घर जा पहुँचा।

शोआन को देखकर उसकी माँ को विश्वास ही नहीं हुआ कि वह जिंदा है! उसके जीवित लौट आने की खबर सुनकर गाँव के सारे लोग उसे देखने को उमड़ पड़े।

उसने सबको ह्वेल वाली घटना सुनाई और गिरि के साथ अपने विवाह की बात बताई। लोग उसकी बातों पर हँसने लगे। उसकी सारी बातें उन्हें गप लगनीं। शोआन को उनके रवैये से बड़ा दुख हुआ। उसने दर्पण उठाया और घर से भाग खड़ा हुआ।

गाँव के लोग अनपढ़ और अंधविश्वासी थे। समुद्र में डूबने के वर्षों बाद वापस लौटे शोआन को वे उसका भूत समझ रहे थे। जब वह दर्पण उठाकर भागने लगा तो उनका संदेह विश्वास में बदल गया। उन्होंने उसका पीछा किया और बरछियों से उस पर वार किया।

बरछियों ने भागते हुए शोआन के पूरे शरीर को बँध डाला। वह मर गया।

उधर, सागर में मूँगे की पहाड़ी के पीछे रुकी गिरि उसकी प्रतीक्षा करती रही। लेकिन वह गिरि के पास तक नहीं पहुँच पाया।

अक्सर ही चाँदनी रातों में मछुआरे सागर में दर्दभरी आवाजें सुनते हैं। उन्हें लगता है जैसे कोई स्त्री लम्बे समय से अपने पति के इन्तजार में सिसक रही हो।

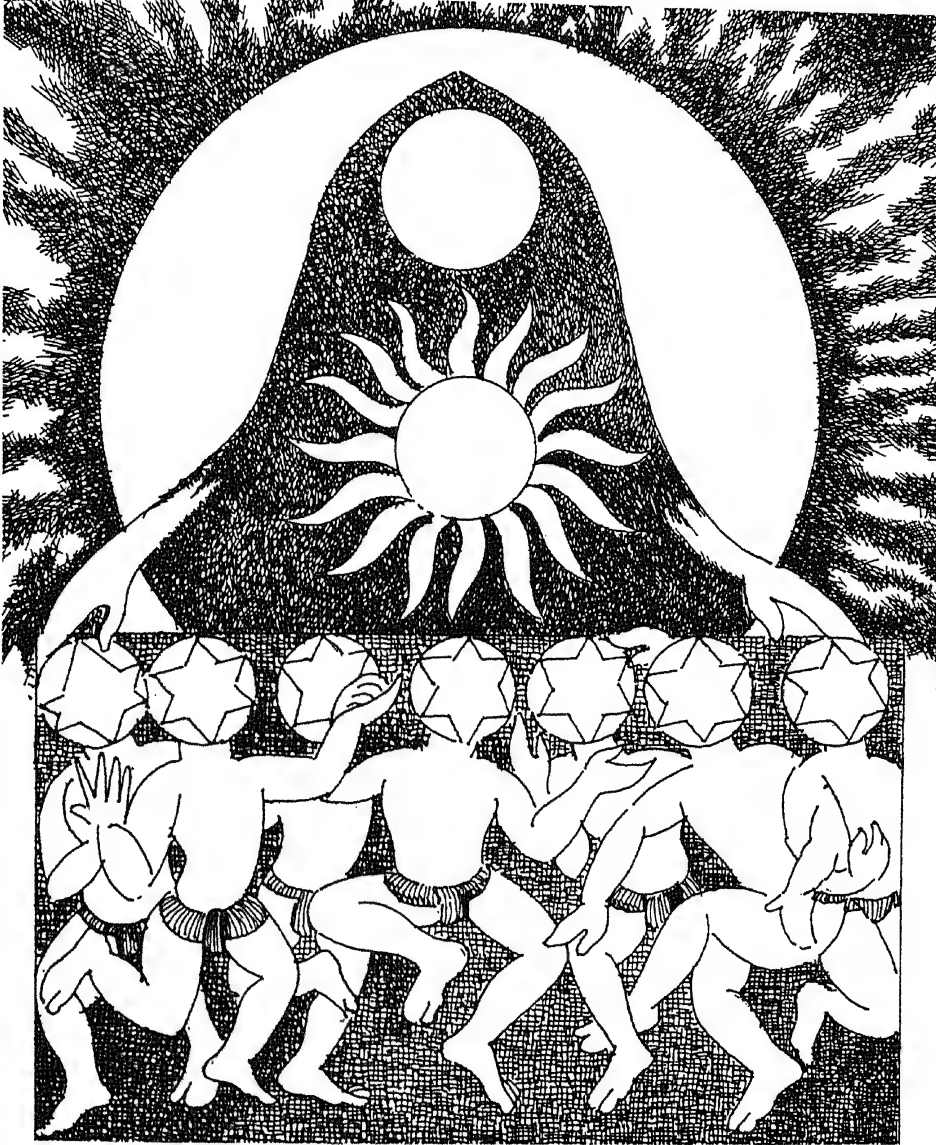
वे लोग, जिन्हें गिरि की कहानी नहीं पता, इन आवाजों पर आश्चर्य करते हैं। गिरि शोआन के बिना अकेली अपने घर नहीं लौट सकती। इसलिए वह दर्दिली आवाज में उसे पुकारती है—

लौट आओ शोआन, लौट आओ... लौट आओ...!

आधी रात को समुद्र में अब भी यह आवाज गूँजती है।

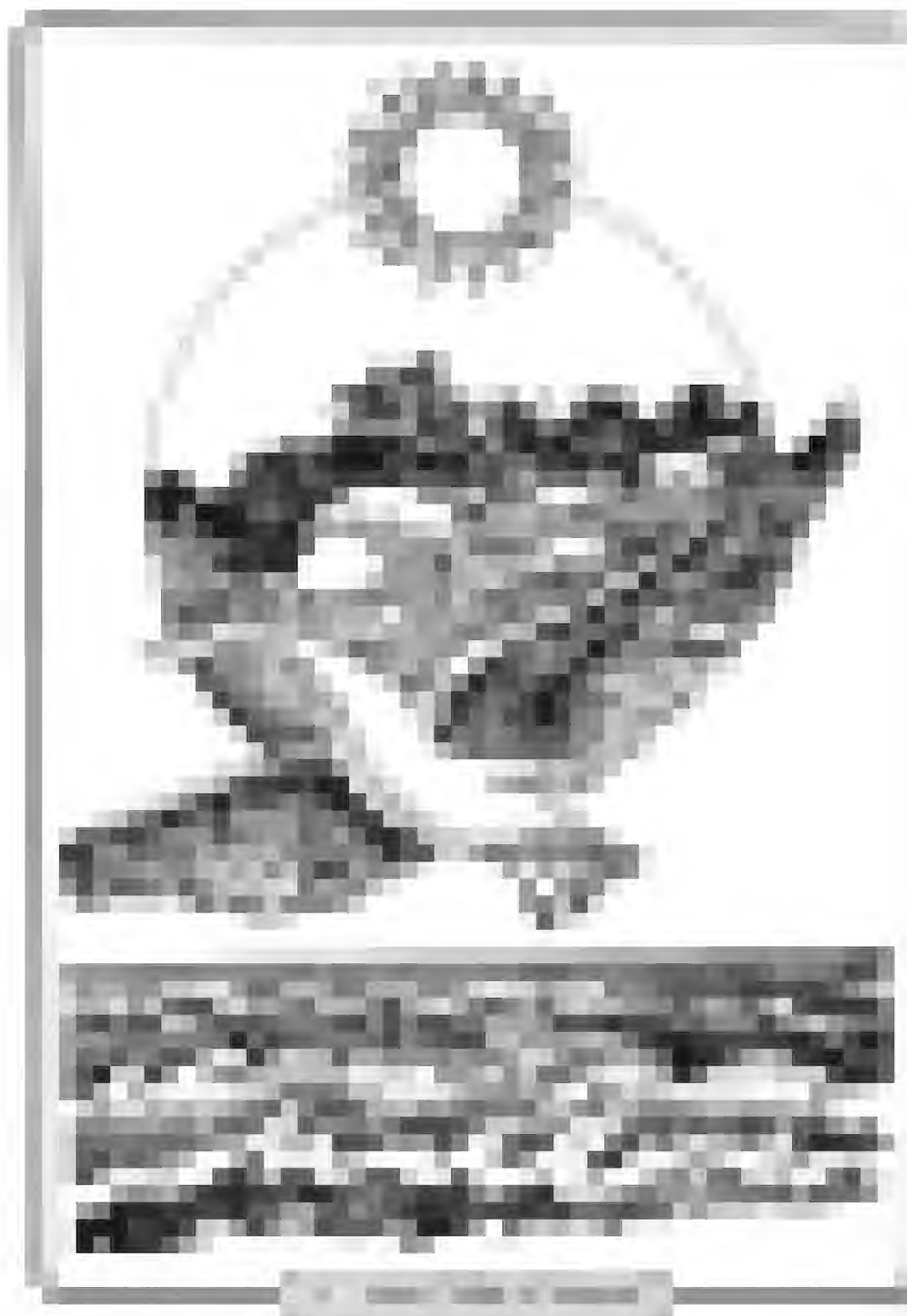
[illegible]

सूरज और चाँद



अण्डमानी लोग सूरज (चान-आ-बोथो) को चाँद (माई-ता-अ-गर) की पत्नी और सितारों को उनके बच्चे मानते हैं। चाँद पूरे दिन सोता है और सूरज के माने पर जागता है। उनका भोजन पुलुगा (भगवान) के घर पर बनता है। घर के भीतर नहीं, बाहर। उनका मानना है कि सूरज आग में लिपटा है और उसके दो सींग हैं। चाँद गोरा चिट्ठा है और लम्बी दाढ़ी रखता है।





चोरी हुआ टापू

बहुत समय पहले काकना गाँव के पास एक छोटा-सा टापू था। छोटा होने पर भी वह एक दर्शनीय टापू था। उस पर कोई रहता नहीं था। लोग उस पर सिर्फ घूमने और शिकार करने के लिए जाते थे।

टापू पर 'साका' नाम का एक पक्षी भी आता-जाता था। पूरी दुनिया में वह एक ही पक्षी था। वह छोटा परन्तु बहुत चतुर-चालाक था।

वर्षों तक साका टापू में उड़ान भरता रहा। उसको टापू इतना अधिक भाया कि उसने उसे अपने साथ ले जाने की योजना बनाई ताकि उसके रहने की जगह हमेशा खूबसूरत बनी रहे। उसके सिवा कोई और वहाँ न हो।

एक रात, जब सारी दुनिया सोई हुई थी, साका ने सोचा— अच्छा मौका है। ऐसे में मुझे इस टापू को ले उड़ना चाहिए।

साका कल्पना में खो गया। उसे लगा कि पूरा टापू उसके घर में है और वह आराम से टापू में उड़ान भर रहा है। वहाँ उसका एक प्यारा घोंसला है। तरह-तरह के दूसरे पक्षी आसपास चहक रहे हैं। सभी उस टापू की प्रशंसा कर रहे हैं और वहाँ रुक जाना चाहते हैं। अचानक उसकी तन्द्रा टूटी और वह उस छोटे टापू को पीठ पर लादकर अपने निवास की ओर उड़ चला।

साका छोटा था। वह बड़ी सावधानी के साथ उस भारी-भरकम टापू को लेकर उड़ रहा था। दिन निकलने से पहले वह अपने निवास पर पहुँच जाना चाहता था। लेकिन समय उसकी उड़ान की तुलना में तेजी से गुजर रहा था।

जैसा कि उसको डर था, रात समाप्त हो गई।

दिन निकल आया।

लोग जाग उठे। उन्होंने साका को टापू लेकर जाते हुए देख लिया।

पूरब की ओर से आती सूरज की पहली किरण पड़ते ही साका ने टापू को नीचे फेंक दिया और तेजी से अपने निवास की ओर उड़ गया।

टापू उलटकर समुद्र में जा गिरा।

लोगों का मानना है कि चौरा के रास्ते में सागर के बीच झाँकता 'छोटा टापू' ही वह चोरी गया टापू है।

Introduction

The purpose of this study is to investigate the effects of the proposed system on the performance of the system. The study is divided into two main parts: a theoretical analysis and an experimental evaluation.

The theoretical analysis is based on the principles of the system and the assumptions made in the design. It aims to provide a clear understanding of the system's behavior and the expected results.

The experimental evaluation is designed to verify the theoretical results and to measure the system's performance in a real-world environment. It involves the implementation of the system and the collection of data for analysis.

The results of the study are presented in the following sections. The first section discusses the theoretical analysis, and the second section discusses the experimental evaluation.

The theoretical analysis shows that the proposed system is capable of achieving the desired performance. It is based on the principles of the system and the assumptions made in the design. The experimental evaluation shows that the system's performance is in line with the theoretical results.

The experimental results show that the system is capable of achieving the desired performance. It is based on the principles of the system and the assumptions made in the design. The experimental evaluation shows that the system's performance is in line with the theoretical results.

The results of the study are presented in the following sections.

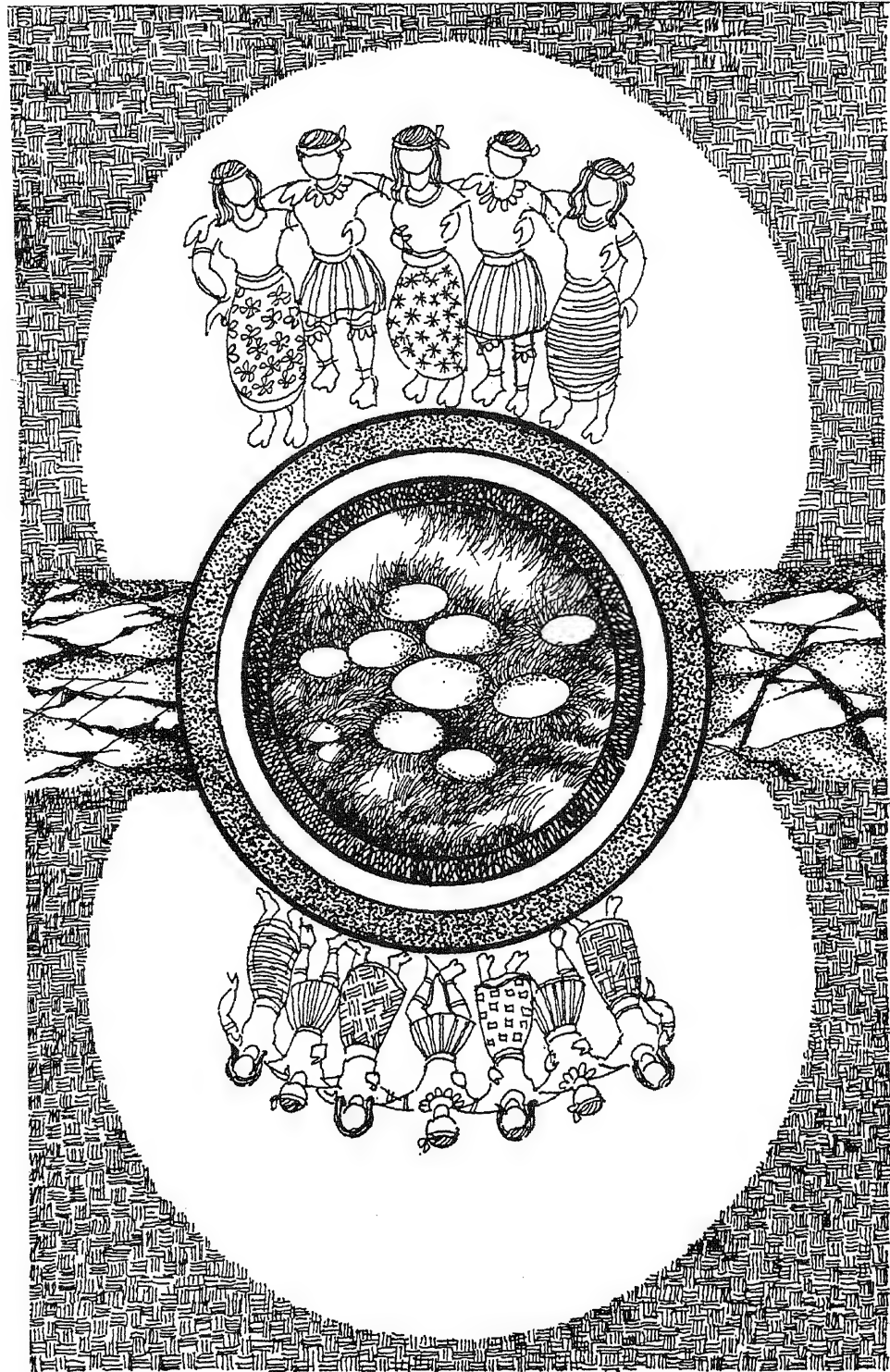
The first section discusses the theoretical analysis.

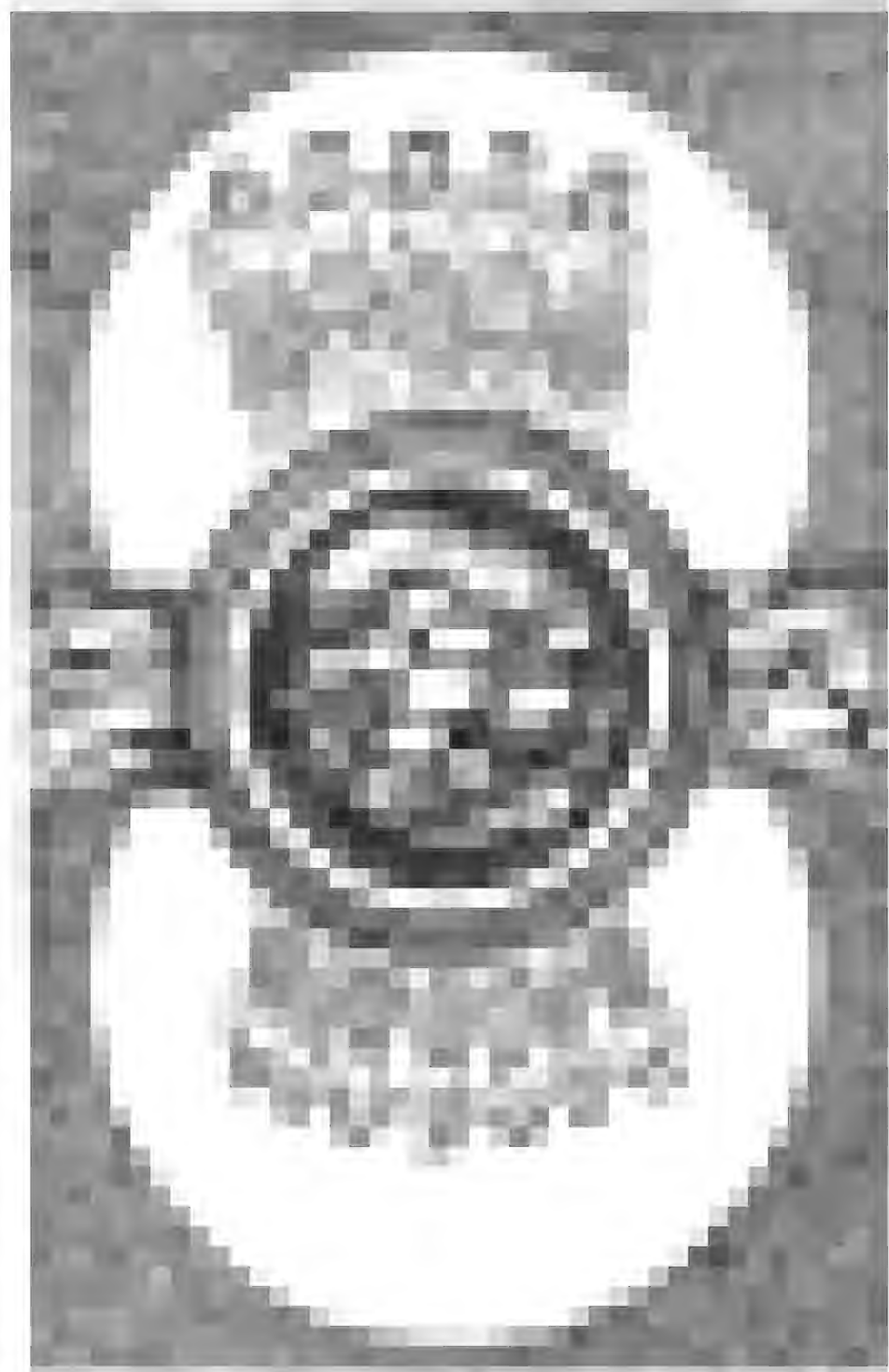
The second section discusses the experimental evaluation.

The results of the study are presented in the following sections. The first section discusses the theoretical analysis, and the second section discusses the experimental evaluation.

The experimental results show that the system is capable of achieving the desired performance.

The experimental evaluation shows that the system's performance is in line with the theoretical results. The results of the study are presented in the following sections.





19

बौनों का देश

हजारों साल पहले मलक्का के लोग घूमते-घामते एक ऐसी जगह जा पहुँचे जहाँ एक गुफा-सी थी। उसमें इतना अंधेरा था कि वे चाहकर भी उसके भीतर जाने का साहस न कर सके। तब उन्होंने नारियल की कुछ सूखी पत्तियों को इकट्ठा करके उन्हें जलाया। उस प्रकाश में वे उसके भीतर गए। अन्दर उन्हें एक संकरा रास्ता दिखाई पड़ा। उस रास्ते को पार करके वे एक शानदार जगह पर जा पहुँचे।

वास्तव में यह पाताल में बौनों का शहर था। उन्होंने वहाँ ढेर सारी हरी घास और अंडों का अम्बार देखा। ये अंडे बौने चोरों ने पक्षियों के घोंसलों से चुराए थे।

मलक्कावासियों ने उन अंडों को वहाँ से चुराया और अपने घर ले आए। इसके बाद वे जब भी मौका पाते, उस पाताल-गुफा में घुस जाते, अंडों को चुराते और मलक्का लौट आते।

लेकिन एक दिन अंडे चुराते हुए उन्हें बौनों ने पकड़ा लिया।

“तुम लोग कौन हो? और हमारे अंडे क्यों चुरा रहे हो?” बौनों ने पूछा।

“हम पृथ्वीवासी हैं। लेकिन आप कौन हैं? आपके पूर्वज कौन थे?” मलक्का वालों ने पूछा।

“हम भी अपने पूर्वजों के वंशज हैं। लेकिन आप आगे से हमारे अंडे नहीं चुरा सकते।” बौनों ने कहा।

“इसके लिए तुम लोगों को हमारे साथ नृत्य करना होगा।” मलक्कावासी बोले, “अगर हम जीते तो अंडे ले जाएँगे और अगर आप जीते तो हम आगे कभी यहाँ नहीं आएँगे।”

बौने सहमत हो गए।

नृत्य-प्रतियोगिता शुरू हो गई। दोनों जाति के लोग कई दिनों तक लगातार नाचते रहे।

अंत में, मलक्का वाले हार गए। अतः वे अपने गाँव को लौट आए।

बौनों ने तब गुफा के आगे सुपारी का एक पेड़ उगा दिया और उसका मुँह पत्थरों से बंद कर दिया।

तब से मलक्का के लोग पाताल में उतरने का रास्ता भूल गए और कभी वहाँ नहीं जा पाए।

THE HISTORY OF THE CITY OF NEW YORK

The city of New York, situated on the eastern tip of Long Island, is one of the most important and populous cities in the United States. It is the center of commerce and industry for the entire Northeast, and its harbor is one of the busiest in the world. The city's history is rich and varied, with a long and illustrious past.

The city was first settled by Dutch and English traders in the early 17th century. It was then known as New Amsterdam, and was the capital of the Dutch colony of New Netherland. In 1624, the English took control of the city, and it was renamed New York.

The city's growth was rapid, and by the mid-18th century it was one of the largest cities in the colonies. It was the site of the American Revolution, and played a key role in the struggle for independence.

The city's economy was based on trade and commerce, and it was a major center for the shipping industry. It was also a center of culture and education, with many of the nation's leading universities and institutions of higher learning.

The city's population grew steadily over the years, and by the mid-19th century it was one of the most densely populated cities in the world. It was a center of innovation and progress, and many of the nation's most important inventions and discoveries were made in the city.

The city's history is a testament to the resilience and spirit of its people. It has overcome many challenges and setbacks, but it has always emerged stronger and more united. It is a city of great pride and accomplishment, and its future is bright.

The city's history is a story of triumph and adversity, of hope and despair. It is a story of a city that has always been a part of the American dream, and that will continue to be a part of it for many years to come.

The city's history is a story of a city that has always been a part of the American dream, and that will continue to be a part of it for many years to come. It is a story of a city that has always been a part of the American dream, and that will continue to be a part of it for many years to come.

The city's history is a story of a city that has always been a part of the American dream, and that will continue to be a part of it for many years to come. It is a story of a city that has always been a part of the American dream, and that will continue to be a part of it for many years to come.





बदला

आदिकाल में निकोबार में अनगिनत सुअर थे। वे वहाँ के लोगों को खूब परेशान किया करते थे।

एक दिन एक आदमी खाली हाथ कहीं जा रहा था। अचानक उसका सामना सुअरों के एक झुंड से हो गया। उन्होंने उस पर हमला कर दिया। आदमी कुछ न कर सका और मारा गया।

उसकी मौत की खबर पाकर उसका बड़ा भाई दुख के सागर में डूब गया। उसने सुअरों से बदला लेने की कसम खा ली। उसने अपने फरसे की धार को पैना करना शुरू किया। सारी रात वह उसे धारदार बनाता रहा। अगले दिन, सवेरे-सवेरे वह जंगल में गया। फरसे की धार को आँकने के लिए उसने एक तगड़ा प्रहार एक पेड़ पर किया और एक ही बार में उसे काट डाला। लेकिन उसे तसल्ली नहीं हुई। वह घर लौट आया और दोबारा उसकी धार को तेज करने के लिए बैठ गया। घंटों मेहनत के बाद उसने उसे एक मक्खी पर टैस्ट किया और उसके दो टुकड़े कर डाले।

धार से सन्तुष्ट होकर वह फरसे को थामे घर से निकला और उसी जगह जा पहुँचा, जहाँ पर उसके भाई को सुअरों ने मार डाला था। वहाँ, वह एक ऊँचे पेड़ पर जा चढ़ा और चीख-चीखकर सुअरों को ललकारने लगा। उसकी आवाज सुनकर सुअर वहाँ आ गए। उसे ऊँचे पेड़ पर चढ़ा पाकर वे एक के ऊपर एक चढ़ने लगे। बड़ा भाई यही चाहता था। धारदार फरसे से उसने वे सारे सुअर मार डाले।

इसके बाद उसने पुनः पुकारना शुरू किया। सुअरों का एक बड़ा झुंड पुनः वहाँ आ पहुँचा। उन्होंने भी पहले झुंड के सुअरों की तरह एक के उपर एक खड़े होकर बड़े भाई तक पहुँचने की कोशिश की और मारे गए।

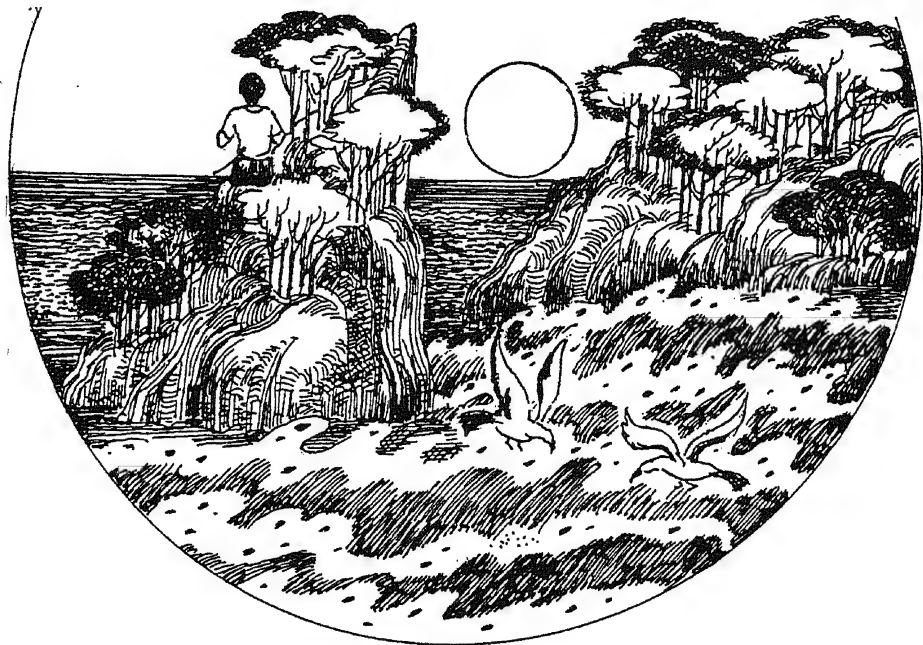
लेकिन तीसरी बार पुकारने पर सुअर नहीं आए। उनके स्थान पर एक देव आया और उससे सुअरों की हत्या रोकने का आग्रह किया। बड़े भाई ने उसकी बात को नहीं सुना। उसने मारे गए सभी सुअरों को इकट्ठा करके आग में भूनना शुरू कर दिया। लेकिन एक तरफ से भुन जाने के बाद जैसे ही वह दूसरी ओर भूनने के लिए उन्हें पलटता, पहली तरफ का हिस्सा पहले-जैसा हो जाता। वह बार-बार उन्हें भूनता और पलटता रहा। आखिर परेशान होकर उसने एक तरफ के हिस्से को ही खाकर अपनी भूख मिटा ली। इसके बाद, जैसे ही वह अपने घर के दरवाजे पर पहुँचा, देव उसके सामने प्रकट होकर बोला, “अगर मैं तुमको शार्क बना दूँ तो कैसा रहे?”

“मैं गहरे सागर में उतर जाऊँगा।” उसने जवाब दिया।

“तो तैयार हो जाओ।” देव ने क्रोधपूर्वक कहा।

बड़ा भाई शार्क बन जाने के लिए सिर झुकाकर नीचे बैठ गया। अचानक कहीं से एक साँप वहाँ आ पहुँचा और बड़े भाई के शरीर पर चारों तरफ लिपट गया। जैसे ही देव ने श्राप फूँका, साँप मर गया।

वास्तव में, बड़े भाई द्वारा मारे गए सुअरों की आत्मा ही देव के रूप में प्रकट हुई थी। बड़े भाई को मारकर वह सुअरों की हत्या का बदला लेना चाहती थी।





तोतारांग

कोफ़ी समय पहले की बात है।

कार निकोबार के परसा नामक गाँव में तोतारांग नाम का एक युवक रहता था। असलियत में, परसा एक पहाड़ का नाम था। उसकी तलहटी में बसे गाँव को भी लोग उसी नाम से पुकारने लगे थे।

तोतारांग खूबसूरत और ताकतवर नौजवान था। अपनी कमर में वह हर समय लकड़ी की एक तलवार लटकाए घूमता था। इधर-उधर मटरगस्ती करते हुए उसने लपाती गाँव में रहने वाली वामीरो नाम की सुन्दरी की चर्चा सुनी। ऐसे घुँघराले बाल, ऐसी गहरी नीली आँखें, मोती जैसे ऐसे सफेद दाँत किसी और के हैं ही नहीं—लोग कहते—उसके अच्छे आचरण और व्यवहार के कारण सभी उसको चाहते हैं।

इन सब चर्चाओं ने तोतारांग के मन में वामीरो को देखने की इच्छा जगा दी। अन्ततः एक दिन घूमता-घामता वह लपाती गाँव में वामीरो के घर के सामने जा पहुँचा।

वामीरो उस समय बाहर ही खड़ी थी। दोनों ने एक-दूसरे को देखा।

उस पहली ही मुलाकात में तोतारांग और वामीरो एक-दूसरे की ओर आकर्षित हो गए। उन्होंने एक-दूसरे से मिलना-जुलना शुरू कर दिया। कभी वे जंगल में मिलते तो कभी सागर-तट पर। वे परस्पर प्यार-भरी बातें करते और साथ-साथ जीने-मरने की कसमें खाते।

लेकिन जब लड़की के घर वालों को इस बारे में पता चला तो उन्होंने वामीरो की जमकर पिटाई की और उसे कभी भी तोतारांग से न मिलने की चेतावनी दी।

तोतारांग को इस बारे में कुछ पता न चला। वह रोजाना अपने मिलन-स्थल पर पहुँचता और घंटों वामीरो का इंतजार करके वापस लौट जाता। बहुत दिनों तक ऐसा चलता रहा।

एक दिन गाँव में एक तमाशा होने वाला था। गाँव के सभी लोग उसका मजा लेने को उत्सुक खड़े थे। वहाँ पर अचानक तोतारांग और वामीरो की मुलाकात हो गई। तोतारांग ने उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रखा। लेकिन उसने मना कर दिया और उससे हमेशा के लिए वहाँ से चले जाने की विनती की।

तोतारांग बहुत हताश हुआ। उसकी समझ में नहीं आया कि वामीरो मना क्यों कर रही है। क्रोध में, उसने कमर में बँधी अपनी तलवार निकाली और पहाड़ के एक हिस्से पर चोट की। पहाड़ का वह हिस्सा कटकर समुद्र में जा गिरा। तोतारांग पहाड़ी के उस टुकड़े पर बैठ गया और उसे खेता हुआ समुद्र में बढ़ गया। आगे एक स्थान पर जाकर वह टुकड़ा अटक गया। तब, तोतारांग ने उधर से और वामीरो ने इधर से एक दूसरे को पुकारना प्रारम्भ किया।

अब, न तो तोतारांग इस दुनिया में है और न ही वामीरो। लेकिन पहाड़ी का वह टुकड़ा अभी भी समुद्र में है।

लोग उसे 'लिटिल अण्डमान' कहते हैं।



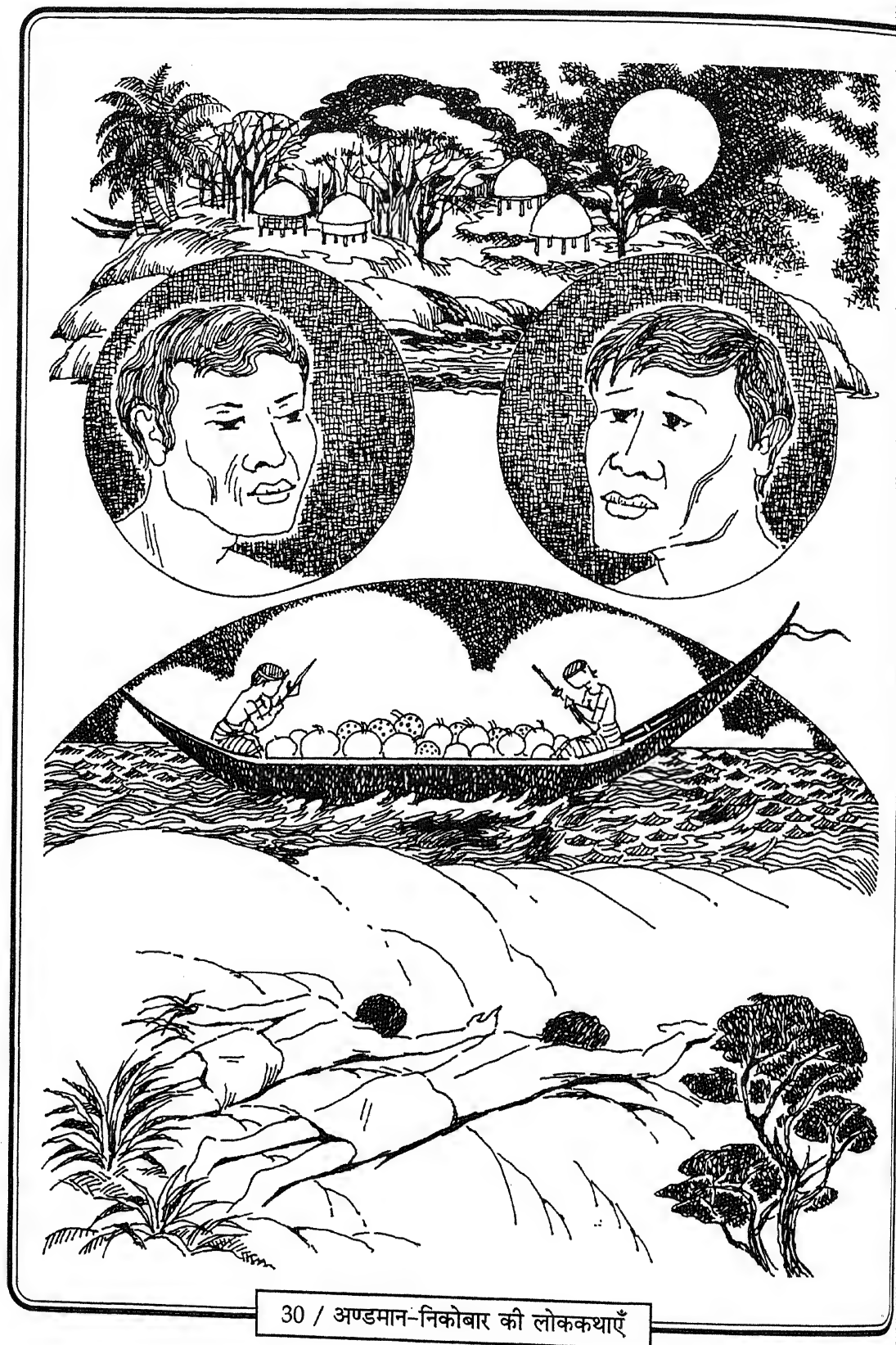
THEORY OF THE EARTH

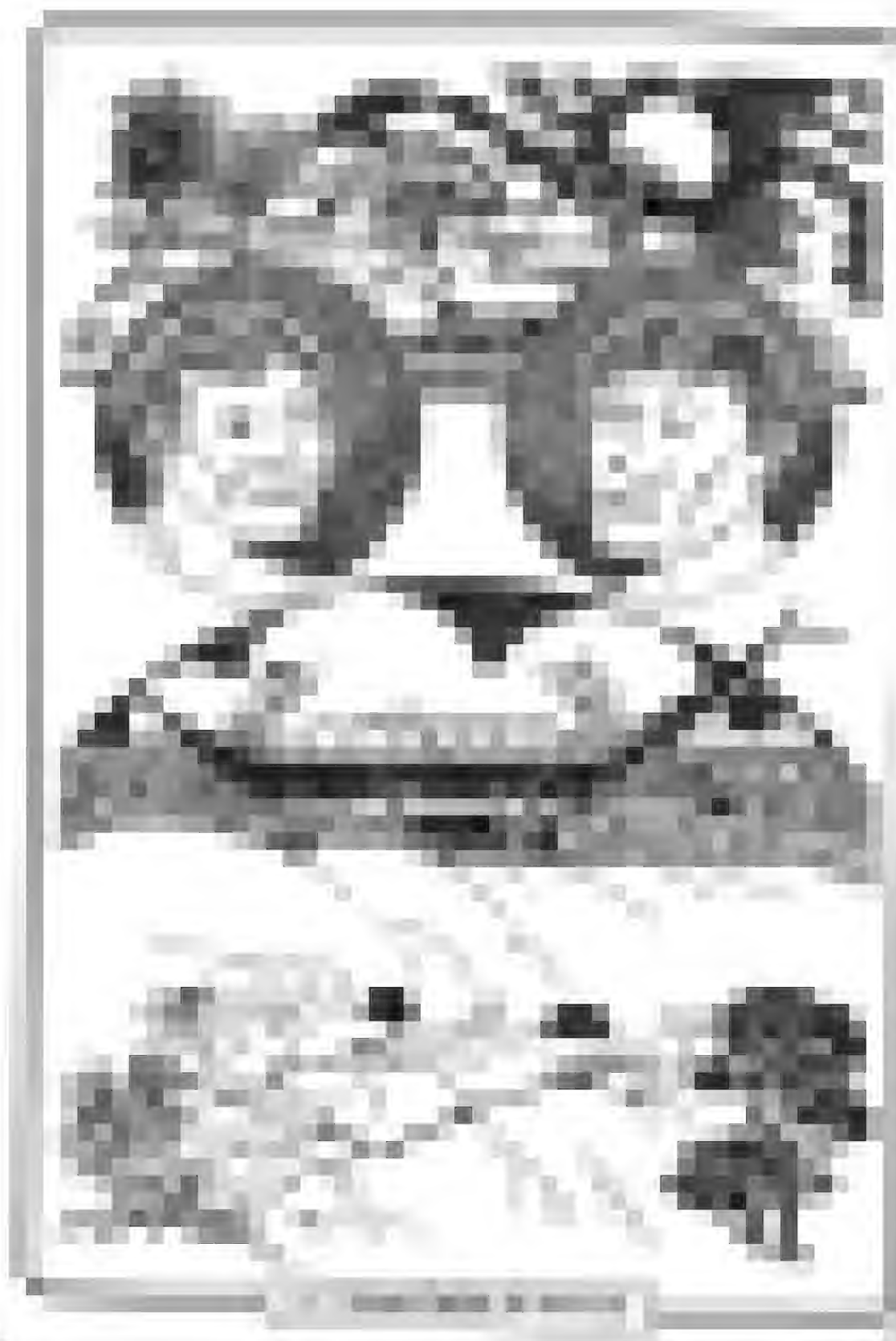
The theory of the earth is a branch of geology which deals with the origin and development of the earth and its various parts. It is a science which seeks to explain the processes which have shaped the earth and its features. The theory of the earth is based on the study of the earth's history and its various parts. It is a science which seeks to explain the processes which have shaped the earth and its features.

The theory of the earth is a branch of geology which deals with the origin and development of the earth and its various parts. It is a science which seeks to explain the processes which have shaped the earth and its features. The theory of the earth is based on the study of the earth's history and its various parts. It is a science which seeks to explain the processes which have shaped the earth and its features.

The theory of the earth is a branch of geology which deals with the origin and development of the earth and its various parts. It is a science which seeks to explain the processes which have shaped the earth and its features. The theory of the earth is based on the study of the earth's history and its various parts. It is a science which seeks to explain the processes which have shaped the earth and its features.

The theory of the earth is a branch of geology which deals with the origin and development of the earth and its various parts. It is a science which seeks to explain the processes which have shaped the earth and its features. The theory of the earth is based on the study of the earth's history and its various parts. It is a science which seeks to explain the processes which have shaped the earth and its features.





ओसरी उत्सव



बहुत समय पहले की बात है।

निकोबार में किमिउख और फरक्का नाम के दो गाँव थे। किमिउख गाँव का मुखिया एल्हट था और फरक्का गाँव का मुखिया होको। चावरा टापू उनसे कुछ ही दूरी पर था। चावरा के निवासियों के साथ दोनों गाँवों के निवासियों के मधुर संबंध थे। चावरा के लोग 'होरी' (निकोबारी डोंगी अर्थात् छोटी नाव) बनाते और दोनों गाँवों के लोगों को बेचते थे। बदले में वे उनसे चाकू, सुअर और कपड़ा आदि ले जाते थे।

एक बार चावरा वालों ने अपनी 'होरियाँ' किमिउख वालों को काफी मँहगे दामों में बेच दीं। इस पर दोनों गाँवों के लोग भड़क उठे और उन्होंने चावरा वालों से बदला लेने की ठानी। कुछ दिनों बाद उन्होंने 500 चाकू, 100 दाहे, 200 सुअर और कुछ कपड़ों के बदले में उनसे 12 होरियाँ हड़प लीं।

बेचे गए चाकू लकड़ी के बने थे। उन पर उन्होंने इतनी अच्छी तरह रंग किया था कि वे बिल्कुल लोहे के बने लगते थे। शुरू-शुरू में तो चावरा वाले बहुत खुश हुए कि उन्होंने बहुत सस्ते में चाकू खरीद लिए। परन्तु अपने गाँव में पहुँचकर जैसे ही उनको पता लगा कि उन्हें ठगा गया है, वे भी बदला लेने को भड़क उठे।

कुछ दिनों बाद चावरा गाँव की ओर से फलों से लदी हुई एक होरी फरक्का और किमिउख गाँवों को भेजी गई। उपहार पाकर दोनों गाँवों के लोग बहुत खुश हुए और उन्होंने एक बड़ी दावत का आयोजन किया। दस सुअर दावत के लिए काटे गए। एक बूढ़े और एक लड़की को छोड़कर, दोनों गाँवों के सभी लोगों ने पेट भरकर मांस और फल खाए।

वे सभी फल जहरीले थे। उन्हें खाकर वे सब-के-सब मर गए। किसी को पता ही नहीं चला कि वे कैसे मरे।

चावरा के लोग उन सबकी मौत की खबर पाकर खुशी से झूम उठे।

लेकिन वह बूढ़ा, जो बच गया था, चावरा वालों की चाल को भाँप गया। उसने चावरा के लोगों को उनके इस कुकृत्य के बारे में धिक्कारा और कहा कि उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था।

उसके धिक्कारने पर चावरा के हर आदमी को अपनी गलती का एहसास हुआ। उन्होंने तब होरी-उत्सव का आयोजन किया। उसमें उन्होंने प्रार्थना की कि मरे हुए सभी लोगों की आत्मा को शांति मिले।

निकोबार में आज भी यह शोक-उत्सव मनाया जाता है। इसे 'ओसरी उत्सव' कहते हैं।



MEMORANDUM

TO : [illegible]
FROM : [illegible]
SUBJECT : [illegible]

[illegible text block]

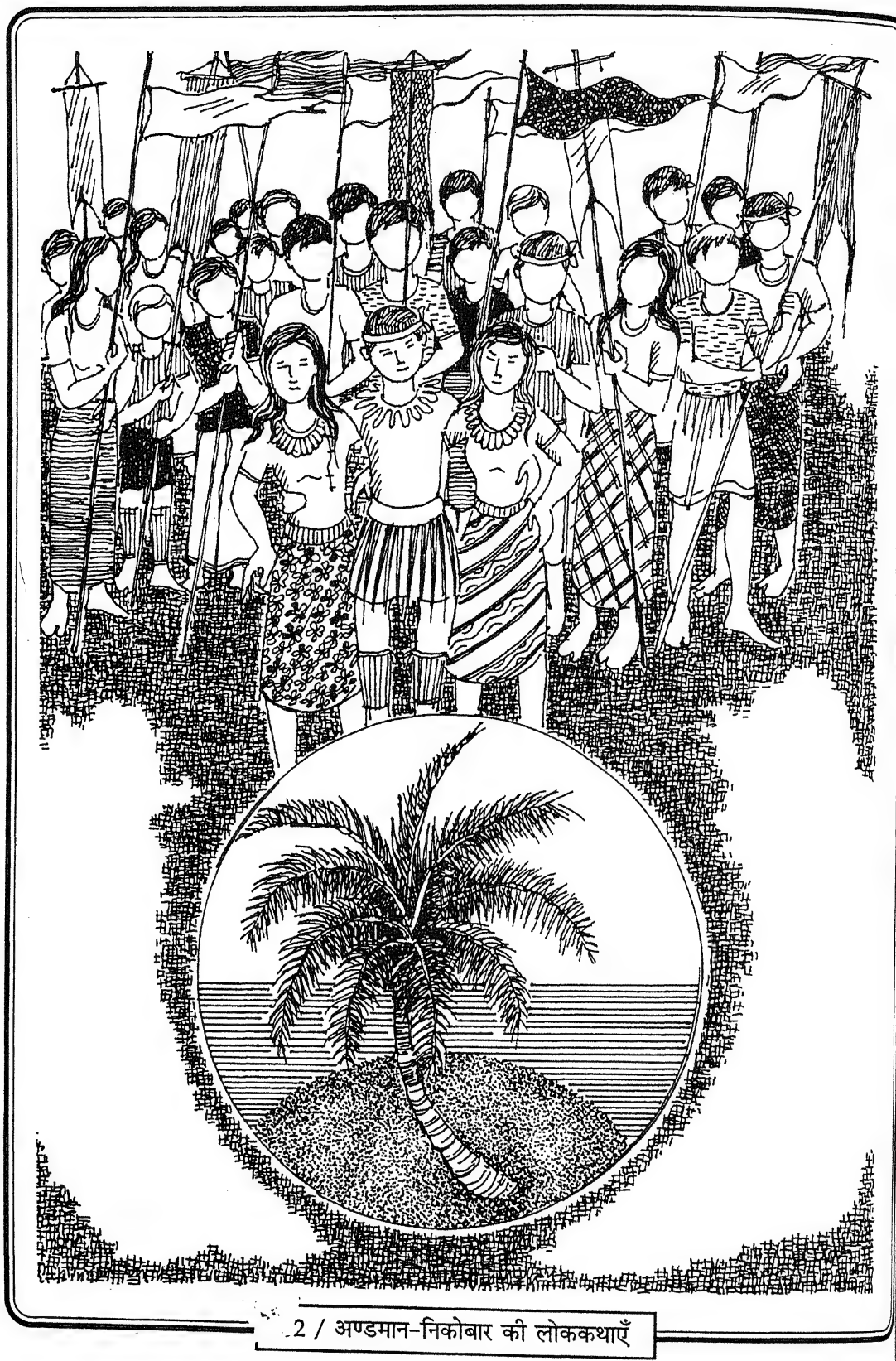
[illegible text block]

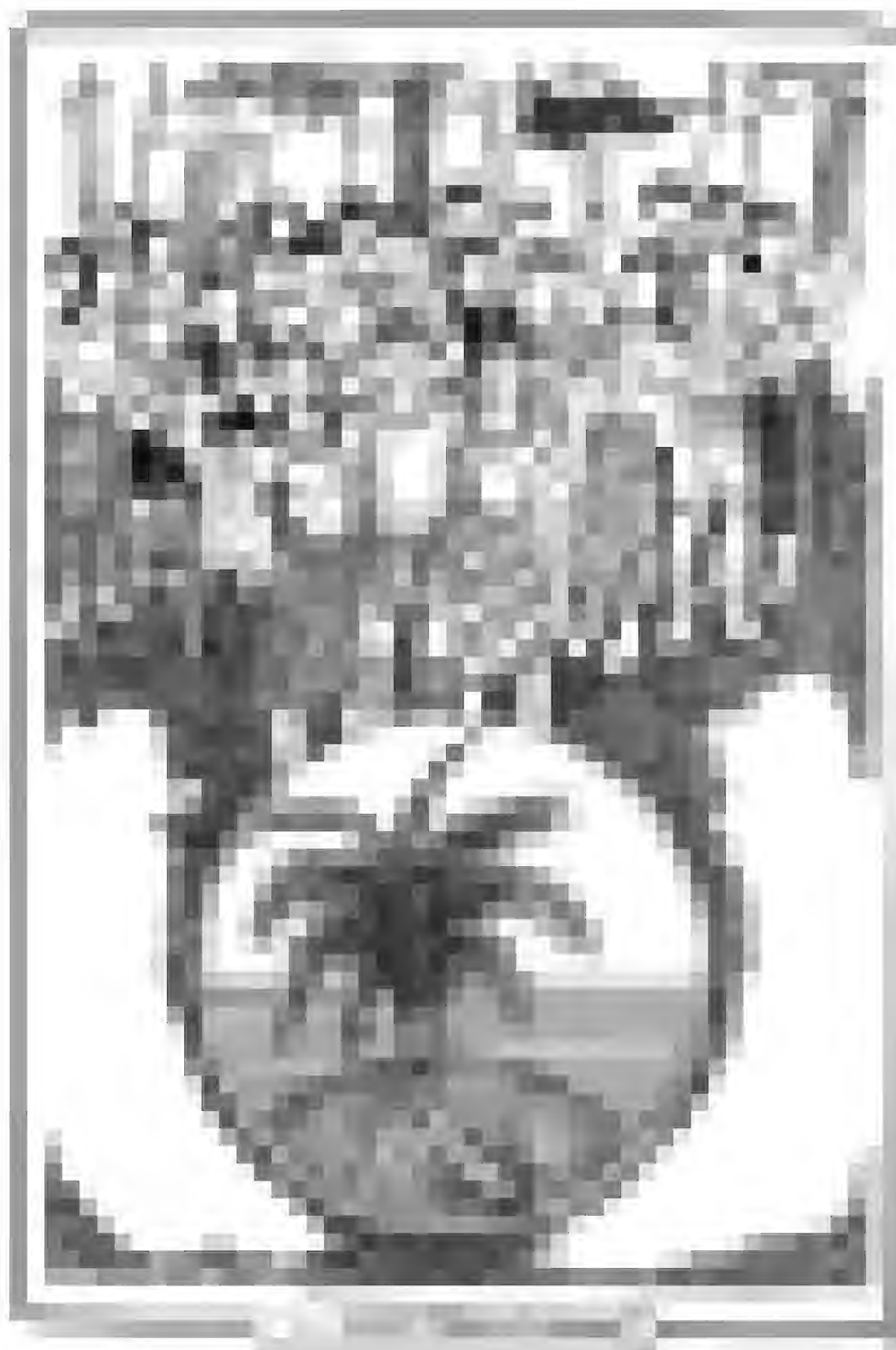
[illegible text block]

[illegible text block]

[illegible text block]







द ग्रेट फेस्टीवल

बहुत समय पहले की बात है।

उन दिनों समूचे निकोबार द्वीप समूह का मालिक तोकिलाया हुआ करता था। वह इतना शक्तिशाली था कि पूरे द्वीप समूह में एक पत्ता भी उसके आदेश के बिना नहीं हिल सकता था। एक बार उसके मन में विश्व-भ्रमण की इच्छा जागी। उसने गाँवों के मुखियाओं और बुजुर्गों के सामने अपनी यह इच्छा रखी। हर एक ने उसकी इच्छा का स्वागत किया और उसके जाने की तैयारियाँ शुरू हो गईं। रास्ते के लिए हर आदमी ने उसे अलग तरह का उपहार दिया।

तोकिलाया ने यात्रा शुरू की।

वर्षों बीत गए लेकिन द्वीपों का मालिक तोकिलाया वापस नहीं लौटा। गाँव वालों की बेचैनी बढ़ गई। उन्होंने मान लिया कि तोकिलाया मर चुका है और अब कभी भी वापस नहीं लौटेगा।

छः महीने तक उन्होंने उपवास रखा।

उसके बाद रिवाज के अनुसार उन्होंने नए कपड़े पहने और मातम मनाने लगे। उन्होंने खूब खाया-पीया और नाचना-गाना किया। अन्त में, उन्होंने नारियल का एक पौधा सागर के किनारे लगाया और शपथ ली कि मालिक के आने से पहले वे फल नहीं खाएँगे।

आखिर एक दिन, मालिक लौट आया। शुरू-शुरू में तो किसी को इस पर विश्वास ही नहीं हुआ। लेकिन बाद में उनको विश्वास हो गया कि वह उनका खोया हुआ मालिक तोकिलाया ही था। वे घंटों आपस में बातें करते रहे और बीते दिनों की कहानियाँ सुनते-सुनाते रहे।

सागर-किनारे लगाए गए पेड़ के नारियल खाकर लोगों ने अपनी शपथ को पूरा किया और एक बड़ा जश्न मनाया।

आज भी उस जश्न को 'द ग्रेट फेस्टीवल' के रूप में हर साल मनाया जाता है।

THE HISTORY OF THE

OF THE

OF THE

OF THE

OF THE

OF THE

OF THE

OF THE

OF THE

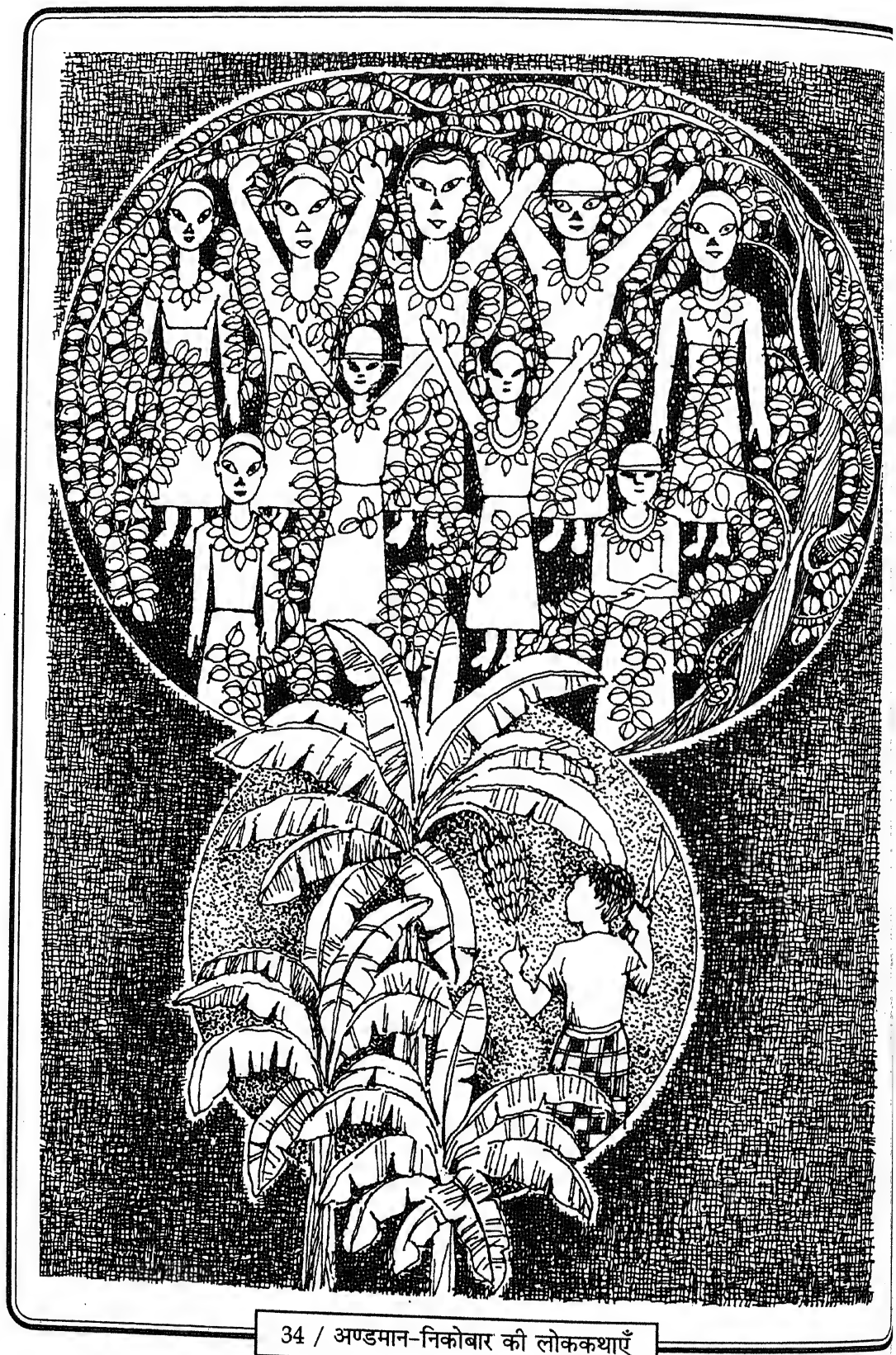
OF THE

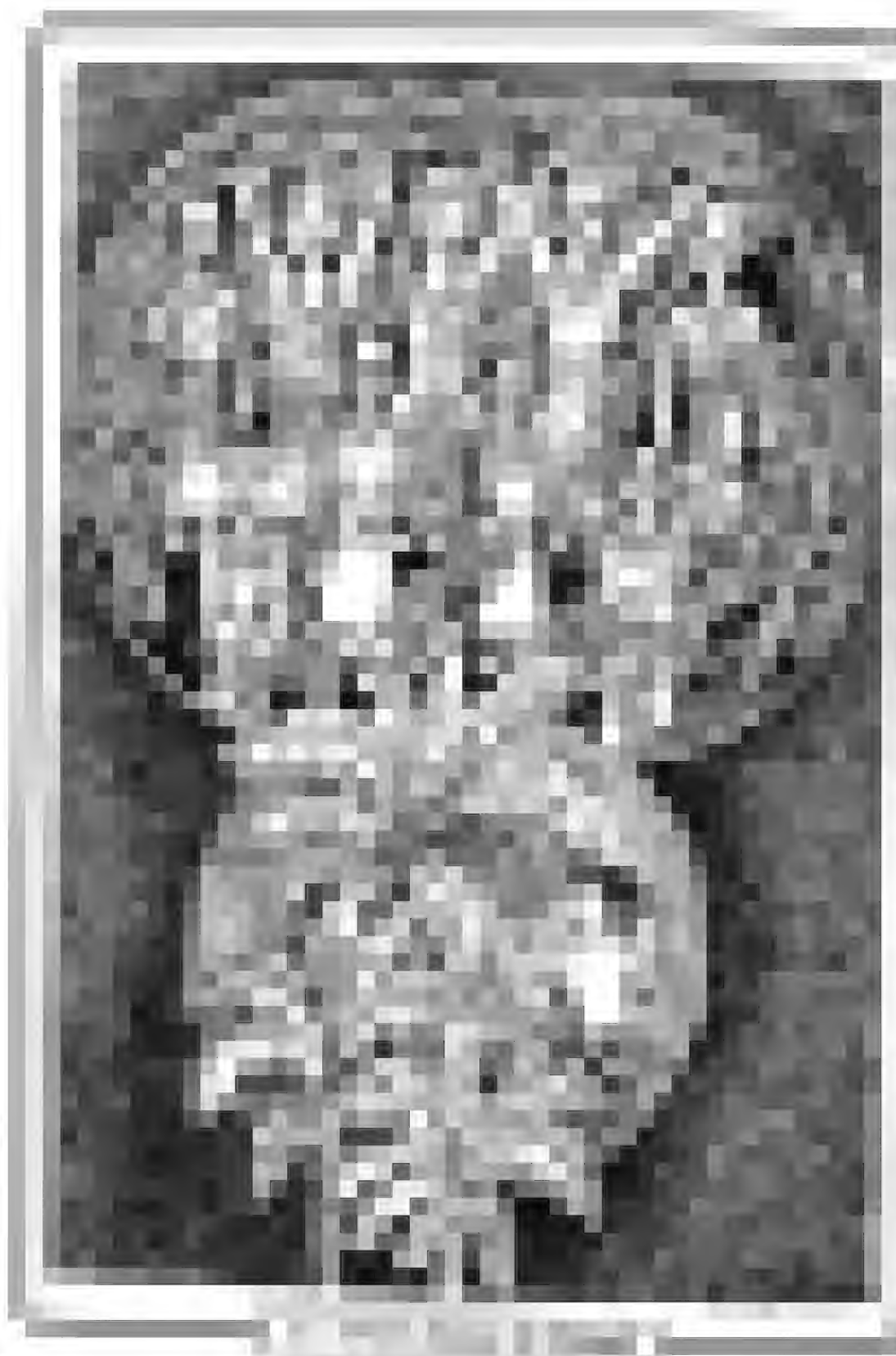
OF THE

OF THE

OF THE

OF THE





डायन और सड़क

एक हजार साल पहले निकोबार में छुट्टी के दिन काम करने की प्रथा नहीं थी।

दरअसल, सप्ताह में एक रात डायन जंगलों में इकट्ठी होती थीं, सारी रात नाचती थीं, गाती थीं, और भूत-प्रेतों व प्रेतात्माओं को बुलाती थीं। अगला दिन उनके आराम का दिन होता था। आम लोगों के बीच उस दिन को छुट्टी का दिन कहा जाता था, ताकि कोई भी आदमी उस दिन जंगल में जाकर उनके आराम में बाधा पहुँचाने का कारण न बन पाए। आराम में बाधा पहुँचाने वाले व्यक्ति को अपने जादू से वे कुछ भी बना सकती थीं।

लेकिन एक आदमी था जो छुट्टी के दिन भी काम करता था। किसी से भी डरे बिना वह अपने केले के बाग की देखभाल के लिए जंगल में जाता था।

एक छुट्टी वाले दिन, जब वह आदमी अपने केले के बाग में पहुँचा तो उसने एक पेड़ पर पके केलों का एक गुच्छा लटका देखा। वह खुशी से फूला न समाया। काटकर उसे घर ले जाने के लिए उसने अपनी जेब से चाकू निकाला और उस पेड़ की ओर बढ़ गया। लेकिन जैसे ही उसने उस गुच्छे को काटा, वह सड़क बन गया। किसी को भी इस दुर्घटना का पता न चला।

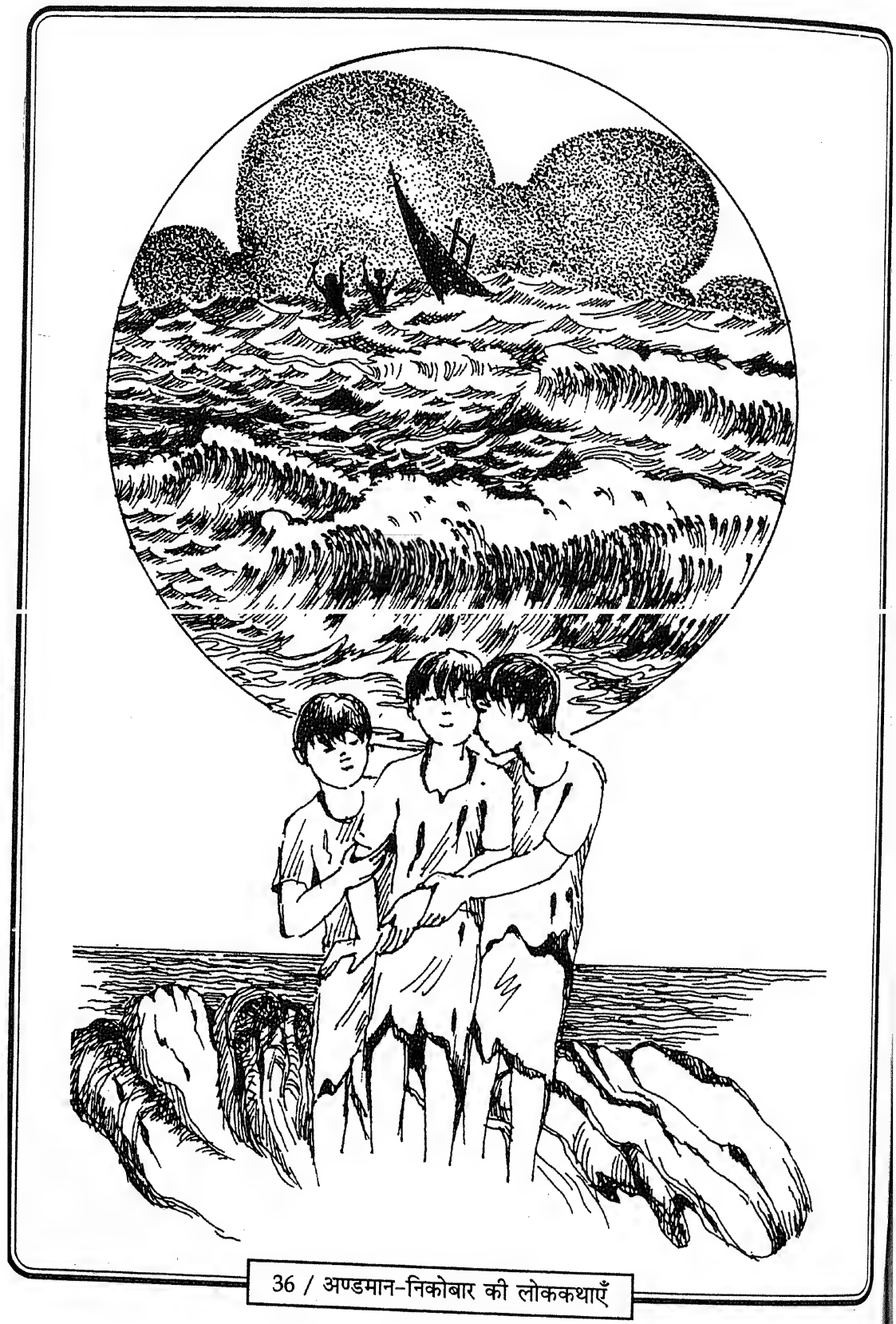
जब गाँव के लोगों ने कई दिनों तक उसे नहीं देखा तो वे उसकी खोज में निकल पड़े। उनको सिर्फ इतना पता था कि वह छुट्टी के दिन भी अपने केले के बाग में जाता था। वे वहाँ भी उसको ढूँढ़ने के लिए गए। लेकिन उसका वहाँ भी अता-पता न मिला। गाँव वालों ने मान लिया कि या तो वह मारा गया या समुद्र में डूब गया। उसकी मौत पर वे विलाप कर उठे।

वह आदमी, दिन भर तो सड़क बनकर नीचे पड़ा रहता लेकिन रात को पुनः आदमी बन जाता। आदमी बनकर वह नाचता, गाता और दूसरी डायनों की तरह प्रेतात्माओं को बुलाता, उनसे बातें करता। जब वह आदमी बनता तब उसकी त्वचा का रंग सुर्ख-लाल होता। जब वह सड़क बनता, तब भी उस पर लाल धारियाँ पड़ी होती थीं।

लोगों को आश्चर्य होता कि वह सड़क सिर्फ दिन में ही दिखाई देती थी, रात में गायब हो जाती थी। लेकिन किसी को भी सच्चाई का पता न था।

वह आदमी भी, हालाँकि दिनभर के लिए सड़क बन जाता था, परन्तु उसकी इच्छाएँ मरी नहीं थीं। वह जब भी कोई पका केला देखता, उसका जी ललचा जाता। रात में वह पके केले खाने को दौड़ता।

लोग हालाँकि आज तक लाल धारियों वाली उस सड़क का रहस्य नहीं जान पाए हैं। उन्हें नहीं मालूम कि यह वही आदमी है जिसने अपने बुजुर्गों की हिदायत और अपने रिवाजों को नहीं माना और डायनों के आराम करने के दिन भी काम करने के लिए घर से निकल गया था।





तूफान से लड़ाई

एक बार कार निकोबार के कुछ लोग अपनी डोंगियों में बैठकर नारियल इकट्ठे करने के लिए कमोर्ता की ओर चले। लेकिन उस टापू पर पहुँचने से पहले ही समुद्र में तूफान आ गया और वे घिर गए। हर आदमी डर गया। उन्होंने बचने की लाख कोशिशें कीं लेकिन उनमें से अधिकतर उस तूफान में मारे गए। बाकी के कुछ जैसे-तैसे तैरकर उस टापू तक पहुँचे और बच गए।

लेकिन अभी उनके दुर्भाग्य का अन्त नहीं हुआ था। वे एक भयंकर रोग का शिकार हो गए और तीन को छोड़कर शेष सभी मर गए।

उनके गाँव में, जब बहुत दिनों तक कोई लौटकर नहीं आया तो उन्होंने उन्हें मर चुके मान लिया और शोक मनाने लगे।

काफी दिनों बाद, बचे हुए तीनों लोग किसी तरह गाँव वापस आए और आप बीती गाँव वालों को सुनाई।

उनकी कष्टभरी दास्तान सुनकर गाँव वालों ने आसमान की ओर हाथ उठाकर ईश्वर को धन्यवाद दिया कि उसने उन तीन लोगों के जीवन की रक्षा की।

इसके बाद उन्होंने सुअर के मांस की दावत की और आग के चारों ओर बैठकर मृत-आत्माओं की शान्ति के लिए रातभर ईश्वर से प्रार्थना के गीत गाए।

REPORT

The first part of the report deals with the general situation of the company. It is a very important part of the report and should be written in a clear and concise manner. The second part of the report deals with the specific details of the company's operations. It is also a very important part of the report and should be written in a clear and concise manner.

The third part of the report deals with the company's financial performance. It is a very important part of the report and should be written in a clear and concise manner. The fourth part of the report deals with the company's future prospects. It is also a very important part of the report and should be written in a clear and concise manner.

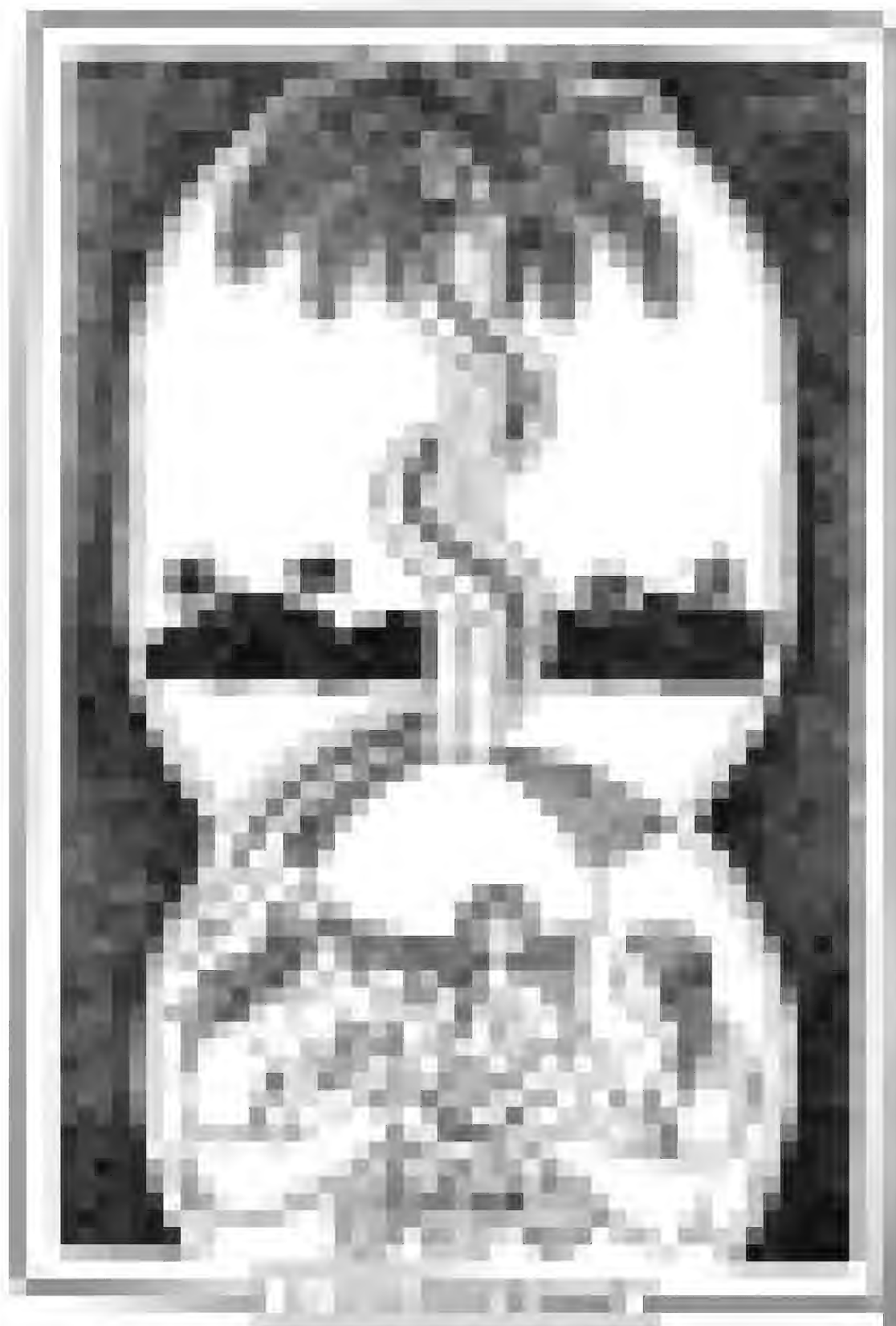
The fifth part of the report deals with the company's management. It is a very important part of the report and should be written in a clear and concise manner. The sixth part of the report deals with the company's employees. It is also a very important part of the report and should be written in a clear and concise manner.

The seventh part of the report deals with the company's customers. It is a very important part of the report and should be written in a clear and concise manner. The eighth part of the report deals with the company's suppliers. It is also a very important part of the report and should be written in a clear and concise manner.

The ninth part of the report deals with the company's competitors. It is a very important part of the report and should be written in a clear and concise manner. The tenth part of the report deals with the company's industry. It is also a very important part of the report and should be written in a clear and concise manner.

The eleventh part of the report deals with the company's market. It is a very important part of the report and should be written in a clear and concise manner. The twelfth part of the report deals with the company's products. It is also a very important part of the report and should be written in a clear and concise manner.





अजगर का जन्म

निकोबार में 'कुन-येन-से' त्यौहार के मौके पर ढेरों फलों की जरूरत पड़ती थी। गाँव वाले जंगल के अपने बागों से फल एकत्र करते थे।

वर्षों पहले की बात है। एक बार जंगल से फल एकत्र करके गाँव को वापसी के समय रास्ते में उन्हें प्यास लगी। तब, उनमें से एक आदमी नारियल के एक पेड़ पर चढ़ गया। उसने नीचे खड़े अपने साथियों को ओर ढेर सारे हरे नारियल गिरा दिए। डाब पीकर नीचे खड़े लोगों ने अपनी प्यास बुझाई और उससे घर चलने के लिए नीचे उतर आने का आग्रह किया। लेकिन वह आदमी बोला, "मुझे घर लौटने में दो या तीन दिन लग जाएँगे। मैं नारियल के फूल खाकर ताकतवर बनना चाहता हूँ। मैं आने वाले कुन-येन-से त्यौहार में अपनी ताकत का प्रदर्शन करना चाहता हूँ। तुम लोग जाओ।"

उसकी बात मानकर सभी लोग फलों के साथ गाँव को लौट आए।

दो दिनों तक वह आदमी नारियल के फूल खाता रहा। तीसरे दिन उसने महसूस किया कि उसके शरीर के निचले हिस्से में मांस इकट्ठा हो गया है और वह काफी भारी हो गया है। अभी वह कुछ सोच ही रहा था कि इतने में ही वह एक अजगर के रूप में बदल गया।

अजगर बन जाने पर वह नारियल के पेड़ से नीचे उतरा और जंगल को पार करके अपने घर जा पहुँचा। वहाँ उसने देखा कि उसकी पत्नी सहित कुछ औरतें मुरब्बा बनाने के लिए फल छील रही थीं। अजगर को घर में आया देखकर वे डर गईं। चीख-पुकार करती हुई वे सब-की-सब इधर-उधर भाग उठीं। उसकी पत्नी और साथ ही काम कर रही एक औरत इस भगदड़ में ठोकर खाकर अजगर के सामने गिर पड़ीं। वह उन्हें निगल गया।

अजगर के पेट में जाकर दोनों औरतों को ऐसा लगा जैसे कि वे एक बड़े कमरे में आ गई हैं। परन्तु बाहर निकलने का कोई भी रास्ता उन्हें न मिला। उनके हाथों में फल छीलने वाले चाकू थे। उन्होंने अजगर के पेट को उन चाकुओं से चीरकर बाहर निकलने की योजना बनाई। दोनों ने वैसा ही किया और अजगर के पेट से निकलकर बाकी औरतों के पास आ गईं।

सभी ने उन दोनों के साहस की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

निकोबार में माना जाता है कि उन दिनों अजगर सूरज और चाँद को भी निगल सकता था। आज भी, उसी की वजह से सूर्य ग्रहण और चन्द्र ग्रहण होते हैं।

The first of these is the fact that the United States has a large and growing population of people who are not citizens of the United States. This is a result of the large number of people who have immigrated to the United States in recent years.

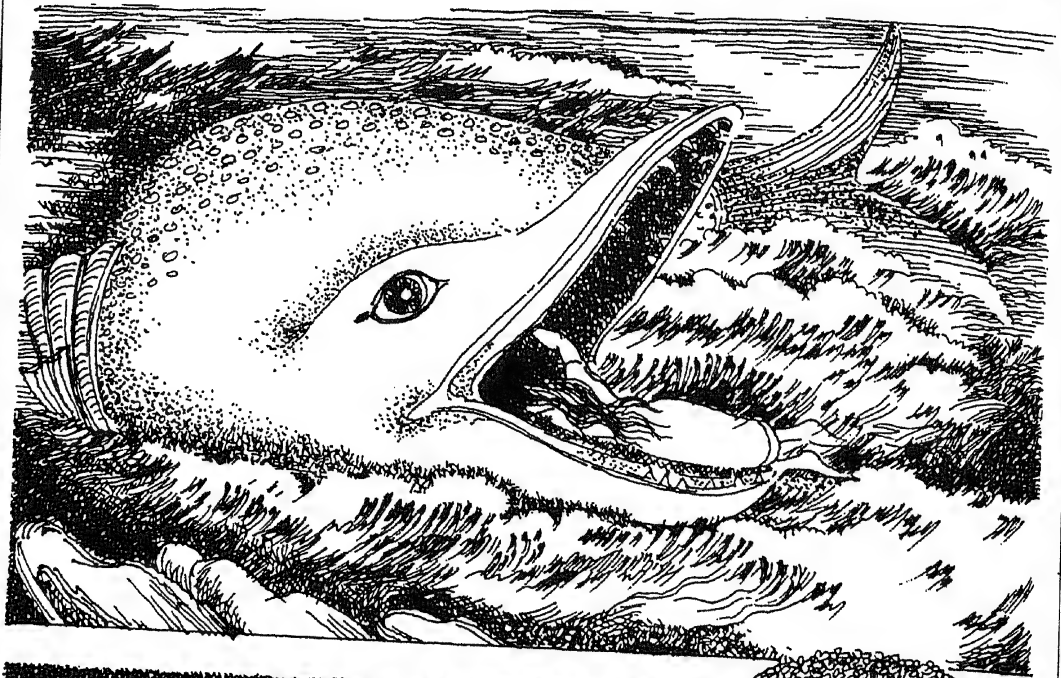
The second of these is the fact that the United States has a large and growing population of people who are not citizens of the United States. This is a result of the large number of people who have immigrated to the United States in recent years.

The third of these is the fact that the United States has a large and growing population of people who are not citizens of the United States. This is a result of the large number of people who have immigrated to the United States in recent years.

The fourth of these is the fact that the United States has a large and growing population of people who are not citizens of the United States. This is a result of the large number of people who have immigrated to the United States in recent years.

The fifth of these is the fact that the United States has a large and growing population of people who are not citizens of the United States. This is a result of the large number of people who have immigrated to the United States in recent years.

The sixth of these is the fact that the United States has a large and growing population of people who are not citizens of the United States. This is a result of the large number of people who have immigrated to the United States in recent years.





महिला चित्रकार

पुराने समय की बात है। दो युवतियों के बीच गहरी दोस्ती थी। जब भी समय मिलता, वे दोनों समुद्र के किनारे जातीं और पानी के थपेड़े खा रही चट्टानों पर बैठ जातीं। चट्टानों पर बैठकर वे तरह-तरह के चित्र बनातीं और शाम को अँधेरा होने पर ही घर लौटतीं।

एक दिन बनाए हुए कुछ चित्र उनके हाथ से खिसककर समुद्र में गिर गए।

“ओ...ऽ...ह...जल्दी पानी में कूद जा और चित्रों को निकालकर ला।” एक सहेली ने दूसरी से कहा।

दूसरी तपाकू से समुद्र में कूद पड़ी और चित्रों को ढूँढ़ती हुई पानी में दूर तक निकल गई। अचानक का-कू-को नाम की एक विशाल मछली उसके सामने आ गई और उसको निगल गई।

अपनी सहेली के लौटने का इन्तजार करती दूसरी युवती समुद्र किनारे इधर-उधर घूम रहे केकड़ों को निहारती रही। काफी देर तक इन्तजार के बाद सहेली को ढूँढ़ने के लिए वह भी पानी में कूद गई। बड़ी मछली का-कू-को ने उसे भी निगल लिया। दोनों सहेलियाँ अब उसके पेट में जा मिलीं। कुछ देर बाद दोनों को जोर की भूख लग आई।

मछली को भी लगा कि उसके पेट में गई दोनों युवतियाँ भूखी हैं।

“सुनो, मेरे दिल से एक टुकड़ा काटकर खा लो और अपनी भूख मिटा लो।” उसने उन दोनों को बताया।

दोनों ने वैसा ही किया।

उनके ऐसा करते ही उस मछली ने उनसे कहा, “आप दोनों मेरे भीतर रहकर मेरा ही दिल काटकर खा रही हैं, क्या यह अच्छी बात है?”

“नहीं, बिल्कुल नहीं।” दोनों ने कहा।

दूसरा दिन आया और पहले दिन वाला हादसा पुनः दोहराया गया। कई दिनों तक यह क्रम चलता रहा।

आखिर परेशान होकर एक दिन का-कू-को समुद्र के बीच खड़ी एक चट्टान के पास आई और दोनों सहेलियों को उस पर उगल कर भाग गई। दोनों सहेलियाँ पूरी तरह असहाय उस चट्टान पर पड़ी रहीं। उन्हें नहीं पता था कि वे किनारे तक कैसे पहुँचेंगी। तभी उन्हें एक शार्क अपनी ओर आती दिखाई दी। दोनों डर गईं।

“मेरी पीठ पर बैठो।” शार्क ने पास आकर उनसे कहा, “मैं तुम दोनों को किनारे पहुँचा दूँगी।”

मरता क्या न करता। कोई और चारा न देख वे दोनों शार्क की पीठ पर सवार हो गईं। कुछ ही समय में उसने उन्हें किनारे पर पहुँचा दिया। दोनों ने उसे धन्यवाद दिया।

अँधेरा हो चला था। दोनों सहेलियाँ घर की ओर चल पड़ीं।

REPORT

The first part of the report deals with the general situation of the company. It is a very important part of the report and should be written in a clear and concise manner. The second part of the report deals with the specific details of the company's operations. It is also a very important part of the report and should be written in a clear and concise manner.

The third part of the report deals with the company's financial performance. It is a very important part of the report and should be written in a clear and concise manner. The fourth part of the report deals with the company's future prospects. It is also a very important part of the report and should be written in a clear and concise manner.

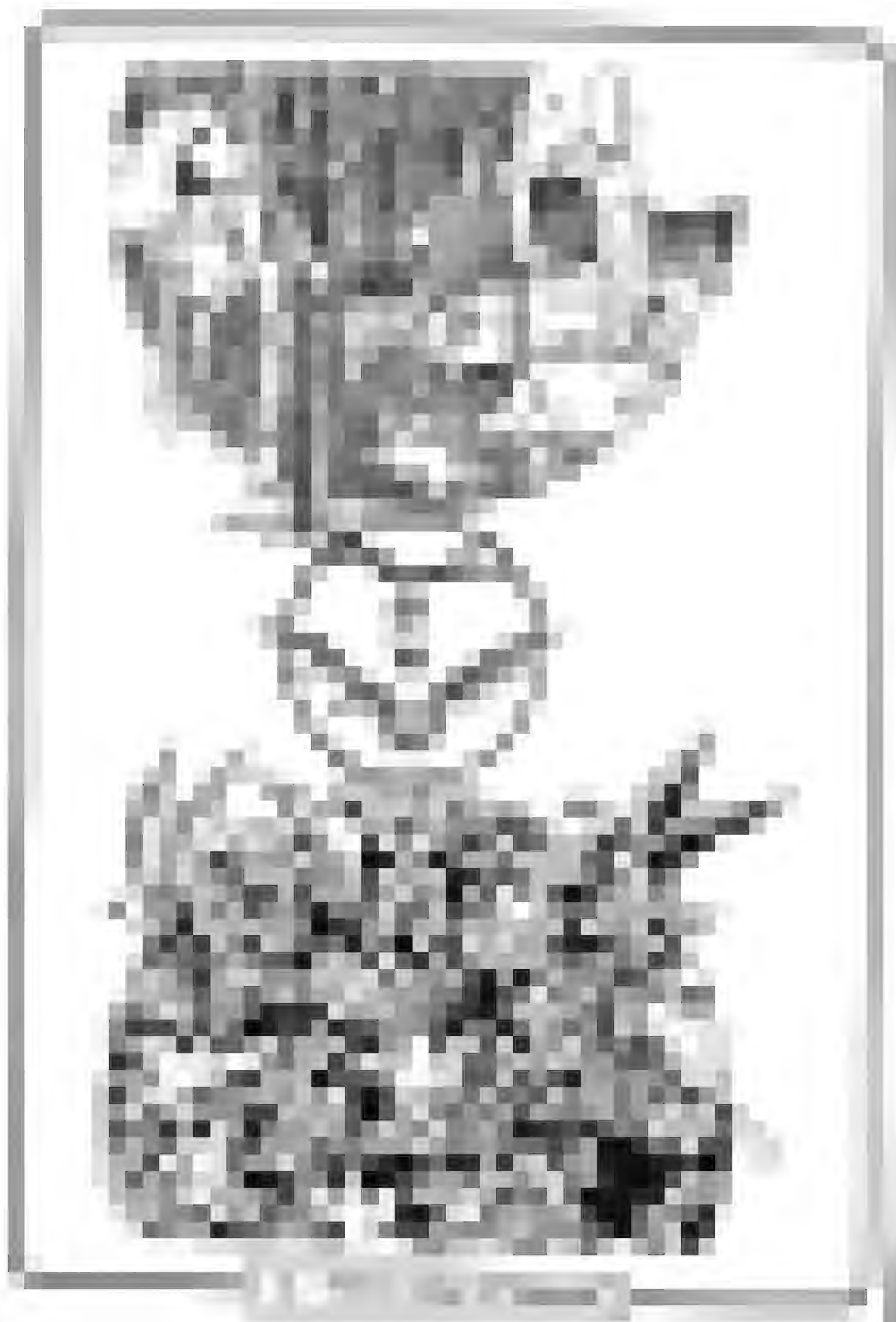
The fifth part of the report deals with the company's management. It is a very important part of the report and should be written in a clear and concise manner. The sixth part of the report deals with the company's employees. It is also a very important part of the report and should be written in a clear and concise manner.

The seventh part of the report deals with the company's customers. It is a very important part of the report and should be written in a clear and concise manner. The eighth part of the report deals with the company's suppliers. It is also a very important part of the report and should be written in a clear and concise manner.

The ninth part of the report deals with the company's competitors. It is a very important part of the report and should be written in a clear and concise manner. The tenth part of the report deals with the company's industry. It is also a very important part of the report and should be written in a clear and concise manner.

The eleventh part of the report deals with the company's market. It is a very important part of the report and should be written in a clear and concise manner. The twelfth part of the report deals with the company's products. It is also a very important part of the report and should be written in a clear and concise manner.





धूर्त चमगादड़

एक बार पशुओं और पक्षियों के बीच लड़ाई छिड़ गई। इस लड़ाई में कभी पशुओं की जीत होती तो कभी पक्षी जीत जाते। लेकिन लड़ाई थी कि रुकने का नाम ही नहीं लेती थी।

उस लड़ाई में पशुओं और पक्षियों के बीच सबसे अधिक धूर्त प्राणी चमगादड़ था। जब पक्षियों की जीत होती तो वह उड़कर उनकी ओर पहुँच जाता और कहता, “मैं भी पक्षी हूँ। देखो, ये मेरे पंख हैं। मैं उड़ भी सकता हूँ। हम सब भाई-भाई हैं।”

इस तरह वह पक्षियों के साथ रहना शुरू कर देता।

और जब पशु जीत जाते तो वह उनके खेमे में चला जाता। कहता, “देखो, मेरे पंख जरूर हैं लेकिन मैं पक्षी नहीं हूँ। उनसे तो मुझे बहुत घृणा है। भाई, मैं तो पशु ही हूँ, आप जैसा। ये देखो, मेरी नाक और कान एकदम आप जैसे हैं। मैं पक्षियों की तरह अंडे नहीं देता, आपकी तरह बच्चों को जन्म देता हूँ। मैं उनकी चोंच में चुगगा नहीं देता, आपकी तरह स्तनपान कराता हूँ। हम परस्पर भाई-भाई हैं।”

यह कहकर वह पशुओं के साथ रहना शुरू कर देता।

कुछ समय बाद पशुओं और पक्षियों के बीच लड़ाई का दौर समाप्त हो गया। दुनिया में किसी भी किस्म का पशु और किसी भी किस्म का पक्षी ऐसा नहीं था जिसने इस लड़ाई में भाग न लिया है। समय-समय पर चमगादड़ भी इधर या उधर शामिल होता आया था।

लेकिन लड़ाई का दौर समाप्त होने पर उसका चालाकी भरा सारा खेल समाप्त हो गया। दोनों पक्षों को उसकी धूर्तता का पता चल गया। अब, वह बेचारा न पशुओं के बीच बैठ सका और न पक्षियों के बीच। उन्होंने मिलकर उसको शाप दिया कि “हे चमगादड़! तू पक्षियों की तरह न घोंसले में रह पाएगा और न पशुओं की तरह घरों में। तू पेड़ की शाखों पर उलटा लटकेगा। साथ ही, रात की बजाय तू दिन में सोया करेगा और दिन की बजाय रात में जागा करेगा।”

अपनी धूर्तता के परिणामस्वरूप तभी से, चमगादड़ शाखों पर उलटा लटका रहता है, दिन में सोता है। और रात में जागता है।

THE PROBLEM

The first problem is to determine the nature of the data. It is a time series of monthly data, and the first step is to check for stationarity. The Augmented Dickey-Fuller (ADF) test is used to test the null hypothesis of a unit root. The results show that the series is non-stationary, and therefore, differencing is required.

The second problem is to determine the order of differencing. The ADF test is repeated on the first difference of the series. The results show that the first difference is stationary, and therefore, the series is integrated of order one (I(1)).

The third problem is to determine the cointegration rank.

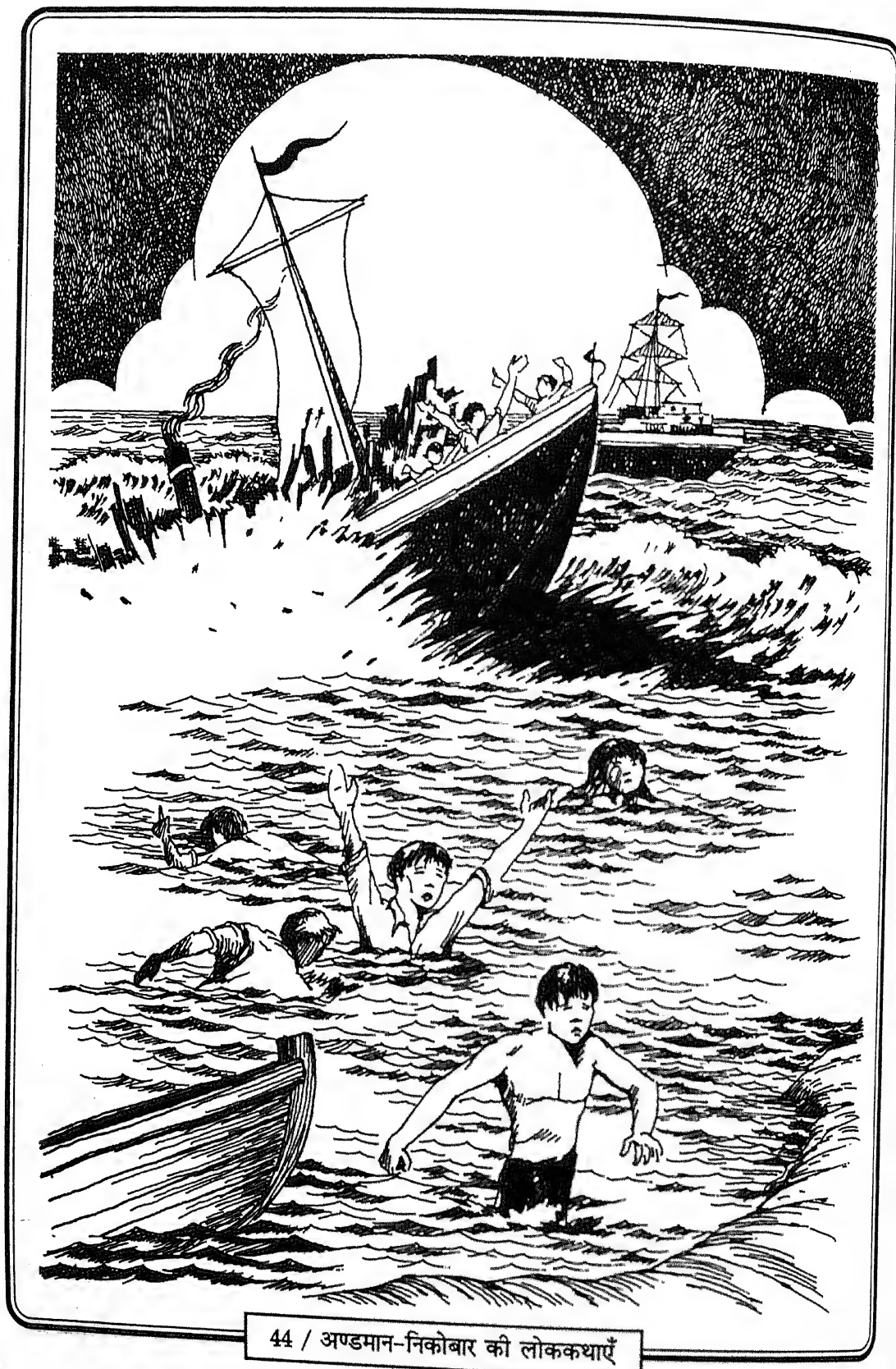
The Johansen likelihood test is used to determine the cointegration rank. The results show that there is one cointegrating vector, and therefore, the series are cointegrated. The cointegration rank is one, and the cointegration vector is estimated. The cointegration vector is used to estimate the long-run equilibrium relationship between the variables.

The fourth problem is to estimate the short-run dynamics.

The Vector Autoregression (VAR) model is used to estimate the short-run dynamics. The VAR model is estimated using the maximum likelihood method. The results show that the VAR model is well-specified, and the short-run dynamics are estimated. The short-run dynamics are used to estimate the short-run equilibrium relationship between the variables.

The fifth problem is to estimate the long-run equilibrium relationship. The cointegration vector is used to estimate the long-run equilibrium relationship between the variables. The long-run equilibrium relationship is estimated using the cointegration vector. The long-run equilibrium relationship is used to estimate the long-run equilibrium relationship between the variables.

The sixth problem is to estimate the short-run equilibrium relationship. The short-run equilibrium relationship is estimated using the short-run dynamics. The short-run equilibrium relationship is used to estimate the short-run equilibrium relationship between the variables.





निकोबारी जाति का जन्म

निकोबारी जनजाति का जन्म कैसे हुआ? इस बारे में तरह-तरह की कहानियाँ प्रचलित हैं। हर कहानी एक-दूसरे से भिन्न है। प्रमुख रूप से प्रचलित चार कहानियाँ यहाँ प्रस्तुत हैं—

॥ पहली कहानी ॥

कई सौ साल पहले निकोबार द्वीप घने जंगलों से घिरा था। इसके चारों ओर आज की ही तरह गहरा नीला समुद्र दूर-दूर तक फैला था। द्वीप पर कहीं भी आदमी का कोई नामोनिशान नहीं था। हर जगह सन्नाटा था। निकोबार द्वीपसमूह में चावरा नामक एक द्वीप था। निकोबारी जनजाति के लोगों का विश्वास है कि उनके पूर्वज इस चावरा द्वीप से ही यहाँ आए थे।

उनका मानना है कि—किसी समय में, बहुत वर्ष पहले, पूरब दिशा से सात आदमी अपनी सात पत्नियों के साथ चावरा में आए। वे सात लोग कौन थे और पूरब दिशा के किस देश से आए थे? कोई नहीं जानता। वे सात पुरुष अपनी पत्नियों के साथ चावरा में रहने लगे।

कुछ समय बाद, उन लोगों ने तय किया कि उन्हें आसपास के द्वीपों की ओर बढ़ना चाहिए। यह निश्चय करके उनमें से छः जोड़े छः अलग-अलग द्वीपों पर चले गए और वहीं बस गए। एक जोड़ा चावरा में ही रह गया। आने वाले समय में उनके बेटे, पोते, पड़पोते हुए। उनके इन वंशजों ने स्वयं को निकोबारी कहना शुरू किया।

वे लोग किसी भी द्वीप में क्यों न फैल गए हों, अपने मूल द्वीप चावरा के प्रति उनका प्यार सदा बना रहा, जहाँ से वे चले थे। जब भी उन्हें कोई मौका मिलता, वे अपनी डोंगी सागर में डालते और चावरा की ओर चल देते। इन यात्राओं के दौरान बहुत से मौके ऐसे भी आए जब वे रास्ता भटक गए और चावरा की बजाय मलाया, सिंगापुर या रंगून पहुँच गए। कभी-कभी यह भी हुआ कि भटककर वे जापान की ओर चले गए। कितने ही लोगों की डोंगियाँ समुद्री तूफान और झंझावात के कारण उलट गईं, और वे मर गए।

परन्तु, इन सारी कठिनाइयों के बावजूद भी चावरा द्वीप से उनके लगाव और प्यार में कोई कमी नहीं आई। वे अब भी चावरा को ही अपना मूल द्वीप मानते हैं।

॥ दूसरी कहानी ॥

निकोबार द्वीप में एक बार भारी वर्षा हुई। इतनी भारी कि पूरा द्वीप पानी में डूब गया। हर जगह पानी ही पानी नजर आता था, और कुछ नहीं। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, स्त्री-पुरुष-बच्चा, सिवा एक आदमी के कहीं कुछ नहीं बचा।

उस आदमी के अलावा पीपल का एक पेड़ भी बचा जो गहरे पानी के ऊपर अपनी चोटी हिला रहा था। उस पीपल की उस सबसे ऊँची शाखा पर बैठकर उस आदमी ने किसी तरह अपने प्राण बचाए थे।

कितने ही दिन और कितनी ही रातें गुजर गईं। वह धैर्यपूर्वक वहीं बैठा रहा। फिर, एक दिन बाढ़

का पानी धीरे-धीरे उतरना शुरू हुआ। जब नीचे जमीन नजर आने लगी तो आदमी उस पीपल के पेड़ से उतरकर नीचे आया। ऊँचे पेड़ों को छोड़कर बाकी सब कुछ नष्ट हो चुका था। आदमी नाम की कोई चीज धरती के उस हिस्से पर नहीं बची थी। पशु और पक्षी सब जहाँ-तहाँ मरे पड़े थे। आदमी भोजन की तलाश में यहाँ-वहाँ भटकता रहा।

एकाएक उसे किसी के जोर-जोर से पुकारने की आवाज सुनाई दी। ऐसे समय में, जबकि उसके सिवा एक भी मनुष्य जीवित न बचा हो, मानव-स्वर ने उसे अचरज में डाल दिया। उसने तेजी से साथ आवाज की दिशा में बढ़ना शुरू किया। उसने देखा कि दूर...दूर एक घनी झाड़ी में, एक औरत उलझी पड़ी है और पीड़ा से कराह रही है।

आदमी ने वहाँ पहुँचकर उसे झाड़ी से निकाला और दोनों साथ-साथ रहने लगे।

निकोबारी आदिवासी मानते हैं कि वे स्त्री-पुरुष के उसी जोड़े की सन्तान हैं।

॥ तीसरी कहानी ॥

पुराने समय में निकोबार द्वीप पूरी तरह घने जंगल से घिरा था। आदमी नाम की कोई चीज वहाँ नहीं थी। कहा जाता है कि पूरब दिशा के किसी देश की एक राजकुमारी अपने एक दास से प्यार करती थी। उस दास से राजकुमारी को गर्भ ठहर गया। यह खबर जब राजा के कानों में पड़ी तो वह विचलित हो उठा। उसके क्रोध का ठिकाना न रहा। उसने उस दास को मृत्युदंड सुनाकर मरवा दिया। गर्भवती होने के कारण राजकुमारी को उसने मृत्युदंड तो नहीं दिया परन्तु एक बड़े बक्से में उसे जीवित बन्द करके समुद्र में फिकवा दिया। वह बक्सा कई माह तक समुद्र की लहरों के थपेड़े खा-खाकर पानी में भटकता रहा। सौभाग्य से एक सुबह, अर्धमृत हो चुकी राजकुमारी वाला वह बड़ा बक्सा एक द्वीप के किनारे पर आ टिका। यह कोई और नहीं, कार-निकोबार द्वीप था। निश्चित समय पर राजकुमारी ने एक बेटे को जन्म दिया। बड़ा होकर वह एक सुन्दर और ताकतवर नौजवान बना। आज की निकोबारी जनजाति उस नौजवान की ही संतति है।

॥ चौथी कहानी ॥

पुराने समय में पानी का एक जहाज निकोबार द्वीप के पास से होकर गुजर रहा था। अचानक बड़ा भयानक समुद्री तूफान उठ आया। तूफानी लहरों ने उस जलयान को हल्के पत्ते की तरह किनारे की एक चट्टान पर दे मारा। जलयान चकनाचूर हो गया और डूब गया। उसमें सवार स्त्री-पुरुष पानी में इधर-उधर बिखर गए। उनमें से कुछ तैरकर और कुछ लहरों द्वारा फेंक दिए जाने के कारण किनारे पर आ लगे। द्वीप से बाहर जाने का कोई साधन उन बचे हुए लोगों के पास नहीं बचा था। उन्होंने अपने आप को भाग्य के हवाले कर दिया और पूरी तरह वहीं पर निवास करने लगे।

कहा जाता है कि वर्तमान निकोबारी आदिम जनजाति के पूर्वज यही लोग थे।

THE FIRST OF THESE IS THE FACT THAT THE
ECONOMY IS IN A STATE OF DEPRESSION
AND THAT THE GOVERNMENT IS NOT DOING
ENOUGH TO GET IT OUT OF THAT STATE.

THE SECOND IS THE FACT THAT THE
GOVERNMENT IS NOT DOING ENOUGH TO
PROTECT THE INTERESTS OF THE
PEOPLE.

THE THIRD IS THE FACT THAT THE
GOVERNMENT IS NOT DOING ENOUGH TO
PROTECT THE INTERESTS OF THE
PEOPLE.

THE FOURTH IS THE FACT THAT THE
GOVERNMENT IS NOT DOING ENOUGH TO
PROTECT THE INTERESTS OF THE
PEOPLE.

THE FIFTH IS THE FACT THAT THE
GOVERNMENT IS NOT DOING ENOUGH TO
PROTECT THE INTERESTS OF THE
PEOPLE.

अण्डमानी प्रजापति-पुलुगा



पुलुगा अपनी पत्नी के साथ पत्थरों के एक बड़े घर में आसमान में रहता है। उसकी पत्नी का रंग हरा है। उनके बहुत से बच्चे हैं। बेटियाँ आसमान के देवदूत हैं। बेटे पिता की हर आज्ञा का पालन करते हैं। सबको बनाने वाला पुलुगा सबके लिए समान है। वह अमर है। वह खुश रहे तो सब ठीक-ठाक रहता है। अगर वह नाराज हो जाए तो हर चीज को नष्ट कर डालता है।



THE MAN WHO WAS SAVED





THE UNIVERSITY OF CHICAGO

बनैला आदमी

सुदूर दक्षिणी द्वीप ग्रेट निकोबार के जंगल में रहने वाले 'शोम्पेन' आदिवासी प्राचीन मंगोलियाई जनजाति के लोग हैं।

सैकड़ों वर्ष पहले शोम्पेन-बस्ती में एक झोंपड़ी थी। उसके एक ओर घना जंगल था और दूसरी ओर दूर-दूर तक फैला नीला, गहरा सागर। एक शाम, भय से काँपता सात-आठ साल का एक नंग-धड़ंग लड़का अपनी झोंपड़ी से बाहर निकला। आकाश पर चमकते तारों ने रात के गहराने का आभास दे डाला था। लड़के ने उत्सुक नजरों से चारों ओर देखा। दरअसल, वह समुद्र से मछलियाँ पकड़ने को गए अपने माता-पिता की प्रतीक्षा कर रहा था। उसे उनकी चिंता हो रही थी।

अचानक उसकी नजरें सामने जंगल की ओर उठ गईं। उसने दो भयंकर आँखों को अपनी ओर घूरता पाया। उसने तुरन्त अपनी निगाहें उधर से हटा लीं और समुद्र की ओर देखने लगा। लेकिन माता-पिता का उधर कुछ अता-पता न था।

वह दोबारा जंगल की ओर देखना नहीं चाहता था। लेकिन उसकी निगाहें पुनः उधर चली गईं। उसने कल्पना की कि वे उसका पीछा कर रहे किसी जंगली जानवर की आँखें थीं! उसके लम्बे बाल कंधों पर झूल रहे थे। बड़ा-सा पेट था, और मुँह में दो नुकीले दाँत थे।

लड़का बुरी तरह डर गया था। लेकिन हिम्मत करके उसने डर पर काबू पाया।

तभी उसकी नजर समुद्र की ओर गई। उसे एक नाव किनारे की ओर आती दिखाई दी। उसने सोचा कि उसके माता-पिता वापस लौट रहे हैं। वह महसूस कर रहा था कि डरावनी आँखें अभी भी उसे घूर रही हैं। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे? लेकिन जैसे ही उसने देखा कि नाव से उसके माता-पिता ही उतर रहे हैं, वह तेजी से किनारे की ओर दौड़ गया।

वह बेचारा जिंदगी भर नहीं जान पाया कि उस शाम उसकी ओर घूरने वाली वे डरावनी आँखें किस जानवर की थीं और वह क्यों उसका पीछा कर रहा था।

Summary Report

The purpose of this report is to provide a summary of the findings of the research conducted on the effects of the new drug on the treatment of the disease.

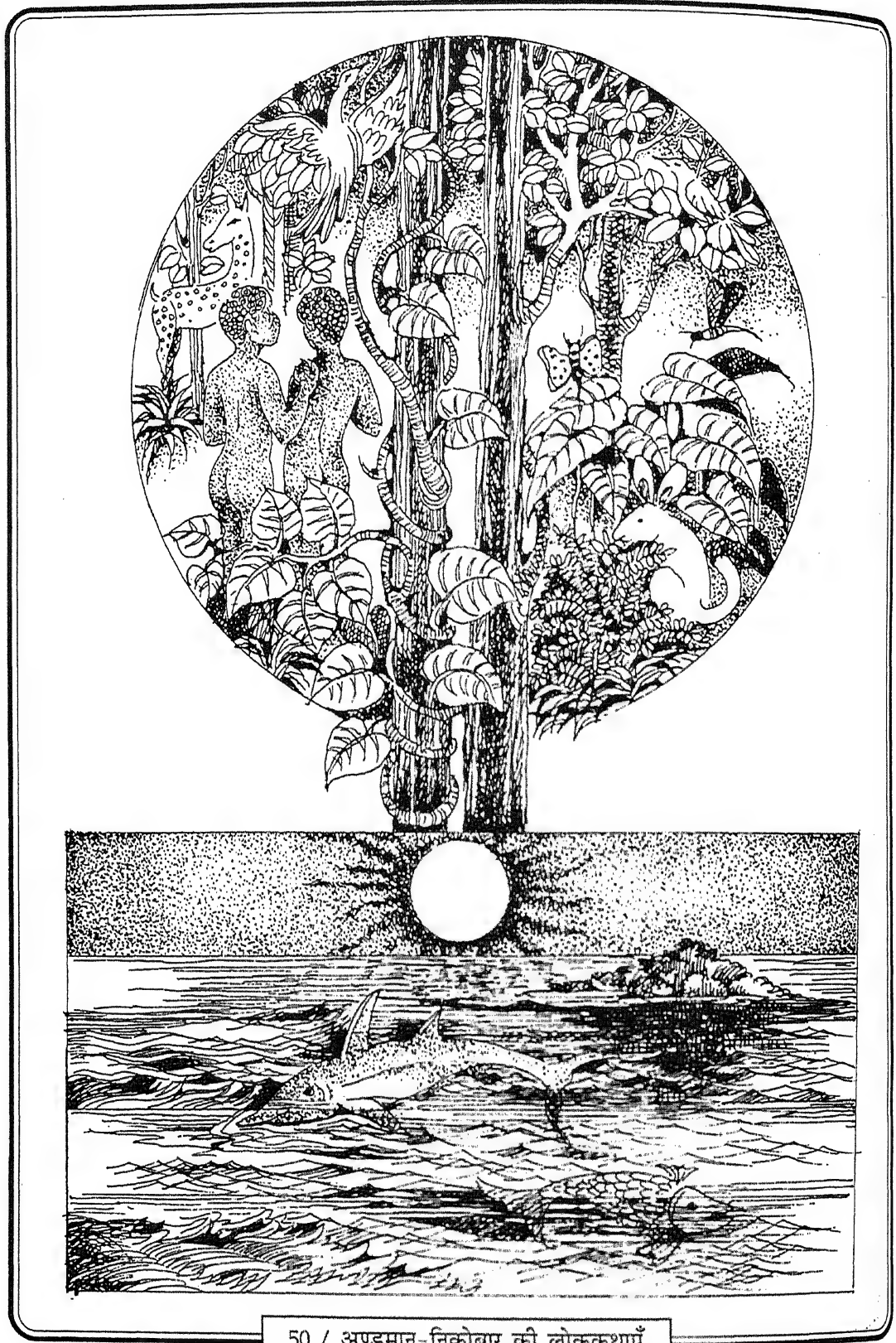
The study was conducted over a period of 12 weeks, during which time the new drug was administered to a group of patients. The results of the study show that the new drug was effective in treating the disease, with a significant reduction in the number of symptoms experienced by the patients. The study also found that the new drug was well-tolerated by the patients, with no serious side effects reported.

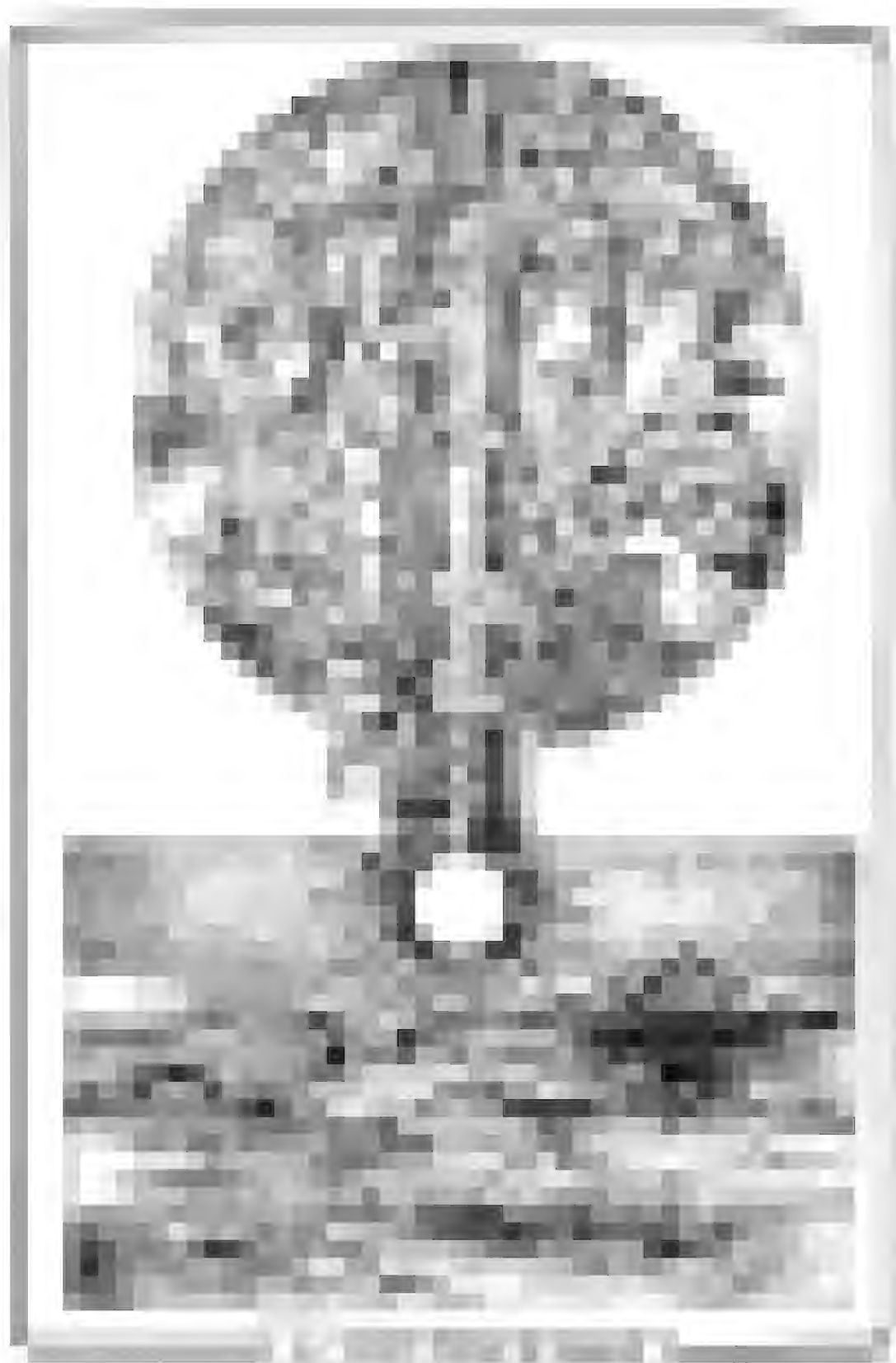
The results of the study are consistent with the findings of previous research, which has shown that the new drug is effective in treating the disease. The study also provides evidence that the new drug is safe for use in patients with the disease.

The study was conducted in a controlled environment, and the results are therefore likely to be reliable. The study also provides evidence that the new drug is effective in treating the disease, and that it is safe for use in patients with the disease.

The study was conducted in a controlled environment, and the results are therefore likely to be reliable. The study also provides evidence that the new drug is effective in treating the disease, and that it is safe for use in patients with the disease.

The study was conducted in a controlled environment, and the results are therefore likely to be reliable. The study also provides evidence that the new drug is effective in treating the disease, and that it is safe for use in patients with the disease.





पहला पुरुष-टोमो

सृष्टि की रचना के दौरान आदिकाल में सबसे पहले यह धरती बनी, फिर पेड़-पौधे और फिर पशु-पक्षी। पुलुगा (ईश्वर) ने उसके बाद एक पुरुष की रचना की। उसे नाम दिया—टोमो। उसका रंग काला था। उसका शरीर मजबूत और ऊँचा था। उसमें मस्तिष्क भी था और स्वाभिमान भी। पुलुगा ने जंगल में ले-जाकर उसे फल वाले तमाम वृक्ष दिखाए और कहा, “भूख लगने पर तुम जिस फल को चाहो खा सकते हो।”

इसके बाद पुलुगा ने टोमो को एक विशेष बाग की ओर संकेत करके बताया, “परन्तु तुम कभी भी उस बाग में मत जाना। चले भी जाओ तो उस बाग के किसी भी फल को मत खाना। वह तोताथेमी का बाग है।” पुलुगा ने टोमो को चोम और बेल के दो टुकड़ों को परस्पर रगड़कर आग जलाना सिखाया। पुलुगा ने ही टोमो को चाना-बी-भी (सूर्य की माता, अदिति) की स्तुति करना सिखाया। उसने कहा, “जब तक आग चलती रहती है चाना-बी-भी वहाँ उपस्थित रहती है। परन्तु उसके बुझते ही वह वापस अपने लोक को चली जाती है।” इसके बाद पुलुगा ने टोमो को सुअर का मांस पकाना सिखाया। पुलुगा ने अपने दो विश्वसनीय गणों—ला-ची और पुंगा-अउ-भोला—को भी टोमो की मदद के लिए धरती पर रखा।

धरती पर पहली स्त्री के बारे में अण्डमानी लोगों के बीच अनेक लोककथाएँ प्रचलित हैं।

कहा जाता है कि धरती पर रहना सिखाने के दौरान पुलुगा ने महसूस किया कि टोमो को एक साथी की भी आवश्यकता है। पुलुगा ने तब चान-आ-ए-लबादी नाम की स्त्री की रचना की।

कुछ का कहना है कि चान-आ-ए-लबादी सागर में तैर रही थी। टोमो उसकी ओर बुरी तरह आकर्षित हो गया और उसने उससे अपने साथ रहने की प्रार्थना की। वह बिड़ द्वीप पर आ गई। टोमो के दो पुत्र और दो पुत्रियाँ हुईं। बेटों के नाम बिरदा और बोरोला थे तथा बेटियों के नाम रिओला और रोमिला।

समय बीतता गया। द्वीप पर सुअरों की संख्या इतनी अधिक हो गई कि वे टोमो की पत्नी के लिए परेशानी पैदा करने लगे। वह उनसे इतनी अधिक नाराज हो गई कि उसने सुआ मारकर सुअरों के नाक और कान छेद डाले। कहते हैं कि सूँघने और सुनने की शक्ति सुअरों को तभी से मिली। पुलुगा ने तब धरती पर जंगल उगा दिया और सुअरों से कहा, “जान बचाकर वहाँ भाग जाओ।” और तभी से आदमी के लिए सुअर का शिकार करना बहुत कठिन हो गया। आदमी को देखते ही वे घने जंगल में दौड़ लगा जाते और छिप जाते।

तब पुलुगा ने मनुष्य को तीर, कमान और तुरही बनाना सिखाया।

उसने उसे मछली पकड़ने के लिए डोंगी बनाना भी सिखाया और मछली को पकाना भी।

पुलुगा ने चान-आ-ए-लबादी को भी बाँस, पत्ती और झाड़ियों की लकड़ियों से चटाइयाँ व टोकरियाँ बुनना सिखाया।

पुलुगा ने मनुष्य को सूर्यास्त के बाद काम न करने की आज्ञा दी क्योंकि इससे उसके सहयोगी बुतू को सिरदर्द होता है। उसने मनुष्यों को भाषा सिखाई ताकि वे बोलकर परस्पर अपने उद्गार प्रकट कर सकें।

जैसे-जैसे समय बीता—स्त्री-पुरुष के जोड़े सारी धरती पर फैल गए।

100

1. The first step is to identify the problem or question that needs to be answered. This involves understanding the context and the specific requirements of the task.

2000 年 12 月 31 日 止，本公司 2000 年度实现的净利润，按 10% 的比例提取法定盈余公积，按 5% 的比例提取法定公益金，按 5% 的比例提取任意盈余公积，按 10% 的比例提取任意公益金，按 10% 的比例提取任意盈余公积，按 10% 的比例提取任意公益金。

10/2011

1998-1999 2000-2001 2002-2003 2004-2005 2006-2007 2008-2009 2010-2011 2012-2013 2014-2015 2016-2017 2018-2019 2020-2021 2022-2023 2024-2025 2026-2027 2028-2029 2030-2031 2032-2033 2034-2035 2036-2037 2038-2039 2040-2041 2042-2043 2044-2045 2046-2047 2048-2049 2050-2051 2052-2053 2054-2055 2056-2057 2058-2059 2060-2061 2062-2063 2064-2065 2066-2067 2068-2069 2070-2071 2072-2073 2074-2075 2076-2077 2078-2079 2080-2081 2082-2083 2084-2085 2086-2087 2088-2089 2090-2091 2092-2093 2094-2095 2096-2097 2098-2099 2100-2101 2102-2103 2104-2105 2106-2107 2108-2109 2110-2111 2112-2113 2114-2115 2116-2117 2118-2119 2120-2121 2122-2123 2124-2125 2126-2127 2128-2129 2130-2131 2132-2133 2134-2135 2136-2137 2138-2139 2140-2141 2142-2143 2144-2145 2146-2147 2148-2149 2150-2151 2152-2153 2154-2155 2156-2157 2158-2159 2160-2161 2162-2163 2164-2165 2166-2167 2168-2169 2170-2171 2172-2173 2174-2175 2176-2177 2178-2179 2180-2181 2182-2183 2184-2185 2186-2187 2188-2189 2190-2191 2192-2193 2194-2195 2196-2197 2198-2199 2200-2201 2202-2203 2204-2205 2206-2207 2208-2209 2210-2211 2212-2213 2214-2215 2216-2217 2218-2219 2220-2221 2222-2223 2224-2225 2226-2227 2228-2229 2230-2231 2232-2233 2234-2235 2236-2237 2238-2239 2240-2241 2242-2243 2244-2245 2246-2247 2248-2249 2250-2251 2252-2253 2254-2255 2256-2257 2258-2259 2260-2261 2262-2263 2264-2265 2266-2267 2268-2269 2270-2271 2272-2273 2274-2275 2276-2277 2278-2279 2280-2281 2282-2283 2284-2285 2286-2287 2288-2289 2290-2291 2292-2293 2294-2295 2296-2297 2298-2299 2300-2301 2302-2303 2304-2305 2306-2307 2308-2309 2310-2311 2312-2313 2314-2315 2316-2317 2318-2319 2320-2321 2322-2323 2324-2325 2326-2327 2328-2329 2330-2331 2332-2333 2334-2335 2336-2337 2338-2339 2340-2341 2342-2343 2344-2345 2346-2347 2348-2349 2350-2351 2352-2353 2354-2355 2356-2357 2358-2359 2360-2361 2362-2363 2364-2365 2366-2367 2368-2369 2370-2371 2372-2373 2374-2375 2376-2377 2378-2379 2380-2381 2382-2383 2384-2385 2386-2387 2388-2389 2390-2391 2392-2393 2394-2395 2396-2397 2398-2399 2400-2401 2402-2403 2404-2405 2406-2407 2408-2409 2410-2411 2412-2413 2414-2415 2416-2417 2418-2419 2420-2421 2422-2423 2424-2425 2426-2427 2428-2429 2430-2431 2432-2433 2434-2435 2436-2437 2438-2439 2440-2441 2442-2443 2444-2445 2446-2447 2448-2449 2450-2451 2452-2453 2454-2455 2456-2457 2458-2459 2460-2461 2462-2463 2464-2465 2466-2467 2468-2469 2470-2471 2472-2473 2474-2475 2476-2477 2478-2479 2480-2481 2482-2483 2484-2485 2486-2487 2488-2489 2490-2491 2492-2493 2494-2495 2496-2497 2498-2499 2500-2501 2502-2503 2504-2505 2506-2507 2508-2509 2510-2511 2512-2513 2514-2515 2516-2517 2518-2519 2520-2521 2522-2523 2524-2525 2526-2527 2528-2529 2530-2531 2532-2533 2534-2535 2536-2537 2538-2539 2540-2541 2542-2543 2544-2545 2546-2547 2548-2549 2550-2551 2552-2553 2554-2555 2556-2557 2558-2559 2560-2561 2562-2563 2564-2565 2566-2567 2568-2569 2570-2571 2572-2573 2574-2575 2576-2577 2578-2579 2580-2581 2582-2583 2584-2585 2586-2587 2588-2589 2590-2591 2592-2593 2594-2595 2596-2597 2598-2599 2600-2601 2602-2603 2604-2605 2606-2607 2608-2609 2610-2611 2612-2613 2614-2615 2616-2617 2618-2619 2620-2621 2622-2623 2624-2625 2626-2627 2628-2629 2630-2631 2632-2633 2634-2635 2636-2637 2638-2639 2640-2641 2642-2643 2644-2645 2646-2647 2648-2649 2650-2651 2652-2653 2654-2655 2656-2657 2658-2659 2660-2661 2662-2663 2664-2665 2666-2667 2668-2669 2670-2671 2672-2673 2674-2675 2676-2677 2678-2679 2680-2681 2682-2683 2684-2685 2686-2687 2688-2689 2690-2691 2692-2693 2694-2695 2696-2697 2698-2699 2700-2701 2702-2703 2704-2705 2706-2707 2708-2709 2710-2711 2712-2713 2714-2715 2716-2717 2718-2719 2720-2721 2722-2723 2724-2725 2726-2727 2728-2729 2730-2731 2732-2733 2734-2735 2736-2737 2738-2739 2740-2741 2742-2743 2744-2745 2746-2747 2748-2749 2750-2751 2752-2753 2754-2755 2756-2757 2758-2759 2760-2761 2762-2763 2764-2765 2766-2767 2768-2769 2770-2771 2772-2773 2774-2775 2776-2777 2778-2779 2780-2781 2782-2783 2784-2785 2786-2787 2788-2789 2790-2791 2792-2793 2794-2795 2796-2797 2798-2799 2800-2801 2802-2803 2804-2805 2806-2807 2808-2809 2810-2811 2812-2813 2814-2815 2

1000

Abstract

1. The first step is to identify the problem or question that needs to be answered. This involves understanding the context and the specific requirements of the task.

[illegible]

100

1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 2679, 26





THE UNIVERSITY OF CHICAGO

तोड़िया-बोग-लांको

अंडमान व निकोबार द्वीप समूह की आदिम जनजातियों में से एक 'ओंगी' है। नीग्रो-मूल के होने के कारण वे गहरे-काले रंग के होते हैं। उनका कद छोटा होता है। आँखें लाली लिए हुए तथा बाल घुंघराले होते हैं।

प्रारम्भ में, ये आदिवासी चिड़िया टापू के पास कालापहाड़ पर रहते थे। बाद में, कुछ दूसरी जनजातियों ने उन्हें कालापहाड़ से दूर खदेड़ दिया। आज ओंगियों को भी नहीं पता कि उन्हें वहाँ से खदेड़ भगाने वाले लोग कौन थे। उनका विश्वास है कि किसी दैवी-शक्ति ने उन्हें कालापहाड़ छोड़कर भाग जाने को विवश किया होगा।

महीनों तक जंगलों, पहाड़ों से गुजरते और समुद्र-यात्रा करते वे लोग 'टाम्बेवे' नामक स्थान पर पहुँचे। लेकिन वह जगह उन्हें पसन्द नहीं आई। इसलिए वे आगे सुदूर दक्षिण की ओर 'टोको-बुली' नामक स्थान की ओर बढ़ गए जिसे आज 'डुगोंग क्रीक' के नाम से जाना जाता है। उन्होंने टोको-बुली को अपना स्थाई निवास बनाया। वहाँ उन्होंने अपनी झोंपड़ियाँ बनाई और वहीं बस गए।

उन्होंने जंगली सुअरों और जंगली मुर्गियों का शिकार किया। समुद्री मछलियों और केकड़ों को पकड़ा। जंगल से शहद इकट्ठा किया। इस तरह उन्होंने अपने भोजन की व्यवस्था कर ली।

एक बार उनके मन में अपने प्राचीन निवास-स्थान कालापहाड़ को देखने की इच्छा जागी। उन्होंने कुछ बड़े पेड़ों को काटा और उनसे नावें बनाना शुरू कर दिया। इस काम में उन्हें वर्षों लग गए। अंततः कुछ मर्द, औरतें और बच्चे हर्ष व उल्लास के साथ नावों में बैठे और कालापहाड़ की ओर चल दिए।

परन्तु, जैसे ही उनकी नावें समुद्र के बीच में पहुँचीं, भयंकर तूफान उठ खड़ा हुआ। हवा जोरों से बहने लगी। ऊँची-ऊँची लहरें नावों पर थपेड़े मारने लगीं। कुछ नावें डूब गईं। काफी लोग मर गए। बचे-खुचे लोगों के मन में उदासी छा गई। उनके बहुत-से साथी समुद्र की भेंट चढ़ चुके थे। उनका विश्वास था कि इस भयंकर दुर्घटना के पीछे 'तोमेल' की दुष्ट आत्मा का हाथ था। वह उन्हें नष्ट कर देना चाहती थी। ओंगी 'तोमेल' के श्राप और क्रोध से बहुत डरते थे।

ऐसे में सभी ओंगियों ने तोड़िया-बोग-लांको की पूजा की। उसे वे महान दैवी-शक्ति का स्वामी मानते थे। तब कहीं जाकर तूफान थमा। समुद्र शांत हो गया। ओंगियों को विश्वास हो गया कि देवता उन पर प्रसन्न है।

उनका विश्वास है कि महाशक्ति का स्वामी ऊपर आसमान में कहीं रहता है। उसकी कृपा से ही उन्हें भोजन और पानी मिलता है। उसी की कृपा से वे भले-चंगे रह पाते हैं। इसलिए मुसीबत के समय में वे महाशक्ति के स्वामी तोड़िया-बोग-लांको की पूजा करते हैं।

Abstract The purpose of this study was to determine whether there were differences in the prevalence of risk factors for coronary artery disease between men who had been exposed to asbestos and those who had not. A case-control study was conducted among men aged 60 years or older who had been employed in asbestos-related occupations before age 60. The prevalence of risk factors for coronary artery disease was compared between cases (men with a history of myocardial infarction) and controls (men without a history of myocardial infarction). The results showed that the prevalence of risk factors for coronary artery disease was significantly higher in cases than in controls. This suggests that exposure to asbestos may be associated with an increased risk of coronary artery disease.

[illegible]

1. **Introduction**

2. **Background**

3. **Methodology**

4. **Results**

5. **Discussion**

6. **Conclusion**

7. **References**

8. **Appendix**

9. **Index**

10. **Summary**

11. **Notes**

12. **References**

13. **Appendix**

14. **Index**

15. **Summary**

16. **Notes**

17. **References**

18. **Appendix**

19. **Index**

20. **Summary**

21. **Notes**

22. **References**

23. **Appendix**

24. **Index**

25. **Summary**

26. **Notes**

27. **References**

28. **Appendix**

29. **Index**

30. **Summary**

31. **Notes**

32. **References**

33. **Appendix**

34. **Index**

35. **Summary**

36. **Notes**

37. **References**

38. **Appendix**

39. **Index**

40. **Summary**

41. **Notes**

42. **References**

43. **Appendix**

44. **Index**

45. **Summary**

46. **Notes**

47. **References**

48. **Appendix**

49. **Index**

50. **Summary**

51. **Notes**

52. **References**

53. **Appendix**

54. **Index**

55. **Summary**

56. **Notes**

57. **References**

58. **Appendix**

59. **Index**

60. **Summary**

61. **Notes**

62. **References**

63. **Appendix**

64. **Index**

65. **Summary**

66. **Notes**

67. **References**

68. **Appendix**

69. **Index**

70. **Summary**

71. **Notes**

72. **References**

73. **Appendix**

74. **Index**

75. **Summary**

76. **Notes**

77. **References**

78. **Appendix**

79. **Index**

80. **Summary**

81. **Notes**

82. **References**

83. **Appendix**

84. **Index**

85. **Summary**

86. **Notes**

87. **References**

88. **Appendix**

89. **Index**

90. **Summary**

91. **Notes**

92. **References**

93. **Appendix**

94. **Index**

95. **Summary**

96. **Notes**

97. **References**

98. **Appendix**

99. **Index**

100. **Summary**

101. **Notes**

102. **References**

103. **Appendix**

104. **Index**

105. **Summary**

106. **Notes**

107. **References**

108. **Appendix**

109. **Index**

110. **Summary**

111. **Notes**

112. **References**

113. **Appendix**

114. **Index**

115. **Summary**

116. **Notes**

117. **References**

118. **Appendix**

119. **Index**

120. **Summary**

121. **Notes**

122. **References**

123. **Appendix**

124. **Index**

125. **Summary**

126. **Notes**

127. **References**

128. **Appendix**

129. **Index**

130. **Summary**

131. **Notes**

132. **References**

133. **Appendix**

134. **Index**

135. **Summary**

136. **Notes**

137. **References**

138. **Appendix**

139. **Index**

140. **Summary**

141. **Notes**

142. **References**

143. **Appendix**

144. **Index**

145. **Summary**

146. **Notes**

147. **References**

148. **Appendix**

149. **Index**

150. **Summary**

151. **Notes**

152. **References**

153. **Appendix**

154. **Index**

155. **Summary**

156. **Notes**

157. **References**

158. **Appendix**

159. **Index**

160. **Summary**

161. **Notes**

162. **References**

163. **Appendix**

164. **Index**

165. **Summary**

166. **Notes**

167. **References**

168. **Appendix**

169. **Index**

170. **Summary**

171. **Notes**

172. **References**

173. **Appendix**

174. **Index**

175. **Summary**

176. **Notes**

177. **References**

178. **Appendix**

179. **Index**

180. **Summary**

181. **Notes**

182. **References**

183. **Appendix**

184. **Index**

185. **Summary**

186. **Notes**

187. **References**

188. **Appendix**

189. **Index**

190. **Summary**

191. **Notes**

192. **References**

193. **Appendix**

194. **Index**

195. **Summary**

196. **Notes**

197. **References**

198. **Appendix**

199. **Index**

200. **Summary**

201. **Notes**

202. **References**

203. **Appendix**

204. **Index**

205. **Summary**

206. **Notes**

207. **References**

208. **Appendix**

209. **Index**

210. **Summary**

211. **Notes**

212. **References**

213. **Appendix**

214. **Index**

215. **Summary**

216. **Notes**

217. **References**

218. **Appendix**

219. **Index**

220. **Summary**

221. **Notes**

222. **References**

223. **Appendix**

224. **Index**

225. **Summary**

226. **Notes**

227. **References**

228. **Appendix**

229. **Index**

230. **Summary**

231. **Notes**

232. **References**

233. **Appendix**

234. **Index**

235. **Summary**

236. **Notes**

237. **References**

238. **Appendix**

239. **Index**

240. **Summary**

241. **Notes**

242. **References**

243. **Appendix**

244. **Index**

245. **Summary**

246. **Notes**

247. **References**

248. **Appendix**

249. **Index**

250. **Summary**

251. **Notes**

252. **References**

253. **Appendix**

254. **Index**

255. **Summary**

256. **Notes**

257. **References**

258. **Appendix**

259. **Index**

260. **Summary**

261. **Notes**

262. **References**

263. **Appendix**

264. **Index**

265. **Summary**

266. **Notes**

267. **References**

268. **Appendix**

269. **Index**

270. **Summary**

271. **Notes**

272. **References**

273. **Appendix**

274. **Index**

275. **Summary**

276. **Notes**

277.

1000

1. The first step is to identify the problem or question that needs to be addressed. This involves understanding the context and the specific requirements of the task.

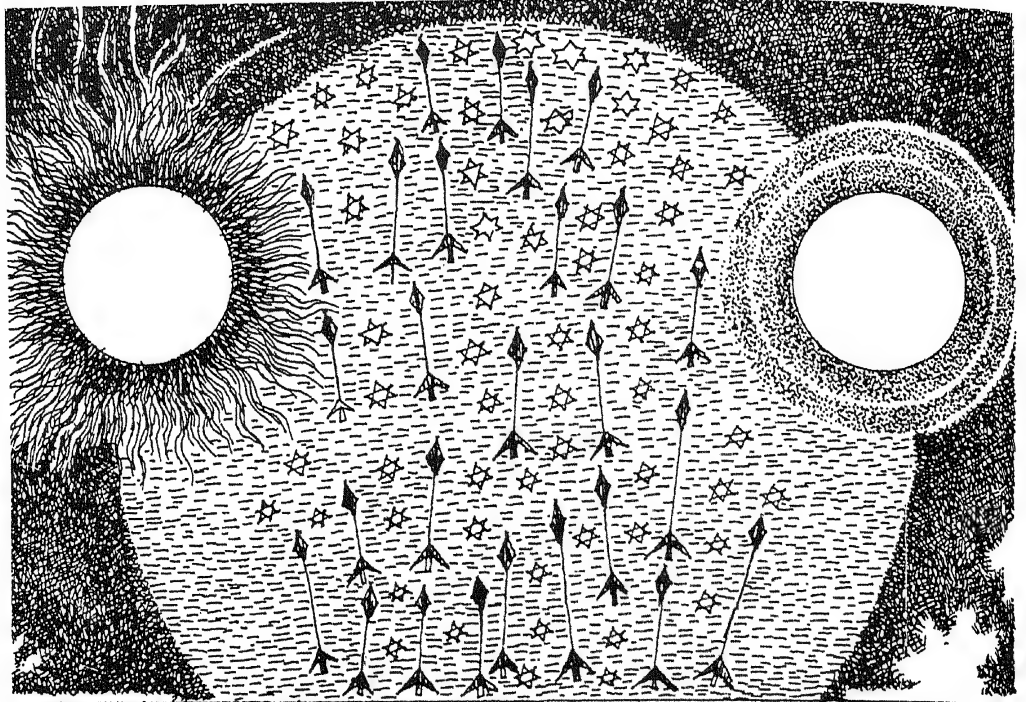
2. Next, it is important to gather relevant information and data. This can be done through research, consultation with experts, or by analyzing existing data sets.

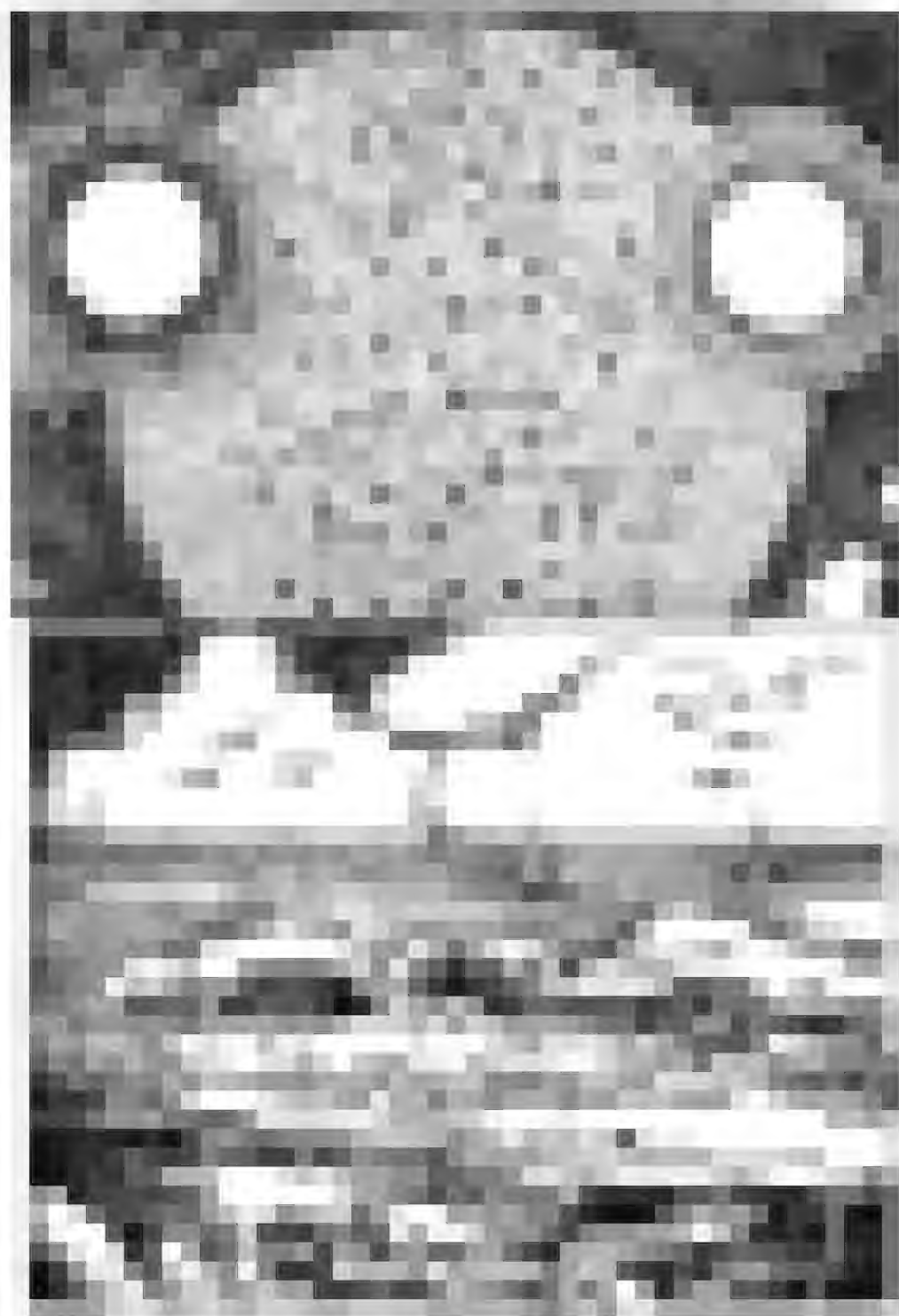
3. Once the information is gathered, the next step is to develop a plan or strategy to address the problem. This plan should outline the steps to be taken and the resources needed.

4. The plan is then implemented, and progress is monitored. If necessary, adjustments are made to the plan based on the results of the implementation.

5. Finally, the results are evaluated to determine if the problem has been solved or if further action is required.

[illegible]





तारों का जन्म

‘ओंगी’ जनजाति के लोगों का मानना है कि सृष्टि के आरंभ में, जब धरती बनी ही थी, आसमान बहुत नीचे था।

फिर एक दिन, सूर्य और चन्द्रमा की रचना हुई। लेकिन छलपूर्वक उन्होंने अपना-अपना स्थान बदल लिया। वे धरती के और निकट आ गए।

उनके इस कृत्य से धरती बुरी तरह गर्म हो गई। इसकी सतह पर गहरी दरारें पड़ गईं। लोगों ने घर से निकलना बन्द कर दिया। उन्हें डर था कि तेज धूप के कारण उनका शरीर झुलस जाएगा।

झरने और नदियाँ सब सूख गए। पानी का कहीं नामोनिशान न रहा।

पशु-पक्षी यहाँ से वहाँ, वहाँ से यहाँ मारे-मारे फिरने लगे।

एक दिन बुजुर्गों ने विचार-विमर्श के लिए एक बैठक बुलाई। उसमें युवकों को भी बुलाया गया। तय पाया गया कि अगर ऐसे ही चलता रहा तो कुछ ही दिनों में धरती पर जीवन नष्ट हो जाएगा। अन्त में, सभी की सहमति से ता-चोई (एक विशेष प्रकार की लकड़ी) तथा चा-लोक (नारियल की डंडी) से तीर-कमान तैयार करने का निर्णय लिया गया। निश्चय किया गया कि आसमान पर लगातार तब तक तीर मारते रहा जाए जब तक कि उसे धरती से काफी दूर न धकेल दिया जाए। सूर्य और चन्द्रमा तब अपने-अपने स्थान पर पहुँच जाएँगे और इस तरह धरती असह्य गर्मी से बच जाएगी।

तब, एक दिन उन्होंने आकाश को तीर मारना शुरू किया।

लेकिन उनके सारे तीर आकाश में अटक गए। उनमें से एक भी तीर वापस धरती पर नहीं गिरा। होता यह कि जैसे ही तीर आसमान से टकराता—आग निकलती और तारा बन जाती।

आसमान में इस तरह अनगिनत तारे बन गए।

लेकिन ओंगी हताश नहीं हुए। आसमान के साथ-साथ उन्होंने सूर्य और चन्द्रमा को भी पीछे धकेलने के लिए उन पर तीर मारना जारी रखा।

कुछ समय बाद सूर्य और चन्द्रमा वापस अपने-अपने स्थान पर चले गए। उसके बाद धरती की सतह भी ठंडी हो गई। वर्षा होने लगी। झरने और नदियाँ भरे-पूरे बहने लगे। वृक्ष उग आए। पशु-पक्षियों में जीवन का संचार हो गया।

और इस तरह पूरे आकाश में टिमटिमाने वाले तारों का जन्म हुआ।

THE NEW YORK

THE NEW YORK is a fine example of the modern style of architecture, and is one of the most beautiful buildings in the city.

The building is a fine example of the modern style of architecture, and is one of the most beautiful buildings in the city.

The building is a fine example of the modern style of architecture, and is one of the most beautiful buildings in the city.

The building is a fine example of the modern style of architecture, and is one of the most beautiful buildings in the city.

The building is a fine example of the modern style of architecture, and is one of the most beautiful buildings in the city.

The building is a fine example of the modern style of architecture, and is one of the most beautiful buildings in the city.

The building is a fine example of the modern style of architecture, and is one of the most beautiful buildings in the city.

The building is a fine example of the modern style of architecture, and is one of the most beautiful buildings in the city.

The building is a fine example of the modern style of architecture, and is one of the most beautiful buildings in the city.

The building is a fine example of the modern style of architecture, and is one of the most beautiful buildings in the city.

The building is a fine example of the modern style of architecture, and is one of the most beautiful buildings in the city.

The building is a fine example of the modern style of architecture, and is one of the most beautiful buildings in the city.

The building is a fine example of the modern style of architecture, and is one of the most beautiful buildings in the city.

The building is a fine example of the modern style of architecture, and is one of the most beautiful buildings in the city.

किलपुट की वापसी

बहुत साल पहले की बात है। एक विदेशी जलयान ने कार-निकोबार में लंगर डाला। निकोबार के लोगों ने नारियल के बदले जलयान के लोगों से दूसरी वस्तुएँ लेना शुरू कर दिया।

एक दिन किलपुट भी अपनी डोंगी में बैठकर कुछ सामान लेने को गया। लेकिन उसे थोड़ी देर हो गई। सभी लोग जलयान से सामान की अदला-बदली करके अपनी-अपनी डोंगी में आ चुके थे। किलपुट जलयान के बोर्ड पर ही खड़ा रह गया। जलयान के लोगों को उसके वहाँ रह जाने का पता ही नहीं चला और वे जलयान को अपने देश की ओर ले गए। किलपुट के दोस्तों को भी इस बात का पता न चला। समुद्र में तैरती उसकी खाली डोंगी को देखकर उन्होंने समझा कि किलपुट समुद्र में डूबकर मर गया। वे उसकी डोंगी को लेकर गाँव में वापस आ गए। किलपुट की मौत का समाचार आग की तरह पूरे गाँव में फैल गया। किलपुट के माँ-बाप पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा।

उधर, जलयान पर चढ़ा किलपुट एक अनजान देश में पहुँच गया। भरण-पोषण के लिए वहाँ उसने एक डोंगी बनाई और उसमें बैठकर समुद्र से मछलियाँ पकड़ने और बेचने का धन्धा करने लगा। इससे उसने अपार धन कमाया। इसके बाद वहाँ पर उसने विवाह भी कर लिया। उसके दो सन्तानें हुई—एक बेटा और एक बेटी। दिन बीतते गए लेकिन किलपुट निकोबार के अपने पुश्तैनी गाँव को न भूल सका। वह अपनी पत्नी और बच्चों के बीच बैठकर उन्हें अपने प्रिय गाँव के किस्से सुनाता और अपना मन हल्का करता। परन्तु जब भी वह वापस लौटने की बात उठाता उसकी पत्नी और बच्चे उदास हो जाते। वह रुक जाता।

आखिर, एक बार किलपुट ने एक बड़ी डोंगी बनाई। तरह-तरह के कपड़े, खाने-पीने की वस्तुएँ और पानी अपने साथ उसमें रखा। और एक दिन चुपचाप वह अपने गाँव के लिए अथाह समुद्र में निकल पड़ा। बड़ी मुसीबतों के बाद आखिर एक दिन वह अपने गाँव के किनारे पहुँच गया। डोंगी से उतरकर जब वह अपने घर के निकट पहुँचा तो उसने देखा कि गाँव वाले मिलकर 'ओसरी उत्सव' की तैयारी कर रहे हैं। उसे लगा कि हर आदमी ने उसे मरा हुआ मान लिया है। तभी तो वे सब उसके लिए रो-बिलख रहे थे।

वहाँ से चलकर किलपुट अपने सुअरों के बाड़े की तरफ गया। उसने सुअरों के कानों पर पहचान-चिह्न बना रखे थे। वे जैसे के तैसे थे। अचानक कुछ लोग उधर आ निकले और उससे पूछताछ करने लगे।

“मैं एक विदेशी हूँ।” वह बोला। फिर उसने लोगों से पूछा, “आप लोग यह क्या कर रहे हैं?”

लोगों ने उसे बताया, “गाँव के एक नौजवान की समुद्र में डूबने से मौत हो गई थी। उसी के शोक में यह सब हो रहा है।”

“डूबने वाले का नाम क्या था?” किलपुट ने उनसे पूछा।

“किलपुट।” उन्होंने बताया।

“मैं मरा नहीं,” किलपुट बोला, “जिन्दा हूँ।” यह कहकर उसने पूरा किस्सा उन्हें सुनाया।

गाँव वालों की खुशी का ठिकाना न रहा। इतने वर्षों बाद उसे पाकर वे झूम उठे।

शोक का उत्सव 'ओसरी' किलपुट की वापसी के उत्सव में बदल गया।

THE HISTORY OF THE
CITY OF BOSTON

THE HISTORY OF THE CITY OF BOSTON, FROM THE FIRST SETTLEMENT TO THE PRESENT TIME. BY SAMUEL JOHNSON, ESQ. OF BOSTON.

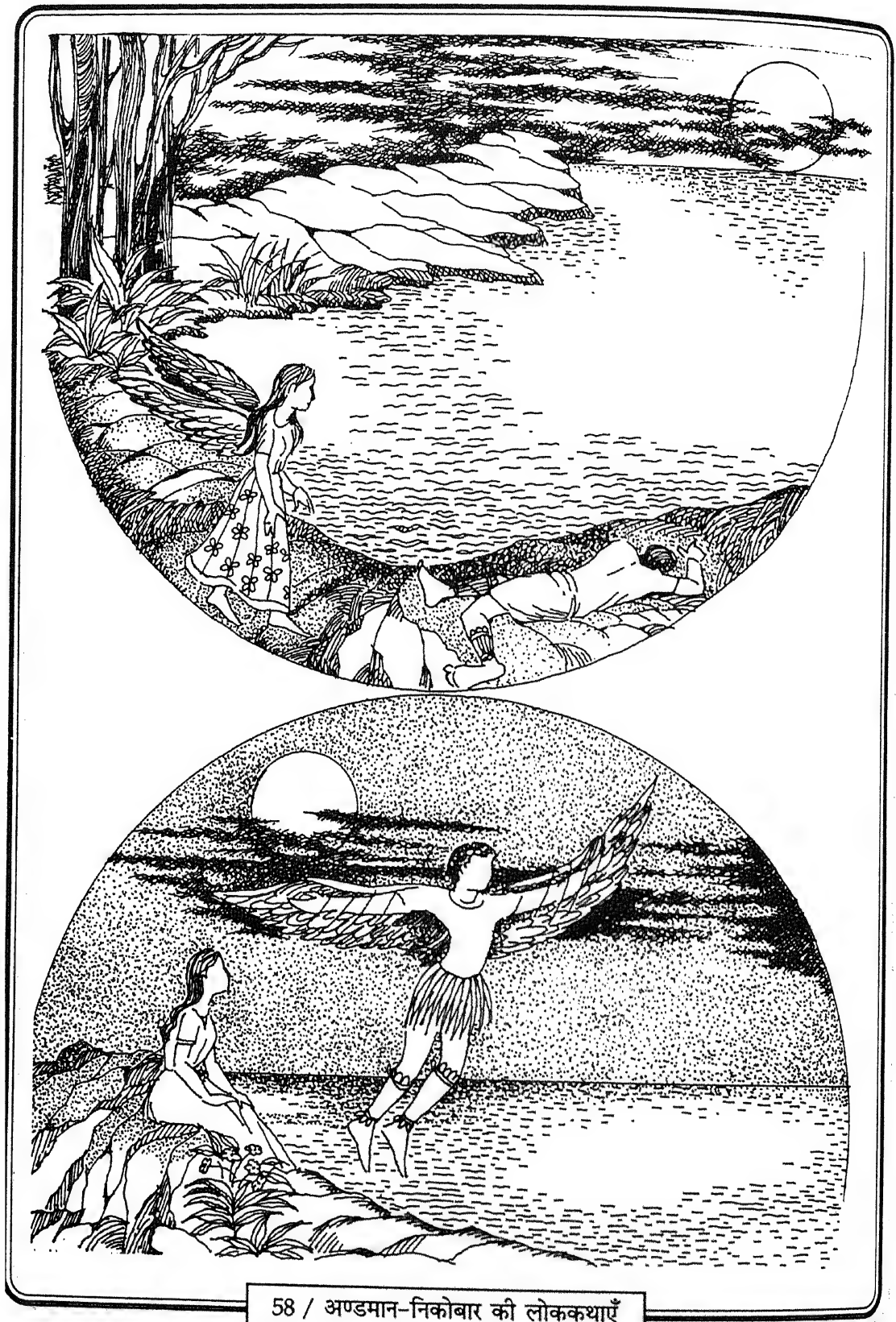
IN TWO VOLUMES. THE FIRST CONTAINS THE HISTORY FROM THE FIRST SETTLEMENT TO THE YEAR 1700. THE SECOND CONTAINS THE HISTORY FROM THE YEAR 1700 TO THE PRESENT TIME.

LONDON: Printed by J. DODD, in Pall-mall, 1766.

BOSTON: Printed by S. KNEELAND, at the Sign of the Anchor, in the Market-Place, 1766.

THE HISTORY OF THE CITY OF BOSTON, FROM THE FIRST SETTLEMENT TO THE PRESENT TIME. BY SAMUEL JOHNSON, ESQ. OF BOSTON.

IN TWO VOLUMES. THE FIRST CONTAINS THE HISTORY FROM THE FIRST SETTLEMENT TO THE YEAR 1700. THE SECOND CONTAINS THE HISTORY FROM THE YEAR 1700 TO THE PRESENT TIME.





परियों का द्वीप : परी टापू

पोर्टब्लेयर से लगभग 20 मील दूर उत्तर-पूर्व दिशा में हैवलॉक नामक द्वीप है। आज यह एक आकर्षक पर्यटन-स्थल है। पुराने जमाने में इसको 'परी टापू' नाम से जाना जाता था।

कहा जाता है कि इस खूबसूरत द्वीप को प्रेम में हताश एक परी द्वारा बनाया और बसाया गया था। लोगों का विश्वास है कि किसी जमाने में यह परियों का द्वीप था। बेहद खूबसूरत परियाँ उस जमाने में निर्भय होकर इस द्वीप पर उछलती-कूदती और नाचती-खेलती थीं।

उन परियों की राजकुमारी एक बेहद सुन्दर, सुशील और दयालु परी थी। परियों के अलावा कभी भी किसी मनुष्य ने उसे नहीं देखा था। वह अपने आपको अधिकतर एक अंधेरे कमरे में बंद रखती थी। दिनभर में, सूर्योदय से पहले, वह सिर्फ एक बार बाहर निकलती थी। उस समय अपनी सहेली परियों के साथ वह घर के समीप वाले एक तालाब में नहाने के लिए जाती थी। उसके और उसकी सहेलियों के वहाँ पहुँचने पर सारा वातावरण चमक उठता था। वह सूर्योदय से पहले ही स्नान करती और अपनी सहेलियों के साथ वापस लौट आती।

एक बार समुद्र में भयंकर तूफान आया। वह राजकुमारी के नहाने के लिए जाने का समय था। लेकिन तूफान की भयावहता को देखकर उसकी सहेलियों ने उसके साथ जाने से इंकार कर दिया।

चारों ओर अंधकार छाया हुआ था। राजकुमारी राजमहल से निकली और उस अंधकार में अकेली ही तालाब की ओर बढ़ चली। तेज हवाओं को झेलती, धीरे-धीरे उड़ती हुई आखिर वह वहाँ पहुँच ही गई। उसने अपने पंख और कपड़े उतारकर किनारे पर रख दिए। वह रोजाना ही ऐसा करती थी क्योंकि कपड़े या पंख अगर गीले हो जाएँ तो परियाँ उड़ नहीं सकतीं। कपड़े उतारते ही उसके शरीर की आभा से आसपास का वातावरण चमक उठा। उस प्रकाश में उसने देखा कि एक नौजवान तालाब के किनारे लेटा हुआ है। वह डर गई। लेकिन उसने देखा कि नौजवान बेहोश था।

मैं बिना आवाज किए चुपचाप नहा लूँगी और लौट जाऊँगी—उसने सोचा।

“आ...ऽ...ह...आह!!” जैसे ही राजकुमारी ने नहाना शुरू किया उसे सीढ़ियों पर पड़े नौजवान के कराहने का स्वर सुनाई दिया।

उसने तालाब से निकलकर फुर्ती से अपने कपड़े और पंख पहने। फिर, अपने चुल्लू में पानी भरा और पास जाकर उस नौजवान के चेहरे पर छिड़का।

युवक को होश आ गया और वह उठ खड़ा हुआ। अपने समीप इतनी खूबसूरत युवती

THEORY OF THE EARTH

The theory of the earth is a branch of geology which deals with the origin and development of the earth and its various parts. It is a science which seeks to explain the processes which have shaped the earth and its features. The theory of the earth is based on the study of the earth's structure and its history. It is a science which seeks to explain the processes which have shaped the earth and its features.

The theory of the earth is based on the study of the earth's structure and its history. It is a science which seeks to explain the processes which have shaped the earth and its features. The theory of the earth is based on the study of the earth's structure and its history. It is a science which seeks to explain the processes which have shaped the earth and its features.

The theory of the earth is based on the study of the earth's structure and its history. It is a science which seeks to explain the processes which have shaped the earth and its features. The theory of the earth is based on the study of the earth's structure and its history. It is a science which seeks to explain the processes which have shaped the earth and its features.

The theory of the earth is based on the study of the earth's structure and its history. It is a science which seeks to explain the processes which have shaped the earth and its features. The theory of the earth is based on the study of the earth's structure and its history. It is a science which seeks to explain the processes which have shaped the earth and its features.

The theory of the earth is based on the study of the earth's structure and its history. It is a science which seeks to explain the processes which have shaped the earth and its features. The theory of the earth is based on the study of the earth's structure and its history. It is a science which seeks to explain the processes which have shaped the earth and its features.

The theory of the earth is based on the study of the earth's structure and its history. It is a science which seeks to explain the processes which have shaped the earth and its features. The theory of the earth is based on the study of the earth's structure and its history. It is a science which seeks to explain the processes which have shaped the earth and its features.

The theory of the earth is based on the study of the earth's structure and its history. It is a science which seeks to explain the processes which have shaped the earth and its features. The theory of the earth is based on the study of the earth's structure and its history. It is a science which seeks to explain the processes which have shaped the earth and its features.

THEORY OF THE EARTH

को पाकर वह जड़वत् रह गया। उसने स्वप्न में भी यह नहीं सोचा था कि इस नीरव स्थान में उसे ऐसी अनुपम सुन्दरी के दर्शन होंगे।

परी ने मधुर स्वर में उससे पूछा, “आप कौन हैं?”

“मैं पूरब देश का राजकुमार हूँ।” युवक ने बताया।

“आप यहाँ किसलिए आए हैं?” परी ने पूछा।

“मैं समुद्री-यात्रा के लिए निकला था।” युवक ने बताया, “मेरा पोत कल रात तूफान में फँस गया और टूट गया। ...मैं नहीं जानता कि मैं कैसे यहाँ आ गया। आप कौन हैं?”

“मैं? ... मैं यहाँ की राजकुमारी हूँ।” परी ने कहा। उसने महसूस किया कि वह उस सुन्दर राजकुमार के आकर्षण में बँध-सी गई है। उसकी आँखें राजकुमार के प्रति प्रेम से चमक उठीं।

यही हाल उस राजकुमार के हृदय का भी था। दोनों एक-दूसरे के प्रेमजाल में फँस चुके थे। दोनों एक-दूसरे को निहारते काफी समय तक वहाँ बैठे रहे।

सूर्योदय होने को था। परी को एकाएक ध्यान आया कि उसे सूरज निकलने से पहले ही अपने महल में पहुँच जाना है। वह उठ खड़ी हुई। घर जाने के लिए राजकुमार से विदा लेते समय उस ने उसे एक गुप्त स्थान का पता बताया।

“जब तक तूफान थम नहीं जाता, आप उस स्थान पर जाकर रहें। जब तुम्हें सुबह का तारा आकाश में नजर आए, तुम चुपचाप इस तालाब के किनारे आ जाना। मैं यहीं पर तुमको मिलूँगी।” जाते-जाते वह बोली।

उस दिन के बाद राजकुमारी ने नहाने के लिए तालाब पर अकेले जाना शुरू कर दिया। अपनी सभी सहेलियों से उसने साथ चलने के लिए मना कर दिया। वह अकेली तालाब पर पहुँचती।

जैसे ही सुबह का तारा आकाश में टिमटिमाता, चोरी छिपे राजकुमार भी वहीं आ जाता। दोनों लम्बे समय तक प्यार-भरी बातें करते और सूर्य की पहली किरण धरती पर पड़ने से पहले ही अपने-अपने स्थान को लौट जाते।

कुछ दिनों बाद राजकुमार को अपने परिवार की याद सताने लगी। वह उदास रहने लगा। लेकिन वह परी-राजकुमारी के प्रेमजाल में इतना अधिक फँस चुका था कि उसे छोड़कर कहीं और जाने के बारे में सोच भी नहीं सकता था। फिर भी, हिम्मत करके उसने उसे इस बारे में बता ही दिया। लेकिन राजकुमारी भी उसे जाने देना नहीं चाहती थी।

“देखो, तूफान अभी तक पूरी तरह रुका नहीं है; और ऐसे में, कोई भी नाव सागर में टिकी नहीं रह सकती थी। तुम्हारी इच्छा जानकर मेरा मन बुरी तरह व्याकुल हो उठा है।” परी ने कहा।

राजकुमार ने परी को सांत्वना दी और जाने देने के लिए पुनः प्रार्थना की। लेकिन बेकार। परी नहीं मानी। परेशान राजकुमार घुटनों के बल उसके सामने बैठ गया और भिक्षा माँगने के अंदाज में बोला, “अगर कुछ दिनों के लिए तुम अपने पंख मुझे दे दो तो मैं उड़कर अपने माता-पिता के पास जा सकता हूँ। मैं उन्हें तुम्हारे बारे में बताना चाहता हूँ। तुम्हारे साथ अपने विवाह की अनुमति पाते ही मैं यहाँ लौट आऊँगा और तुमसे विवाह कर लूँगा। उसके बाद हम अपने देश को लौट जाएँगे।”

“सो तो ठीक है। लेकिन इतना लम्बा समुद्र इन छोटे-छोटे पंखों से उड़कर तुम कैसे पार करोगे?” राजकुमारी आशंकित-स्वर में बोली, “रास्ते में बारिश आ गई और पंख गीले हो गए तो...”

“कुछ नहीं होगा...कुछ नहीं होगा।” राजकुमार उद्विग्न-स्वर में बोला, “तुम्हें अपने प्यार पर भरोसा है न!”

न चाहते हुए भी परी-राजकुमारी को उसकी बातों को मानना पड़ गया।

अगले दिन, जैसे ही आकाश में सुबह का तारा चमका, राजकुमार तालाब पर जा पहुँचा। परी को उसके जाने का दुःख था। परन्तु उससे भी अधिक चिन्ता उसे अपने पंखों की थी। वह जानती थी कि अगर पंख नहीं रहे तो सारी परियाँ उसे राजकुमारी मानने से इंकार कर देंगी। अगर पंख नहीं रहे तो सूर्य की पहली किरण पड़ते ही उसके शरीर की कान्ति भी नष्ट होनी शुरू हो जाएगी तथा ठीक सातवें दिन उसका शरीर अदृश्य हो जाएगा फिर कोई भी उसे देख नहीं पाएगा और न वह ही किसी से कुछ कह पाएगी।

लेकिन उसे अपने प्यार पर पूरा भरोसा था। अतः उसने अपने पंख उतारकर राजकुमार को दे दिए।

पंख लगाकर राजकुमार वहाँ से दूर उड़ गया और फिर कभी भी वापस नहीं आया।

हैवलॉक द्वीप में, परी-राजकुमारी और उस राजकुमार के मिलने का स्थान—वह तालाब—आज भी देखा जा सकता है। ऐसा लगता है जैसे अभी-अभी कोई वहाँ से नहाकर गया है। समुद्र के किनारे पर आसपास की शेष सभी चट्टानों से भिन्न एकदम साफ और चिकनी एक चट्टान है। लोगों का विश्वास है कि प्रेम में धोखा खाकर अदृश्य हुई वह परी-राजकुमारी आज भी उस चट्टान पर बैठी अपने प्रेमी के इंतजार में अंतहीन समुद्र को ताक रही है। कोई भी उसे देख या छू नहीं सकता। वह सब-कुछ देख तो सकती है परन्तु किसी के भी कानों तक आवाज नहीं पहुँचा सकती और न ही किसी को छू सकती है। उसका शरीर हवा जैसा अदृश्य है जिसे सिर्फ महसूस किया जा सकता है। वह किसी का अहित नहीं करती।

राजकुमार ने उसे धोखा दिया अथवा रास्ते में ही पंख गीले हो जाने के कारण वह उड़ नहीं सका और समुद्र में डूबकर मर गया—कोई नहीं जानता।

The following table shows the results of the regression analysis for the dependent variable "Number of children in the household" (N = 1,000). The independent variables are "Age of the head of household" and "Gender of the head of household". The table includes the coefficient estimates, standard errors, t-statistics, and p-values for each variable.

Variable	Coefficient	Standard Error	t-statistic	p-value
Age of the head of household	0.001	0.001	1.2	0.23
Gender of the head of household (Male = 1, Female = 0)	-0.05	0.02	-2.5	0.01
Constant	1.5	0.1	15.0	0.00

The regression results indicate that the age of the head of household has a very small, positive effect on the number of children in the household, which is not statistically significant. The gender of the head of household has a negative effect, with male heads of household having a slightly lower number of children than female heads of household. This effect is statistically significant at the 1% level.





कोचांग

स्ट्रिट द्वीप के एक पहाड़ पर कोचांग नाम का एक आदमी रहता था। वह बहुत परिश्रमी और ईमानदार था। वह 'पुलुगा' का पक्का भक्त था। उसका विश्वास था कि सूर्य, चन्द्रमा, तारे, धरती, समुद्र सब को पुलुगा ने बनाया है। वह जब तक चाहे इन्हें बनाए रख सकता है और जब चाहे इन्हें नष्ट कर सकता है।

कोचांग की इच्छा थी कि उस पहाड़ पर, जहाँ वह रहता था, एक शानदार मकान बनाए। उसे विश्वास था कि पुलुगा की कृपा से एक न एक दिन उसकी यह इच्छा अवश्य पूरी होगी।

दिन पर दिन बीतते रहे। कोचांग अपने काम में मस्त रहता। वह सुबह घर से निकलता—समुद्र-तट से पत्थर इकट्ठे करता, जंगल में जाकर पेड़ काटता और लकड़ियाँ इकट्ठी करता। जब उसके पास पत्थर और लकड़ियाँ अच्छी संख्या में इकट्ठे हो गए, तब उसने पहाड़ पर एक अच्छी जगह को चुना और वहाँ पर मकान बनाना शुरू कर दिया। दिन-रात मेहनत करके उसने एक आलीशान मकान खड़ा कर लिया। सजावट के लिए उसने विभिन्न प्रकार की समुद्री-वस्तुओं का प्रयोग किया। उसके बाद उसने एक मनोहारी बाग तैयार किया। उसमें उसने नारियल, सुपारी, पपीता, केला, कटहल आदि फल तथा कंद-मूल लगाए। पौधे जब बड़े हो गए तो मधुमक्खियों ने कटहल के पेड़ों पर अपने छत्ते बना लिए। जंगल में सुअरों की कोई कमी नहीं थी। जब भी उसका मन करता वह समुद्र से मछली और कछुए पकड़ लाता। इस तरह कोचांग एक सुखी और समृद्ध आदमी बन गया।

कहा जाता है कि ईश्वर अपने भक्तों की कड़ी से कड़ी परीक्षा लेता है। पुलुगा ने भी कोचांग की परीक्षा लेने की सोची। एक रात, जब कोचांग गहरी नींद में था, समुद्र में भयंकर तूफान उठा। तेज-तर्रार बारिश और तीखी आँधी ने उसे और अधिक भयानक बना दिया था। कोचांग नींद से उछल पड़ा। कहीं कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। बारिश के रुक जाने के भी कोई आसार नजर नहीं आ रहे थे। पानी ने घर में घुसना आरंभ कर दिया था। घर को सजाने के लिए उसके द्वारा कठिन श्रम से जोड़ा गया सारा सामान उसी की नजरों के आगे नष्ट होता जा रहा था।

उसने सोचा—जरूर मुझसे कोई भयंकर भूल हुई है, जिसके कारण पुलुगा नाराज हो उठे हैं। उसने पुलुगा की स्तुति करनी शुरू कर दी, "हे पुलुगा, आप बड़े दयावान हैं। मुझसे अनजाने में हुई किसी भी भूल को कृपा करके क्षमा कर दें।"

परन्तु घनघोर वर्षा और तूफान ने थमने का नाम न लिया।

कमरे में आधी ऊँचाई तक पानी भर चुका था। अचानक उसको मकान के छप्पर से नीचे को लटकती एक रस्सी नजर आई। उसने उसे कसकर पकड़ लिया। उस रस्सी के सहारे वह ऊपर को चढ़ता गया और आकाश में जा पहुँचा।

वहाँ उसने बेहद मनोहारी दृश्य देखा। वहाँ उसने बड़े-बड़े महल देखे। फलों से लदे बाग देखे। हीरे-जवाहरातों के फूल वाले बगीचे देखे। चारों ओर परियाँ उड़ रही थीं।

1. The purpose of this document is to provide information regarding the status of the project and the progress of the work. It is intended for the use of the project manager and the project team.

2. The project is currently in the planning phase. The project manager is working on the project plan and the project team is working on the project charter.

3. The project manager is working on the project plan and the project team is working on the project charter. The project manager is also working on the project budget and the project team is working on the project schedule. The project manager is also working on the project risk management and the project team is working on the project communication management.

4. The project manager is working on the project plan and the project team is working on the project charter. The project manager is also working on the project budget and the project team is working on the project schedule. The project manager is also working on the project risk management and the project team is working on the project communication management.

5. The project manager is working on the project plan and the project team is working on the project charter.

6. The project manager is working on the project plan and the project team is working on the project charter. The project manager is also working on the project budget and the project team is working on the project schedule. The project manager is also working on the project risk management and the project team is working on the project communication management.

7. The project manager is working on the project plan and the project team is working on the project charter.

8. The project manager is working on the project plan and the project team is working on the project charter. The project manager is also working on the project budget and the project team is working on the project schedule. The project manager is also working on the project risk management and the project team is working on the project communication management.

9. The project manager is working on the project plan and the project team is working on the project charter. The project manager is also working on the project budget and the project team is working on the project schedule. The project manager is also working on the project risk management and the project team is working on the project communication management.

कोचांग उन्हें देखकर मंत्रमुग्ध हो गया।

उसने सोचा—इतनी खूबसूरत जगह धरती पर तो हो नहीं सकती। मैं जरूर स्वर्ग में आ गया हूँ। पुलुगा भी यहीं पर कहीं रहते होंगे।

वह यह सब सोच ही रहा था कि रस्सी एक बड़े महल में उसे ले गई। कोचांग ने देखा कि वहाँ चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश फैला था। देवदूतों ने उसका स्वागत किया और अन्दर ले गए। जैसे ही वह अन्दर पहुँचा, उसे एक दिव्य-स्वर सुनाई पड़ा—“धरती के बेटे, तुम कैसे हो?”

कोचांग डर गया और काँपने लगा। किसी तरह उसके मुँह से निकला—“आ...ऽ...प कौ...ऽ...न...हैं?”

“मैं सृष्टि का निर्माता पुलुगा हूँ।”

यह सुनते ही कोचांग श्रद्धापूर्वक दण्डवत् लेट गया। होठों ही होठों में वह बुदबुदाया, “स्वामी, भयंकर तूफान ने मेरे घर और सम्पत्तियों नष्ट कर दिया है।”

“तब, तुम क्या चाहते हो?” दिव्य-स्वर ने पूछा।

“मैं चाहता हूँ कि तूफान थम जाए और मेरी धन-सम्पत्ति नष्ट होने से बच जाए।” कोचांग विनयपूर्वक बोला।

“मैं अब सिर्फ एक ही चीज को बचा सकता हूँ।” पुलुगा ने कहा, “तुम्हें या तुम्हारी धन-सम्पत्ति को। बोलो, क्या चाहिए?”

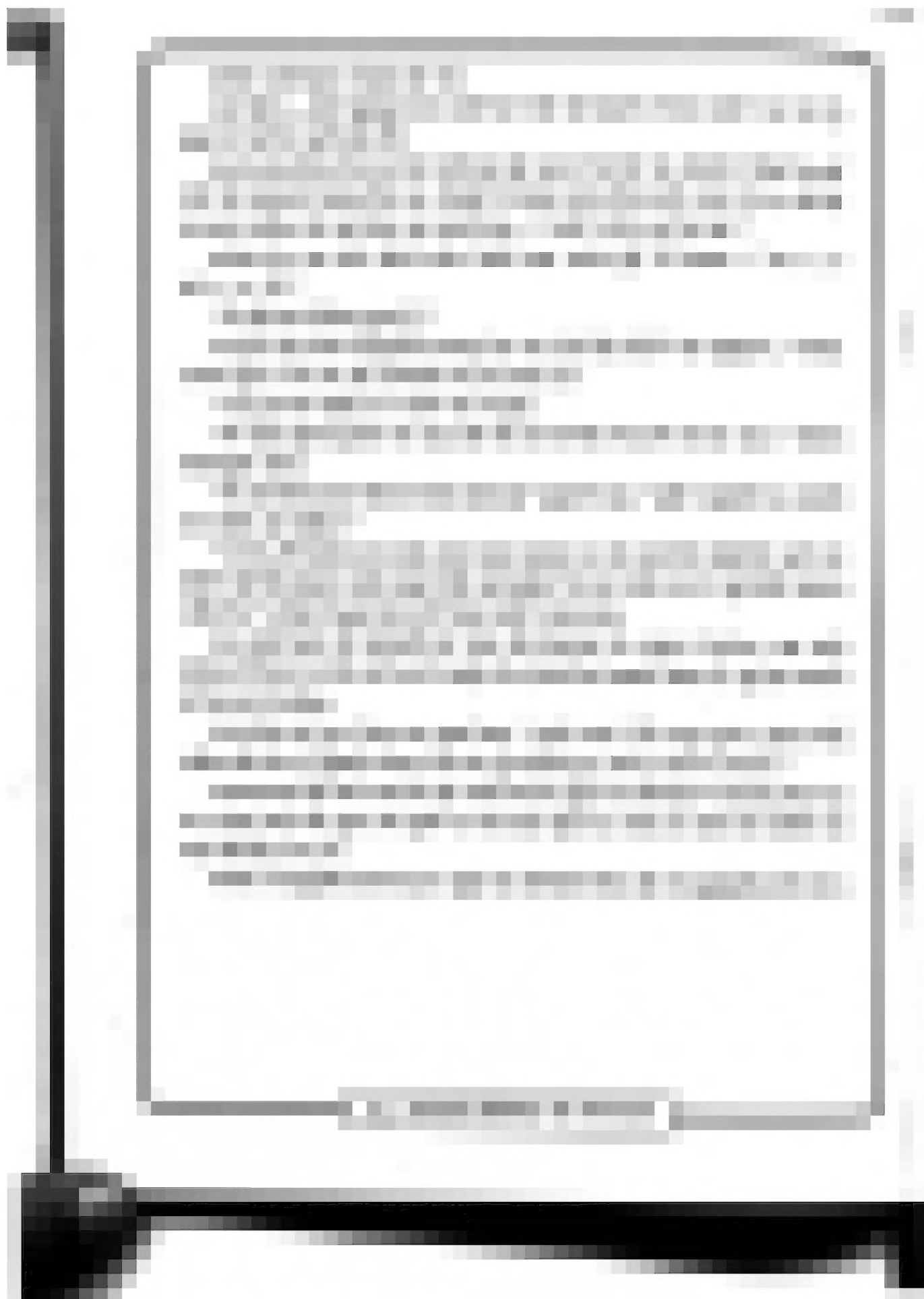
“भगवन्, मैंने कठोर श्रम करके अपना मकान बनाया था। उसे अपनी ही आँखों के आगे नष्ट होते मैं नहीं देख सकता। उससे अच्छा है कि आप मुझे ही नष्ट कर डालें। इस पर मुझे कोई पछतावा नहीं होगा।” कोचांग ने कुछ देर मन में विचार करने के बाद कहा।

यह आदमी हृदय की गहराइयों तक सच्चा और ईमानदार है—पुलुगा ने सोचा—यह अपने जीवन की चिन्ता न करके अपने श्रम से खड़ी की गई चीजों को बचाना चाहता है। मुझे इस आदमी की रक्षा करनी चाहिए।

तब कोचांग को पुनः दिव्य-स्वर सुनाई पड़ा, “तुम्हारे उत्तर से मैं सन्तुष्ट हुआ। तुम्हारा कोई अहित नहीं होगा। मैं तुम्हारी परीक्षा ले रहा था। तुम सफल हुए। जाओ, अपने घर जाओ।”

पलक झपकते ही उसने पाया कि वह अपने कमरे में पुलुगा के अभिवादन में दण्डवत् लेटा पड़ा था। भयंकर वर्षा और तूफान थम चुके थे। पानी उतर चुका था। उसका घर और बाग-बगीचे सब पहले जैसे ही हो गए थे।

कोचांग ने श्रद्धापूर्वक एक बार पुनः पुलुगा का अभिवादन किया और वह सुखपूर्वक रहने लगा।



लोककथा-साहित्य के रूप में जातियों का इतिहास सुरक्षित है। अनेक दृष्टि से मानव मात्र के लिए ये उपयोगी हैं। इनमें नैतिक शिक्षा, साहस, बलिदान तथा जातीय अभिमान से जुड़े जीवन के दर्शन सहज रूप में होते हैं।

जैसा कि 'काला पानी' की सजा भोग चुके क्रांतिकारी बाबा पृथ्वीसिंह आजाद ने अपनी आत्मकथा 'क्रांतिपथ का पथिक' में लिखा है कि अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह में अनगिनत आदिम जातियाँ थीं। उनमें से अधिकांश को अंग्रेजों की गोलियों ने नष्ट कर डाला। इन दिनों प्रमुखतः 5 आदिम जनजातियाँ ही द्वीप समूह में शेष हैं - 1. अण्डमानी, 2. निकोबारी, 3. जारवा, 4. ओंगी तथा 5. शोम्पेन। द्वीप समूह में प्रचलित अनेक लोककथाएँ अनेक कथाकारों द्वारा संकलित/संपादित की जा चुकी हैं परन्तु श्रीयुत् प्रितिन रॉय द्वारा अंग्रेजी में संपादित 'फोटेल्स ऑफ अंडमान एंड निकोबार आइलैंड्स' प्रचलित लोककथाओं का अधिकारिक संकलन है।

कथाकारों का शाब्दिक अनुवाद न किया है।



साक्षी प्रकाशन

एस-16, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

